भकमोड़

भकमोड़

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

BHAKMOR (भकमोड़)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-16-2
दाम: 250/- (भा.रु.)

तेसर संस्करण : 2018 (पहिल संस्करण 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

चित्रकार स्व. मिलन सदाय (निर्मली) क स्मृतिमे आयोजित
सगर राति दीप जरय'क 87म कथा-साहित्य गोष्ठीमे उपस्थित
समस्त साहित्य प्रेमीकेँ सादर समरपित

कथाक सत्तैर

मनमनियाँ

औरहा (लौकही, मधुबनी जिला) कथा गोष्ठी (सगर राति दीप जरए)मे ऐगला गोष्ठीक निमंत्रण (निर्मली, सुपौल जिला) पड़ल।

औरहासँ निर्मली गोष्ठीक बीचक जे कथा अछि ओ संकलनमे अछि। औरहामे एक गोरे प्रश्न उठौलैन जे एक्के लिखिनिहारक कथा दू-दू गोरे पढ़ै छैथ। प्रश्न नीक लागल। एते नीक लागल जे जवाब देबे बिसैर गेलौं। नीक ई लागल जे जँ गोष्ठियोक निविते दस-बीसटा कथा लिखा जाए तँ एकरा की कहबै?

औरहा निर्मलीक बीच एकटा भुतहा चौक अछि। रस्ता भकमोड़ छै, तँए संग्रहक नाओं 'भकमोड़' छी।

चलंत गोष्ठीक कथा केहेन हुअए? ई प्रश्न मनमे उठल। समय एहेन विचित्र बनि गेल अछि जे सुचित्र खींचब कठिन भऽ गेल अछि, तँए कथामे एकरूपता नइ अछि। जहिना अनेको एकपेड़िया मिलि बहुपेरिया बनबैए तहिना भऽ गेल अछि। खाएर.., चाहे जे अछि मुदा सभ कथा अपन-अपन परिचए तँ दइए रहल अछि।

दुनू गोष्ठीक (औरहा-निर्मली) बीचक कथा, तहूमे हकरिया कथाक रूपमे लिखल गेल अछि तँए ई संग्रह निर्मली गोष्ठी (कथा मिलन सदाय-सगर राति दीप जरय)कैं सेवामे समरपित...।

साहित्यक (मैथिली साहित्यक) दुर्भाग्य कही आकि सौभाग्य, मुदा रचनाकारक रचित रचना प्रकाशित नै भऽ पाबि रहल अछि, एकरा की

कहबै..?

तीन मासक भीतर पोथीक रूप देखि मन खुशी अछि, मुदा खुशीक जड़िमे किछु सहयोगीक भरपूर प्रेरणा रहल, जे प्रेरित करैत रहला, तँए सभकेँ हृदैसँ धन्यवाद दइ छिऐन। खास कऽ गजेन्द्रजी (श्री गजेन्द्र ठाकुर) आ उमेशकेँ बेर-बेर धन्यवाद।

पोथीक रूप साकार करैमे श्रुति प्रकाशन आ प्रेसक जे संचालक मण्डल छैथ, काजक मूर्त रूप बनबैमे सचमुच सफल मूर्त्तकार छैथ, तँए तहेदिल धैनवादक पात्र छैथ।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

बेरमा (मधुबनी)

05 अक्टुबर 2013

एक धाप जमीन

भिनसुरका काज-उदमसँ निचेनो ने भेल छेलौं। सुनलौं जे दिनेश भाय कपार फोड़ा लेलैन। भोरे-भोर एना किए भेलैन, अखन तँ शरीरक सभ अंग भकुआएले रहल हेतैन। यात्रा दिस नजैर गेल। दही माछक यात्रा नीक होइ छै मुदा केकरा-ले? अधखरूआ काज छोड़ि जाएब उचित नइ बुझलौं। तैबीच पनिगर समांग सभ दिनेश भायकेँ छैन्हे पाइ-कौड़ीबला भइये गेल छैथ, झंझारपुर लऽ जा प्राइवेटमे भर्ती करा देलकैन।

चुल्हिक जारैनसँ लऽ कऽ तरकारी धरिक ओरियान कऽ निचेन भेलौं चाह पीलौं। तैबीच, जहिना धारक पानि आ वायुमण्डलक हवा उधियाइए तहिना रस्ते-पेरे बात उड़िया गेल जे एक धाप जमीन-ले दुनू भैयारीमे झगड़ा भेलैन। ओइ जमीनमे केराक घौर, छठि पाबैनमे दुनू भाँइ टहैल-बुलि कऽ एकठाम भेला। परिवारक पछुआएल काज देखि देहमे खौंत फेकनहि रहैन कि दुनू केरे बीटक बीच फरियौलैन। ओना, दुनू भाँइ गामेक स्कूल धरि नियमित छात्र रहला मुदा समैयो तँ समैये छी। सदिकाल उर्कुसी उड़ियैबते रहैए। जँ से नइ तँ आब कहाँ देखै छी उक्खैर-समाठ आकि हर-पालोक चोरकेँ? तँए की चोरक वंश मेटा गेल? मनमे भेल जे भने नीके भेल जे रस्ते–पेरे जिगेसो भऽ जाएत आ किछु ऐगलो भाँज लगि जाएत जे दिनेश भाइक कपार फुटलैन तँ फुटलैन, ब्रेन ने तँ हेम्रेज भेलैन।

दरबज्जासँ निकैलते देखलौं जे रस्ते-पेरे समाददाता सभ समाद

बिलैह रहल छैथ। समादो तँ अजीब होइए किने, एक्के घटना दस रंगक बनि जाइए। एना किए? पहिल घरवासी गामक नेताइन, जँ पड़ोसिया बनि हमहीं नइ मोजर दैतिऐन सेहो तँ नीक नहियेँ होएत। पुछलयैन-

"की घटना भेल अछि?"

वेचारी अपने बेथे बेथाएल, जे तीन हजार रुपैआ नोकरीक नाओंपर दिनेश भाय ठकि नेने रहथिन। अनधुन बाजए लगली-

"नीक भेल एक भाँइ कपार फोड़ौलक, दोसर मारि खेलक। ओना मारि तँ दुनू खेलक। मुदा एकटा चुपा दोसर देखौआ... ।"

गपक कोनो अरथे ने लगल जे घटनाक जड़ि की। मुदा नीक-अधलाक विचार भऽ गेल। चुपे आगू बढ़लौं तँ दोसर गोरे कहलैन-

"छोट भाए भऽ कऽ पैघपर हाथ उठाएब दिनेशकेँ नीक भेलैन। दुनू भाँइकेँ तँ भगवाने बड़का-छोटका बनौने छथिन।"

घटना तँ हराएले रहल मुदा एकटा पन्ना तँ भेटल। पन्नो तँ पन्ना होइए, मुदा दोसरो-तेसरो तँ पन्ने कहबैए। रस्ता दिस आँखि उठैबते ललितपर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते मनमे भेल जे आब सभ भाँज लगि जाएत। लग अबिते ललितकेँ पुछलिऐ- "बौआ, दिनेशजीक समाचार कहह?"

मनमे भेल जे धुर्रफन्दा लोक 'ललित' ऐछे, जँ कहीं अपने गाड़ीपर बैसा डॉक्टर लग लऽ गेल होइथ। खाएर जे हौउ, धुअल-पखारल शब्दमे ललित बाजल-

"काका, अहाँ तँ बुझिते छिऐ जे हम रोड परहक आदमी भेलौं, एको मिनट पलखैत कहाँ होइए जे गामो-घर दिस देखब। तहूमे ठीकेदारी तँ आरो जपाल अछि। तेहेन लफड़ा ऑफिस लगा देने अछि जे की कही, अखनो ऑफिसेसँ अबै छी।"

ऑफिसक नाओं सुनि अचम्भित भेलौं जे भोरे-भोर कोन ऑफिस

चलै छै जे कहैए ऑफिसेसँ एलौं। पुछलिऐ- “भोरे-भोर ऑफिस?”

निधोख ललित बाजल-

“लेन-देनक ऑफिस तँ डेरे छै किने।”

बात आगू नै बढ़ा, पुछलिऐ-

“एक बेर दिनेशजीक जिगेसा कऽ लेब तँ जरूरीए अछि किने, तइमे तोरा तँ आरो बेसी उपराग देथुन जे बेरपरक ललित नइ छी।”

काजक झमारल ललित बाजल-

“काका, समाजक लीले गड़बड़ अछि, अहीं कहू जे ई उचित भेल जे एक घौर केरा-ले अपनो अस्पतालमे बरदाइ आ दोसो-महीमकेँ बरदाबी। तहूमे कि कोनो हमरा पहिने कहि देने छला जे एक घौर केरा-ले दुनू भाँइ माइर करब।”

पुछलिऐ-

“से की ओ जनै छला?”

ललित बाजल-

“भरि दिन पोथी-पतरा कन्हेमे लटकल रहै छैन आ अपनो दिन-बेरागन नइ बुझै छैथ। एक साए बेर दरबज्जापर जाएब, तखन धोपचटमे गोटे बेर भेट जेता, एहेन उड़नबाज दुनू भाँइ छैथ, तखन कहू जे केना केरा घौर कपार फोड़ा देलकैन। मुदा जे हौउ, समाजोक तँ दायित्व अछि। तइसँ एक बेर जा कऽ हाल-चाल पुछि लेब जरूरीए अछि।”

कहलिऐ-

“भने तोरा सवारियो छह, तीन बजेमे चलह।”

धुर्रफन्दा ललितकेँ बात नीक लगलै। बहानाक गवाही बिनु तकनहि भेट गेलिऐ। बाजल- “काका, भने पान-छह घन्टा समैयो अछि, ताबे हमहूँ बैंकक काज कऽ लेब। निचेनसँ चलब जे आठ-नअ बजे राति

तक घुमि आएब।”

ओना तत्खनात गपमे काट-खोंट करब उचित नइ बुझलौं, मुदा ओकर ‘आठ नअ बजे’ आ अपन ‘आठ-नअ बजे’मे अन्तर तँ बुझिए पड़त। साढ़े-पाँच छअ बजे तक संभव अछि। कहलिऐ-

“बड़बढ़ियाँ।”

महेश-दिनेश सहोदर भाए। ओना अर्थ रोगसँ पीड़ित परिवार, तँए गामक स्कूल छोड़ि बाहरक स्कूल-कौलेजक नियमित विद्यार्थी नै रहला मुदा एम.ए; पी.एच.डी.क सर्टिफिकेट नइ छैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। समय तेहेन भऽ गेल अछि जे पाइक खेल कोनो स्कूलकेँ चमका रहल अछि, तँ कोनोकेँ धमका रहल अछि। ओना, बम्बैया कलाकार जकाँ दुनू भाँइ चौबीसो घन्टा मेकअपेमे रहै छैथ। एकरंगा चेहरा दिन-राति रहिते छैन। वएह आल रंगक अंगा, खौंरकी, कट्ठा डेढ़ेक सिनूरक ढिमका आ बिनु कमाइल देलहा केश-दाढ़ी तँ बनौनहि छैथ। दुनू भाँइ तारा-ऊपरी छैथ, रहबो केना ने करता, दुनियाँ की कनियेँ-टा अछि जे दस कट्ठा अहाँ जोतिए लेब तँ दुनियेँ जोता जेतइ। समाजक स्त्रीगणक कौलेजक प्रोफेसरी ने महेश करै छैथ, मुदा अदहासँ बेसी पुरुखक कौलेज तँ खालीए अछि। पारखी दिनेश, समाजेमे नोकरी ताकि लेलैन।

मुदा दू दुनियाँमे दुनू भाँइक जिनगी तखन भैयारीमे एना भेलैन? छगुन्तामे पड़ल छेलौं। जहिना कौर्नर-बौल फेकैक अभ्यास खेलाड़ी करैए तहिना रंग-रंगक सोंगर लगा जुति धरबी तँ केतौ सोंगर नम्हरे भऽ जाए आ केतौ छोटे भऽ जाए। कुजुति देखि मन भन-भनाइते रहए कि महेश भाइक मझिला बेटा पहुँचला। होइते छै कोनो घटना घटला पछाइत घरवारी कोट-कचहरी, अस्पतालसँ गाम-घर धरि घुमि कनसोह लइते अछि। नव समाचारक जिज्ञासा बढ़ले छल। पुछलिऐ- “बाउ, सुनै छी अहीं दिनेश भाइक कपार फोड़ि देलिऐन! कहुना अहाँ भेलिऐन तँ बेटे-

भातिज ने भेलिऐन, तखन..?”

मनमे भेल जे घटनाक जड़ि छुटि गेल आ दोसर पन्ना उलैट गेल। मुदा जेना गणेशकेँ प्रश्नक उत्तर पहिनेसँ तैयार होइ तहिना ठाँहि-पठाँहि बाजल-

“ऊहो भातिज बुझता तखन ने पित्ती बुझबैन- ‘भाए-भैयारी महींसिक सींग जखने जन्मल तखने भीन।’ पित्ती नै दियाद छिया, दियाद जकाँ रहबैन!”

गणेशाक ठमकल बात सुनि अपनो मन ठमैक गेल। ठमैकते ठहकए लगल जे चालि-चलैन तँ सचमुच दिनेशक दब छैन्हे, जखने परिवारक चालि-चलैन दबत तखने पारिवारिक सम्बन्धमे कमी औत...। बातकेँ मोड़ैत पुछलिऐ- “झगड़ा किए भेल?”

मुस्की दैत गणेश बाजल- “काका, जँ जड़ि बुझही तँ एक धाप जमीन-ले झगड़ा भेल। मुदा परिवार परिवार छिऐ, खापैड़क भुज्जासँ तस्मै धरि चुल्हिपर चढ़ै छइ।”

सुनि-सुनि हँसियो लागए मुदा हँसैयौक तँ अर्थ छै, कियो जीतला पछाइत हँसबैए तँ कियो घिनाइत हँसबैए। तँए हँसीकेँ पेटेमे रोकि पुछलिऐ-

“की एक धाप जमीन?”

“दुनू भैयारीमे गामक तँ सभ किछु बँटाइए गेल छैन, पाही पट्टी अपन-अपन छैन्हे तँए ओहो बँटाएले छैन। एकटा बीट केरा अछि। गौसार छइहे, खूब नमहर-नमहर घौर होइ छइ। ओही-ले मारि भेल।”

“नइ बुझलौं?”

“बँटै दिन दुनू भैयारीमे मेहदी जकाँ मेदहा रहैन, नै बँटलैन। किछु दिनक पछाइत आबि काका कहलैन जे गणेश चलह केरा बीट बँटैले। कहलयैन अहाँ भैयारीक बँटवारा छी, अपन बाँटि दियौ। एक धाप बढ़ा

कऽ आड़ि दऽ देलखिन। बाबूओ तँ सभ दिन बाहरे रहै छैथ। तेते ने बाहरी काज रहै छैन जे महिनामे गोटे राति गाम-विश्राम होइ छैन। औगताएल रहने ई बाते बिसरा गेलैन। नानी गामसँ समाद आएल जे तांत्रिकजीकेँ एक घौर केरा पठा दइले कहियौन। ...आब अहीं कहू काका, एक तँ वेचारी नानी बुढ़ छैथ तैपर ओ सभ बाबूकेँ पाहुन नै कहि तांत्रिकेजी कहै छैन। हिनको अपन ने महात्म्य छैन।"

"हँ।"

'हँ'क अर्थ गणेशकेँ की लगलै से ओ जानए। कहलिऐ-

"तोहर जिगेसा तँ भइये गेल, आब कनी दिनेशोजीक जिगेसा कऽ लेबैन।"

तीन बजे तैयार होइते रही कि ललित पहुँचल। चाह पीब दुनू गोरे विदा भेलौं। सीमा टपिते ललित बाजल-

"काका, समुद्रक लहैर जकाँ गामो-घरमे लहैर अबै छइ।"

ललित कथी बाजए चाहै छल से नइ बुझि पेलौं। पुछलिऐ-

"की लहैर?"

बाजल-

"गाममे चोर अबै छेलै आकि आगि लगै छेलै, आवाज सुनिते ओकरा भगबै-मिझबै छेलौं। मुदा एहेन नीक बेवहारमे आगि मिझौनिहार अगिलगौन आ चोर भगौनिहार चोरिकरौनक संग चोरबा केना बनल?"

ललितक प्रश्न सुनि बकार बन्न भऽ गेल। मानि लेलिऐ जे ललितक विचार जरूर विचारणीय अछि, से तँ मोटर साइकिलपर नइ हएत। बजलौं-

"तूँ डरेबरी करबह आकि गामक जड़ि खोदबह।"

दिनेशजीकेँ भेँट करैत पुछलयैन- "डॉक्टर साहैब की सभ

कहलैन?”

दिनेश- “कहलैन जे मारि किछु बेसी लगि गेल अछि तँए ओ तँ निजाइते निजाएत। मुदा हँसुआक पीठ माथमे बेसी धँसल नइ अछि, ओहो जल्दीए ठीक भऽ जाएत।”

दुनू गोरे डॉक्टर लग पहुँच पुछलयैन-

“डॉक्टर साहैब, दिनेशजीक की स्थिति छैन?”

“नीके छैन।”

“पाइ-कौड़ी दुआरे इलाजमे कमी नै होइन।”

“एह! से कि दिनेशजीकेँ चिन्है नै छिऐन। अनाड़ी किए बुझै छी।”

घुमि कऽ आबि दिनेशजी लग दुनू गोरे बैस गप-सप्प शुरू केलौं। पुछलयैन-

“दिनेशजी एना किए भेल?”

जाबे दिनेश किछु बाजैथ तइसँ पहिने हुनकर पत्नीए टपैक गेली-

“हमर कपारे जरल अछि, तँए ने एहेन जरल घरबला भेला। जँ से नै रहितैथ तँ एतबो ने बुझा कऽ कहल भेलैन जे छठिमे नैहरसँ एक घौर केराक मांग भेल अछि, ओहो कि कियो आन भेला, जेहने अपन तेहने ने अहूँकेँ।”

ललितकेँ चुटका सुतरल। चुटकी लैत बाजल-

“ई की कोनो नव गप छी, सासुरमे भैयारीक कोन बात जे समाजे सासुर जकाँ नीक-अधला करैए। तहूमे छठि सन पाबैन, बिना ठकुआ-केरा-भुसबाक केना हएत।”

आन समय दिनेशजीकेँ पत्नीक बोल जेहेन मीठगर आकि तेलगर लगैत होनि मुदा अखन नीक नइ लगलैन। लाल आँखि बना ललौन बोलीमे दिनेशजी बजला- “समाज जिगेसा करए एला, तिनकर स्वागत-

बात छोड़ि चण्डी-काली बनि जाउ। जखन गड्डीक-गड्डी आनि कऽ दइ छी, तखन रसिक पिया बनि जाइ छी, आ अखन कपरजरूआ बनि गेलौं। पत्नी छी पत्नी जकाँ रहू!"

दिनेशजीक तामसकेँ रोकैत ललित बीच-बचाव करैत बाजल-

"भौजी, एतबो नइ बुझै छिऐ जे अखन भाय-साहैबक देहमे चोटोक दर्द छैन आ कपारमे लोहोक बीन-बीनी हेबे करतैन। जरलपर जारैन देबै तँ धधड़ा नै धधकत! चुप रहू। भाय-साहैब, अंगूर हमहूँ अनने छी, खाइक मन होइए?"

दुनू बेकतीक झगड़ा जे हौनु मुदा एकटा प्रश्न तँ ठाढ़े भऽ गेल। ओ ई जे पति-पत्नीक बीच सम्बन्धक रेखा केहेन हेबा चाही। कियो पति चरित्रसँ बिगड़ल छैथ आ पत्नी चरित्रवाती छैथ, तखन दुनूक बीचक सम्बन्ध केहेन होइ? कियो पत्नी घूसखोरीक विरोधमे रहैथ आ पति दिन-राति घूस लथि तैठाम पत्नी-पतिक पाइक उपयोग नै करती?

दिनेशजीक बिगड़बसँ लाभे भेल। छुच्छे चाहक जगह जलखैयो आएल। दिनेशजीकेँ पुछलयैन-

"अहाँ सन लोकले नीक भेल?"

दिनेश हरदा बाजि गेला-

"दिनक दोख छल। नइ तँ साल भरिसँ दुनू भैयारी एकठाम बैस चाहो ने पीने छेलौं। पीबो केना करितौं, हुनको अपन दुनियाँ छैन, अपनो अपन अछि। महिनामे साइते गोटे राति गाममे बीतैए, नइ तँ बाहरे रहै छी। साँझमे आएले रही। खाइ बेर पत्नी कहलैन जे सासुरसँ केराक आढ़ैत भेल। छठम्मे दिन छठि छिऐ। दू दिन घरोमे रहतै। ..पुछलयैन तँ कहलैन जे अपने बीटमे केरा अछि। सतबजिया गाड़ी पकैड़ पटना जाइक रहए ऑफिसमे केते रंगक काज पछुआएल छेलए। अनदिना ने भीड़ो रहै छै, पाबैन-तिहारमे तँ सेहो कमिए जाइ छइ। तँए अन्हरोखे हाँसू

नेने केरे बीट लग पहुँचलौं।"

टोकलयैन-

"अन्हरोखक माने?"

दिनेशजी तिलमिला गेला। अन्हरोख भोरोमे होइ छै, साँझोमे होइ छइ। सौंझुका अन्हरोख बदलैत-बदलैत अन्हारमे बदैल जाइ छै मुदा भोरका तँ फरिच होइत-होइत फरिछा कऽ दिन भऽ जाइ छइ। तँए ने जेबोक समय होइ छइ।

ततमत करैत देखि दोहरबैत कहलयैन- "साँप-कीड़ा अन्हार-धुन्हारमे करजान सभमे रहै छै, तरवन किए गेलौं। अच्छा, ओते भोरमे ओ सभ केना पहुँचला?"

दिनेशजी बजला-

"सएह ने बुझि पेलौं, जे नियारि कऽ गेल रहैथ आकि ओहिना देखलैन तँ पहुँचला।"

पुछलयैन-

"ओ सभ तँ सतबजिया सुतनिहार छैथ तखन केना एकठाम भेला? खाएर छोड़ू। बुझा कऽ नै कहलिऐन जे कुटुमारे केरा जाएत।"

दिनेशजी- "भातीजकेँ कहलिऐ, गणेश जेहने हमर सासुर तेहने ने तोरो ममहर भेलह। तखन तोहीं कहह?"

"गणेश की कहलैन?"

जाबे दिनेशजी बजितैथ तइ बिच्चेमे पत्नी झपैट कऽ बजली-

"हुनका सभकेँ धनबूबूक ने भऽ गेल छैन। हम तँ सहजे दियादे भेलिऐन। सभ जनै छी जे दियाद आ दालि जेते गलै छै तेते सुअदगर होइ छइ। अनको की ओ सभ जीहमे लगबै छथिन।"

दिनेशजीक पत्नी–केकैयी–क बात सुनि ललित बाजल- "भौजी,

अहीं कोन उतकिरना केलौं। जँ एक घौर केरे छठिमे नैहर पठबैक छेलए तँ दिनेश भायकेँ झंझारपुरेसँ कीनि कऽ पठा दइले कहितिऐन।"

केकैयी बजली- "मास दिन पहिनहि कहि देने छेलिऐन जे अपने बीटमे केरा अछि, तखन केना कीनि कऽ पठबैले कहितिऐन।"

दुनू गोरे गपकेँ रोकैत बजलौं- "खाएर जे भेल से तँ भइये गेल, मुदा कोनो धरानी नीक भऽ गाम चलू, तखन बैस अपनामे मुँह मिलानी कऽ लेब।"

हमर बात केकैयीकेँ नीक नै लगलैन। बजली- "यएह कहौथ जे कियो बेसी समंगर रहत तँ कम समांगबलाकेँ गामसँ भगा देत!"

मुस्की दैत ललित बाजल-

"केकरा के भगौलकै हेन जे अहाँकेँ भगा देता। अनेरे मने-मन परेशान होइ छी। भैयारीक बात छी, हमसब समाज भेलौं, अहाँ जे कहै छी से बिना हुनकोसँ बुझने केना उत्तर देब।"

चिन्तित होइत दिनेशजी बजला-

"देखियौ, एक तँ ओहिना ऑफिसक काज सभ पछुआ गेल अछि, तैपर ऐठाम बरदा गेलौं!"

ऑफिसक काज सुनि पुछलयैन-

"अहाँकेँ ऑफिसक कोन काज अछि जे पछुआ गेल। नोकरी तँ नहि करै छी।"

दिनेशजी- "अपन काज कहाँ छी, जखन समाजमे रहै छी ऑफिस जाइ-अबै छी, तखन अनकर काज नइ करिऐ, से नीक हएत?"

दिनेशजीक बात सुनि भेल जे ऑफिस तँ अखन लेन-देनक अखाड़ा बनल अछि। जइसँ बिनु लेन-देन करैबला अपनो काज छोड़ि रहल छैथ, तैठाम दिनेशजी अनको काज झोरा भरि-भरि करै छैथ तेकर

की माने। बेपार कऽ रहला अछि आकि समाज सेवा? खाएर जे हौउ। तही बीच डॉक्टर पहुँचला। ठाढ़े-ठाढ़ डॉक्टर साहैब बजला- “सुधारमे छी किने दिनेशजी?”

गिरगिराइत दिनेशजी कहलकैन-

“डॉक्टर साहैब, देहमे दर्द तँ अछिए।”

जहिना गर्म चाहसँ मुँह पकल रहने, कनी कमो गर्म चाह ओहने गरम बुझि पड़ै छै तहिना दिनेशोजीकेँ होइत रहैन। मुदा पाबैनक लहकी देखि सभ बिसैर बजला- “डॉक्टर साहैब, दबाइ सभ खाइते रहब, मुदा छुट्टी दऽ दिअ जे भोरुका सतबजिया गाड़ी ने छुटि गेल, जँ रौतुको एगरबजिया पकड़ा जाएत तैयो सबेर-सकाल काल्हि पटना पहुँच जाएब।”

हम दुनू गोरे विदा भेलौं। एक तँ अपनो ग्लानिसँ मन भरि गेल, दोसर ललितोकेँ किछु एहेन बात मनकेँ भटभटा देलकै जे बिसाइन होइत-होइत बिस-बिसाइत रहए। ओना दोहरा कऽ चाह पीऐक आग्रह दिनेशजीक बेटो आ पत्नियोँ करैत रहली मुदा सुचित मन जहिना खेबा-पीबाक इच्छा जगबै छै तहिना कुचित मन अनिच्छा सेहो जगैबते छइ। सएह दुनू गोरेकेँ भेल।

..हलाँकी दिनेशजी एते विचार जरूर केलैन जे ललितकेँ कहलखिन- “ललित, एक तँ अहाँक समय लेलौं तैपर सवारियोक खर्च बढ़ा दी, से नीक नहि। तेलक पाइ लऽ लिअ।”

मुदा ललितोकेँ ठीकेदारीक ताउ रहबे करै बाजल- “गाड़ी तेलक जे हिसाब जोड़ब तखन काज चलत। एतबो आशा हमरा कमाइक नै अछि। अहाँ अखन डॉक्टर ऐठाम छी, केना नीक भऽ गाम पहुँचब ई दायित्व केकर छइ।”

कहि ललित आगू बढ़ि मोटर साइकिल पकड़लक। पाछूमे बैसते

रही कि ललितक मुँहपर नजैर पड़ल। जेहने तुरुछल मन तेहने आँखिक भौ बुझि पड़ल। मुदा बीचमे किछु बाजब उचित नइ बुझि चुपे रहलौं।

कनी आगू बढ़ि ललित बाजल- "काका, तेहेन दुनू भाँइक किरिया-करम भऽ गेल छै जे कहू दस-दस लाखक घर बनौने अछि। तैपर दस-दस लाख बेटी-बिआहमे खर्च करै छैथ! केतए-सँ आनै छैथ? दुनू भाँइ तेहेन बहुरूपिया बनि गेल छैथ जे यएह सभ समाजमे भाए-भैयारी बनए देथिन!"

ललितक गंभीर बात मन डोला देलक।

बजलौं- "ललित, बेसी तँ नइ बुझै छी जे असल बात बाजब, मुदा एते तँ मन मानिते अछि जे जे जेते नीच-सँ-नीच जगह परहक पाइ उठबैए ओ ओकर ओते बेसी बेवस भऽ गेल अछि। जे मानवीयताक विपरीत भेल। जँ से नै भेल तँ कहू एक धाप जमीनमे केराक बीट, कोन सोनाक बड़का खान भेलइ, ओहूमे हजार-बजार किछु ने अछि। से साए-सैकड़ाक लालचमे भैयारीक जे परिचए देलैन से तँ देबे केलैन, जे समाजोक परिचए तँ दाइए देलैन!"

समाजक नाओं सुनिते ललितोकेँ शतरंजक सह भेटल। बाजल-

"काका, हमहूँ ठीकेदारेक जिनगी जीबै छी, एकर माने ई नै जे नीक-अधलाक विचार नै करै छी। छाती खोलि गामक चौराहापर बाजि सकै छी, जे भाय समाजक एक्कोटा लाल ई कहि दैह जे फलनमासँ अधला भेल, जँ भेल तँ अखनो ओकरा चर्चमे आनए चाहै छी। मुदा ई दुनू भाँइ तँ कोनो मनुक्खे ने छी।"

"जाए दहक। जे जेहेन करत से तेहेन पौत।"

❑ शब्द संख्या: 2505

ओझरी

कान्हपर डेढ़हत्थी ठेंगामे कुशाक चारिटा आँठी गौंछ कऽ टँगने सुकला काका दू बाँस फरिक्के रहैथ कि नजैर पड़ल। ओना पाँच बजे भोरेसँ जेरक-जेर लोक खुरपी-ठेंगा नेने कुश उखारए जाइतो छला आ उखाड़ि-उखाड़ि घुमितो छला। तैबीच सुकला काका सेहो रस्ते–रस्ते दच्छिनसँ उत्तर-मुहेँ बाधसँ घर दिस अबै छला। कनी फरिक्के देखि नजैर तँ हुनकेपर छल मुदा किछु बजलौं नहि।

ताबे सहैट कऽ एक बाँस आगू ओहो बढ़ला। कान्हपर कुशक भार रहैन मुदा मन तीन मासक ओझराएल काजपर छेलैन तँए मनो खुशी छलैन आ मुस्की सेहो ठोरपर छेलैन। खनहन मन खरहर डेगक संग हरियर मुँह देखि भेल जे भरिसक सिरगर कुश असानीसँ उखड़लैन तँए मन हरियाएल छैन। फेर भेल जे भरिसक धड़गर खुरपी हेतैन तँए असानीसँ कुश उखड़ल हेतैन, तेकर खुशी हेतैन।

..गुन-धुन मन करिते छल ताबे एक लग्गी लग चलि एला। ओना कुश तँ कुशे छी कियो जड़ि भिरा सिर-तिर नेने उखाड़ै छैथ तँ कियो ऊपरेसँ काटि चटाइ बनबै छैथ, उस्सरक उपजा तँ छीहे। जइ जमीनमे आन किछु ने उमझैए, ओइमे कुशे उमझैए। लग अबिते पुछलयैन-

“काका, मन बड़ हरियर देखै छी केतो किछु पेलौं हेन?”

कक्काक कान्हपर कुशक भार मुदा अपन तीन मासक ओझराएल काजकेँ आरो ओझराएबपर छेलैन। ‘पबै’क नाओं सुनि जेना ठोरेपर रहैन

तहिना बजला- “पएब की, ने पेलौं आ ने पाबए देलिऐ!”

काका गपक कोनो अर्थे ने लगल, किछु बुझलो रहैत तखन ने। मनमे भेल जे रस्ते-रस्ते अखन लोक चलैक ढबाहि लगल अछि, नीक हएत जे दरबज्जेपर बैस नीक जकाँ पुछि लिऐन। कहलयैन-

“काका, अहाँ तँ टहलबो-बुलब छोड़ि देलिऐ। दरबज्जेपर चलू, चाहो पीब लेब आ गाम-घरक किछु गप्पो कऽ लेब।”

चाहक नाओं सुनि कक्काक मन चपचपेलैन। किएक तँ डेढ़-दू घन्टा बिलम भऽ गेल छेलैन। बजला-

“चाहे नहि, पानियोँ पीबह।”

जहिना आग्रह केलिऐन तहिना एक चेकी चढ़ा ऊहो मानि गेला मुदा बीचमे एकटा उकड़ू काज तँ आबिए गेल। ओ ई जे पानि पीबैक की माने। खेनाइसँ लऽ कऽ छुच्छे पानि धरिक नमगर प्रश्न आबि गेल।

ततमत करिते रही कि धाँइ-दे सुकला काका बजला-

“आँगनमे चाह बनबए कहि दहुन आ कलपर सँ एक लोटा पानि नेने आबह।”

सुनि मन हल्लुक भेल। अपने आँगन दिस बढ़लौं आ काका दरबज्जा परहक ओसारपर कुशक भारो आ खुरपियो रखि चौकीपर बैसला।

कलपर सँ लोटा नेने आबि आगूमे देलिऐन।

देखिते बजला-

“आब की पानि पीबैक लोटो रहल, पहिने जे धिया-पुताक लोटकी छल से भऽ गेल आब लोटा!”

कहि उठा कऽ एक्के छाँकमे गट-दे पीब गेला। भेल जे भरिसक छाँक नइ पुरलैन। पुछलयैन- “एक लोटा आरो आनि दी?”

मनाही करैत बजला- “आब किए अनबह। जेतबे अनलह ओतबे पियासो छेलए। बैसह। की पुछए लगल छेलह?”

कक्काक हल्लुक मन देखि भेल जे गप करैक मूडमे आबि गेला, जँ पहिने चाहो पीआ देबैन तँ बिना कौमे-फुल स्टौपक व्याख्यान दऽ देता। कहलयैन-

“पहिने चाह पीब लिअ। गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइ छइ।”

तैबीच आँगनसँ चाह आएल। गिलास पकड़ैत काका बजला-

“आइ कुशी अमावस्या छी, अदहा भादो बीत गेल।”

कनी गुम होइत फेर बजला- “केतेक धुअल-पखाड़ल पहिलुका लोक सभ छला जे एक दिन माघ बितने नाचि कऽ बजैथ जे ‘गेल माघ उनतीस दिन बाँकी।’ कहू जे ई कोन हिसाब भेल? तीनियोँ-चौथाइसँ कम भेल। मुदा से नहि, केते हुनका सभमे अडिग बिसवास छेलैन जे जखन एक दिन माघ सन जाड़ काटि सकै छी तखन उनतीस दिन किए ने कटत!”

कक्काक बात सुनि भेल जे चाहेक ताउमे काका बहैक गेला। मनमे कोनो प्रश्न अछि आ ओ केम्हरो बहैक गेला! मुदा बीचमे टोकबो नीक नहि। जखने रूकता तखने पुछबैन। गर अँटिते पुछलयैन-

“काका, ओ जे कहलिऐ?”

जेना कक्काक नजैरसँ उतैर गेल छेलैन। बजला- “की?”

“ने अपने पेलौं आ ने पाबए देलिऐ?”

सुनिते जेना धक-दे मोन पड़लैन। बजला- “तीन मासक काज तेना ओझरा गेल जे ने अपने किछु पेलौं आ ने आने कियो पौलक।”

“से की?”

‘से की’ सुनिते जेना सुकला काका पसीज गेला। जहिना कोनो

बच्चा वा सियानकेँ बेथित मनक बेथा कियो सुनए चाहलापर पसीज जाइत तहिना कको पसीज गेला। बजला-

“तीन मासक जे ओझराएल काज छल ओकरा छोड़ि देलिऐ। जइसँ मनो हल्लूक भऽ गेल।”

कक्काक झँपाएल-तोपाएल बातक किछु अरथे ने लगल। मुदा जखन सोझहामे बैसले छैथ तखन पुछैयोक तँ अधिकार अछिए। ई नहि ने जे जे बजलौं से सुनि लिअ। दोहरा कऽ किछु ने बाजब। जँ कोनो प्रश्न उठत आ ओकर खण्डन-मण्डन नै होएत तँ ओकर रस केना निकलत। आ जाबे रस नइ निकलत ताबे कथी पीब रसिया बनि रसाएब..? पुछलयैन-

“काका, कनी फरिछा कऽ कहियौ। नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं?”

नमहर साँस छोड़ैत काका बाजए लगला-

“तीन मास पहिने रेडियो स्टेशनक एकटा अपेछित फोन केलैन जे काल्हि कथा पाठक समय भेटल से जरूर अबिऐ। अखन औगताएल छी। काल्हि बारह बजे जखन पहुँचब तखन आरो गप हेतइ।”

कहि फोन काटि देलैन। कथा लिखिते छी, बचिते छी, ओतौ जा कऽ बाचि देबइ..। मनमे कोनो बेसी लहैर नै उठल। घरमे केतेको कथा ऐछे, अपना दहीकेँ के खट्टा कहलक जे कहबै। जे मन फुरत से कथा लऽ लेब जा कऽ पढ़ि देबइ..!

रेडियो स्टेशनक नाओं सुनि काकाकेँ पुछलयैन-

“पहिनो कहियो कथा-पाठ केने छेलिऐ आकि पहिल बेर छल?”

प्रश्न सुनि काका ठमैक गेला। जेना किछु पेटक बात मने ने पड़ैन तहिना किछु समय घुरियाइत बजला-

“पहिल बेर छल। ओहो तँ भऽ गेल। नइ तँ देखै नै छहक जे

युनिवर्सिटी होइ आकि कौलेज, सरकारी ऑफिस होइ आकि कोनो संस्था, किछु गोरेक हाथक खेलौना बनि गेल अछि। जहिना सराधक भोज बुझै छै तहिना मुड़न, उपनैन बिआहक भोज बुझै छइ।"

काकाकेँ बहकैत देखि छोर तानि पुछलयैन-

"काका, रेडियो स्टेशन गेलिऐ?"

जेना एकाएक काकाक नजैर अपनापर पड़लैन। बजला-

"किए ने जइतौं। जुआ पाशापर जाइकाल जहिना युधिष्ठिर कहने छला जे बजौलापर बीखो पीआ देत सेहो स्वीकार अछि। दोसर दिन सबेरे दस बजे खा-पी कऽ विदा भेलौं। दस-पनरह मिनट बारह बजेमे बाँकीए रहए, तखने पहुँच गेलौं। चिन्हा-परिचयक अपेछित छोड़ि दोसर नहि। मुदा ओहो बाटे तकैत रहैथ। पहुँचते अपना ऑफिसमे लऽ गेला। कुशल-समाचारक पछाइत कहलैन जे कथा देखए दिअ। ..नमहर कथा दसे मिनटमे केना पढ़ल जाएत। कम-सँ-कम अदहा घन्टा समय चाही। गुन-धुन करैत कहलैन जे किछु पाँतिकेँ निकालि दियौ। कथा नमहर अछि आ समय कम। ..मनमे भेल जे पुछिऐन, एकटा कथा लिखैमे जेते समय लगै छै तेतबो दिन पहिने ने जानकारी हेबाक चाही, हड़बड़ी बिआहमे तँ कनपटी सिनूर होइते छइ। मुदा मनमे तेते खुशी रहए जे सभ बात तर पड़ि गेल। कथामे सँ टोबि-टोबि किछु पाँति निकाललौं। निकालि पुन: अपेछितकेँ देलिऐन। मुदा नमहर देखि ओ अपनो निकाललैन। ताधैर कथाक रूप कुरतासँ अधकुरता आ साँचीसँ फाँड़ धरि पहुँच गेल!"

पुछलयैन-

"तेकर पछाइत की भेल?"

बजला-

"समय भेटल। कम्प्यूटरक आगूमे बैसलौं।"

“असगरे आकि आरो कियो?”

“एक्के घरमे दू हन्ना अछि। बीचमे शीशाक देबाल लगल छइ। देखि तँ सभ सकै छी मुदा आवाज रूकि जाइ छइ। जखन बैसलौं तखन दोसर हन्नामे जे बैसल रहैथ ओ हाथक इशारासँ कहबोले करैथ आ चुपो होइले कहैथ। होइत-होइत बीस मिनटमे कथा बिसरजन भेल। फेर कम्प्यूटरमे काट-छाँट भेल। बीस मिनट उतैर कऽ तेरह मिनटपर अँटकल। ताधैर कथाक रूपेँ बदैल गेल! जहिना सजल-धजल देह अन्डर बीअरमे बदललासँ होइत तहिना भऽ गेल! खाएर जे भेल, नइ मामासँ कनहो मामा तँ भेल।”

पुछलयैन-

“पाइयो देलक?”

जेना केते भारी अधिकार भेट गेल होनि तहिना गुम्हरैत काका बजला-

“पाइ किए ने देत। मुदा तइमे की भेल से सुनह। जहिना सभ दूटा तीनटा, चारिटा अपन नाओं रखैए तहिना दूटा नाओं अपनो अछि। दूटा कागतपर दू बेर हस्ताक्षर करौलक दुनूपर दुनू नाओं लिखि देलिऐ। दू घन्टाक पछाइत जखन विदा होइपर भेलौं आकि चेक बनौनिहार कहलैन- ‘अहाँक दुनू हस्ताक्षर नै मिलैए, तँए चेक नै बनल।’ कहि दोसर कागत फेर देलैन। हस्ताक्षर कऽ देलिऐ। चारि बजि गेल। समय ओठर भऽ गेल। कहलैन- ‘आइ चेक नहि बनि सकल। अहाँ जाउ, पठा देब!’ कहलयैन- ‘बड़बढ़ियाँ।’ विदा भेलौं। विदा भऽ गेलौं, मुदा ओझरीकेँ जनमौने एलौं।”

एक ओझरी मेटाइत दोसर ओझरीक जनमैत सुनि जिज्ञासा भेल पुछलयैन- “से की?”

मुदा कक्को सतर्क छला। बजला- “पहिने जे कहै छिअ से सुनि

लएह, नइ तँ फेर वौआ जाएब। जखने कथ्थकर वौआइत तखने सुनक्कर वा पढ़क्कर तँ वौएबे करत किने?"

कहलयैन- "हँ से तँ वौएबे करत!"

बजला-

"मन तेते तमैक गेल जे हुअए अखन जँ राजा रहितौं तँ राज-पाट लूटा दइतौं। मुदा गाड़ी दुआरे, पाँचे साए टाका छल। किए तँ दिल्लीमे बीसे रुपैआक जरूरत होइ छै, अपना ऐठाम तँ से नहि, पान साए तकक कारोबार अछि। मुदा सेहो बिसैर गेलौं। चारि साए टका भरि दिनमे गमा देलिऐ।"

"तँ चेक पठौलैन की नहि?"

"आखिर किछु छिऐ तँ सार्वजनिक संस्था ने छिऐ। पोस्ट ऑफिसक माध्यमसँ बीस दिनक पछाइत पठौलैन। संस्थो तँ सार्वजनिके छी किने, सभकेँ अपन-अपन दायरा छइ, अधिकार छइ। बीस दिनक पछाइत एकठामसँ चेक चलल दोसर ठाम बीस दिन फेर अँटैक, बेरहटिया करए लगल। खाएर जे हौउ, मुदा हाथमे तँ एबे कएल।"

बिच्चेमे काकाकेँ पुछलयैन-

"काका, तब तँ जीतलयैन?"

'जीतब' सुनि काकाकेँ मीरा-राधा मोन पड़लैन, एक जीतबे ने कएल दोसर हारबे ने कएल..!

मुस्की दैत बजला-

"कागतेक रुपैआ बनै छै आ रुपैओ कागत बनि जाइ छइ।"

उड़नखटोला-गप सुनि चकविदोर जकाँ हुअ लगल मुदा जखन सोझहेमे छैथ तखन पुछिऐ लेब नीक हएत। पुछलयैन-

"एना केना भेल?"

मचकीक आस मारि काका बजला- “चेक जखन हाथ आएल तखन भेल जे रुपैए आबि गेल। जँ दसटकही नोट दइत तँ एकथाक होइतए तइसँ नीक जे बक्सामे जगहो ने छेकत। कोनो किताबमे घोंसिया देबइ।”

कक्काक बात सुनि कहलयैन- “बैंकमे नै जमा केलिऐ?”

जेना केतौ काका हारि चुकल छला, तहिना बजला-

“बौआ, की कहबह? भेल जे पराते भने जँ बैंकमे जाएब तँ सभ कहत जे देखियौ खापैड़ केते तबधल छै! तँए सात दिनक पछाइत बैंक गेलौं।”

बजलौं- “खाएर, बैंक तँ पहुँचलौं ने।”

पहुँचब सुनि बजला-

“की पहुँचब दैवक कपार! भाँज लगेलौं तँ पता लगल जे पहिल पालीमे लेन-देन चलै छै, दोसरमे आन काज। एक बजे बड़का रौदामे फेर गेलौं। आठ-दस गोरेक बीच मैनेजर साहैब बैसल रहैथ। भीड़ देखि मनमे भेल जे पहिने जे एला हुनकर काज ने पहिने हेतैन। ब्रेंचपर चारि-पाँच गोरेक बीच बैसलौं। बैसल-बैसल समय ओठर भऽ गेल, उनैह गेल मुदा दरबारक भीड़ नै कमल। भीतरमे ठहाकापर ठाहाका चलैत रहइ। साढ़े चारि बजे जा कऽ मैनेजर साहैबक आगूमे चेक देलिऐन। चेक देखिते बजला, ‘बैंकमे देखिते छिऐ जे सभ गाड़ी पकड़ए चलि गेला। असगरे छी, हमहूँ चलैए-पर छी, कहि उठि गेला।”

पुछलयैन- “तब तँ काज नै भेल हएत?”

बजला- “काज केना होइत। समैये उनैह गेलइ!”

“बैसले-बैसल उनैह गेल?”

“कहलियह से नइ बुझलहक। दरबारे ने टुटल, मुँह तकिते रहि

गेलौं। दोसर दिन फेर गेलौं। समैपर चेक देलिऐन। रजिष्टर उनटा मिलौलैन तँ कहला चेके गलती भऽ गेल। खातामे किछु नाओं अछि आ चेक किछु नाओंसँ अछि। कहि चेक घुमा देलैन।"

"एना किए भेल?"

"ओहुना देखिते छहक जे दूटा-तीनटा चारिटा नाओं लोक रखिते अछि, कियो अधकट्टी तँ कियो गोल गोला, मुदा हमरा से नै भेल। गमैया नामक अधारपर भोँटर लिस्ट बनल, भोँटर लिस्टक अधारपर परिचय पत्र आ राशनकार्ड बनल। ओही अधारपर बैंकमे खाता खुजल। मुदा स्कूलक नाओं कागजे-कागजे वौआइत रहल। ओही अधारपर चेक बनल। मैनेजर साहैबसँ पुछलयैन तँ कहलैन जे एफिडेफीट लगा कऽ नाओं चढ़ि जाएत। संतोष भेल। चलि एलौं। दोसर दिन बैंकक काज छोड़ि कऽ कोर्टक काज दिस बढ़लौं। रबि रहने एक दिन ओहिना चलि गेल। दोसर दिन एफिडेफिट बनेलौं। तेसर दिन बैंकपर गेलौं तँ पता लागल जे मैनेजर साहैब सस्पेंड भऽ गेला। साते दिन नोकरी शेष छेलैन तही बीच सस्पेंड भऽ गेला। आश्चर्य भेल जे सेवा निवृत्ति होइसँ एक पनरहिया अपने कागत-पत्तर सरियबैमे लगि जाइ छइ। तखन घरमुहाँसँ बहरमुहाँ केना भऽ गेला। कैसियरसँ पुछलापर पता लगल जे इन्दिरा आवासक कमीशनमे गोल-माल भेल तँए सस्पेंड भेला। ऐगला सप्ताह धरि दोसर आबि जेता। ओ तँ पुन: घुमि कऽ नहियेँ औता किएक तँ केतबो जल्दी फरिछाएत तँ निच्चाँ-ऊपर करैत सप्ताह बीतिए जेतैन। सुनि चलि एलौं।"

पुछलयैन- "फेर की केलिऐ?"

'फेर की केलिऐ' सुनि काका बजला- "दोसर सप्ताह गेलौं, ता नवका मैनेजर आबि गेल रहैथ। असगरे बैसल रहैथ, जा कऽ सभ बात कहि कागत देलिऐन। कागत देखि रखि लेलैन। परिचए-पातक गप-सप्प उठल। नीक संस्कारी परिवारक छैथ। कहलैन, ई तँ मैनेजरक अधिकारक काज छी जे उर्फ करि कऽ नाओं चढ़ा लैतैथ। अनेरे एते

करैक कोन काज छेलइ! चेक देखि कहलैन जे एकर समैये समाप्त भऽ गेल।

..सुनि चोटे घुमि कऽ आबि कागतक बीच रखि देलिऐ।”

पुछलयैन-

“दोहरा कऽ किए ने फेर बनबा लेलौं?”

बजला-

“सौंसे रामायण पढ़ि गेलौं, सीताक पते नहि! जेते आमद हएत तइसँ केते बेसी खर्चे भऽ गेल तखन अनेरे कोन ओझरीमे फेर पड़ितौं। छोड़ि देलिऐ।”



शब्द संख्या: 1970

मुसहैन

भोरेसँ बेलबा घुसकीपट्टीवालीक हरियर मन देखि तारतम करैत रहए जे की बात छिऐ जे यएह घुसकीपट्टीवाली छी जे कहियोकाल जहिना खढ़ देखि लप-दे आगि पकैड़ जरा दइत तहिना बुझि पड़ै छल आ आइ की बात छिऐ..? मुदा चेहरा केतबो मेकअप किए ने कऽ लिअए मुदा हृदैक बात सोलहन्नी तँ नहियेँ बुझि सकैए...।

घुसकीपट्टीवालीक खुशीक कोनो अरथे ने बेलबाकेँ लगइ, दिन बीत गेलै मुदा भाँज नै लगलै। भाँज लगलै रातिमे खाइ-काल जखन मनोनुकूल खेसारी दालिक पाँचटा कचौड़ी थारीमे देखलक। सेहो भाँज सुपते कहाँ लगलै, पुछला पछाइत लगलै। भाँज लगिते बेलबाक मनो हल्लुक भेलइ। हल्लुक होइत मुहसँ फुटलै-

“हँ-हँ चेनसँ सुतब किने। अनेरे नान्हिटा गपमे भरि दिन मड़ियाइत रहलौं।”

बेलबाकेँ अपन खेत-पथार नहि, ने हरे-बरद आ ने दोसर समांगे जे एक समांगक कमाइसँ गुजर चलैत आ दोसर बँटाइ खेत करैत, सेहो ने रहइ। मुदा भगवान जँ खाइले आ बजैले मुँह चीरलखिन तँ कमाइक चालि चलैले हाथो-पएर देलखिन। किछु हौउ, ई पैरुख तँ बेलबामे छइहे जे अपन बाँहुबलसँ गामक मुसहैनपर अधिकार बनेने अछि। ऐ भीर दोसराकेँ तँ नहियेँ आबए देने अछि। आबियो केना सकै छै, हल्लुक माटि ने बिलाइ तकैए, भारी-भीरमे किए जाएत। समुद्र मथन केलाक पछाइत

यएह ने बँटवारा भेल जे माटिक ऊपरका अनका दिस बँटा गेल आ नुका कऽ तरमे रखलाहा बेलबाक हिस्सा भेल।

दोसर साँझ। दिन भरिक टालाक काज उसाइर, पोखैर-झाँखैर दिससँ आबि चीलमक चौखरीमे बेलबा बैसल। घुसकीपट्टीवाली तइसँ पहिने चौखरीकेँ बहारि, चटकुनी बीछा, एकटा गोइठाँ सुनगा कऽ रखि देने छेली। बेलबाकेँ बैसते तेतरा, झिंगुरा, लेलहा सेहो पहुँचल। चारू गोरेक बीच अजीव प्रेम। जेना प्रेमास्पद होइत तहिना एक दोसर-ले जान अरपनिहार। ओना चारूक जिनगीमे दूरियो आ लगिचो परिवार बनौनहि छइ। अपन-अपन किछु चालियो-परकीत तँ छइहे। तेतराक पहिलुक घरवालीकेँ जहिया बम्बैया छौड़ा उड़हाड़ि कऽ लऽ गेलै तहिए-सँ जेना दुनियासँ विरक्ति भऽ गेलइ। मनमे सदिकाल होइ जे बिनु इज्जतक जिनगी ओहने होइए जेहेन बिनु गमकक फूल। ओना निर्णए करैमे तेतरा औगताएल जरूर। ओ ई नइ बुझि पेलक जे पतियो-पत्नीक बीच बेकतीगत चालि होइ छइ। जे इज्जतक खाम्हीक काज करै छइ। बुझबो केना करैत। अर्द्धांगिनी बुझि सभ किछु अदहा-अदही बुझैत। ओना, जइ दिन स्त्री घरसँ पड़ेलै तइ दिन तेतराकेँ ओते दुख नै भेलै, मुदा मनमे सोग तँ आइयो समाएले छइ। खाएर.., तैयो जिनगीमे हारि नहियेँ मानलक। हारियो केना मानैत एकटा गेलै, दोसर आनि तीनटा बेटा-बेटीक संग परिवार तँ बनौनहि अछि।

चारू गोरे एकठाम होइते जेना ऑफिसमे टेबुल-टेबुलक काज अलग-अलग अंगक होइत तहिना चारू गोरे अपन-अपन काजमे जुटि गेल। झिंगुरा गाँजा, चीलम निकालि आगूमे रखलक। आमदनी परहक टीपगर जहिना गाँजा तहिना समस्तीपुरक बड़की तमाकुल। ओना बेसीकाल चारू गोरे भाँगे पीबैत अछि। बाड़ी-झाड़ीमे फूलक समय भांगक फूलो झाड़ि लइए आ वसन्ती गाछ बीछि-बीछि सुखा-सुखा कऽ रखियो लइए, मुदा परसुका मुसहैन चारूक सुरखीए बदैल देलक, तँए

जेहने टीपगर तमाकुल तेहने गाँजा। ओना चारू गोरेक परिवार एकरंगाहे छै, कनियेँ तल-बितल छइ। झिंगुराक दोसर आमदनी छइ जे दोसर-तेसरकेँ नै छइ। ओ छिऐ गछचढ़नी घरवाली जे गाछपर चढ़ि जारैन तोड़ै छै। ओना, लग्गियो रखने अछि मुदा केहनो-केहनो घोरनाह गाछपर चढ़ि कऽ फुदनी जारैन तोड़ि लइए। तइले कोनो रोको-राक नहियेँ छइ। सूखल जारैनक रोको किए हएत। गछचढ़नीए दुआरे सरही आमक गाछीक ओगरवाहि सेहो लोक दइते छइ...।

आगूमे गाँजा अबिते लेलहा लटबए लगल। बेलबा कटकीसँ चीलम साफ करए लगल। तेतरा गोइठाकेँ तोड़ि घुर जकाँ लगा गूल बनबए लगल। चीलम साफ कऽ बेलबा गिट्टी खोखरलक। गाँजा लटा, तमाकुल मिला चीलममे बोझि लेलहा तेतरा दिस बढ़ौलक। गूल चढ़ा तेतरा बेलबा दिस बढ़ौलक।

चारू गोरेमे बेलबा सभसँ जेठ। बेलबामे सभसँ प्रमुख गुण छै जे केकरो बनहौटा जन नइ छी। ने नीक-बेजामे आ ने पाबैन-तिहारमे केकरोसँ एको सेर आकि एको पाइ कर्ज लइए। कियो 'भैया' तँ कियो 'गुरूकाका' सेहो कहै छइ।

आगूमे चीलम रखि बेलबा भोग लगबैत फुस-फुसा कऽ मंत्र पढ़ए लगल, 'जेकर जे हक-हिस्सा छह से अपन-अपन लऽ जा।' तीन बेर पढ़ि दम मारि, तेतरा दिस बढ़ौलक। मुदा धुँआ मुहेँमे रखि शरबत जकाँ घोरए लगल।

दम मारि तेतरा जखन झिंगुरा दिस चीलम बढ़ौलक तखन बेलबा मुँहक धुँआ निकालि बाजल- "परसुका सगुन बढ़ियाँ रहल!"

बेलबाक सगुन सुनि लेलहा खिसिया कऽ बाजल- "सगुन-तगुन किछु ने होइ छइ।"

लेलहाक तामस बेलबा बुझि गेल जे भुखाएल बिलाइ खौंझाइते छइ। जखन ओहो दम मारत तखन ने मन असथिर हेतइ। ताबे लेलहा-

हाथ चीलम पहुँच गेल। जिराएल लेलहा रहबे करए, तेते जोरसँ दम मारलक जे एक बित धधड़ा चीलमसँ धधैक गेलइ। दम मारि जहिना हाथसँ चीलमक धधड़ा मिझेलक तहिना अपनो मनक धधड़ा मिझा गेलइ।

..मुदा तेतरा लेलहाक बातकेँ पकैड़ लेलक। दोहरौनी भाँज जाबे चीलमक शुरू होइ तैबीचमे सवाल फँसि गेल। अपनेमे दू पाटी बनि गेल। दू गोरे कहै जे सगुन-तगुन किछु ने होइ छै आ दू गोरे कहै जे होइ छइ। तेहाला कियो नहि, जेकरा दुनू पंच मानि फरिछबैत। रूकल चीलमकेँ धुँआइत देखि लेलहा बाजल-

“झगड़ा ने दन चुन-तमाकुल किए बन्न हौ, गप्पो चलतै आ चीलमो चलए दहक।”

जहिना एकघोंट चाह पीला पछाइत आकि एक कौर खेला पछाइत दोसर अपने अबै लगैत तहिना लुबलुबाइत लेलहा बाजल-

“सगुन-तगुन किछु ने होइ छइ।”

दोहरा कऽ बेलबा दम मारि चीलम आगू बढ़बैत बाजल-

“सगुन बड़ पैघ गुण छिऐ, तँए एकरा दोखी बनाएब उचित नइ हएत?”

बेलबा आ तेतराक विचार एक बटिया रहै तँए एक दिस भऽ गेल आ झिंगुरा, लेलहाक एक बटिया रहै तँए दोसर दिस भऽ गेल। दू-दू गोरेक पाटी चारू गोरेक बीच बनि गेल। बेलबाक विचारकेँ रोकैत झिंगुरा बाजल-

“सगुनकेँ दोखी कहाँ कहै छिऐ, जँ गुण सगुन भऽ जाए तखन तँ जरुर नीक भेल, मुदा जँ कोनो काजे केतौ विदा होइ आ माछ-दहीसँ सगुन बनाबी एकरा हम नीक नै कहबै?”

बेलबाक प्रश्नकेँ ठमकैत देखि सोंगर लगबैत तेतरा बाजल- “दुनियाँ

बड़ीटा छै, रंग-बिरंगक खेल चलै छै तँए अनका छोड़ह, अपने बात लएह। परसू जे छ-छ पसेरी मुसहैन भेलह तेकरा की कहबहक?"

तेतराक बातकें लेलहा लपैक कऽ पकड़ैत बाजल-

"जँ माछे-दहीसँ सगुन बनिते तँ मछिबारे आ माले-जाल बलाकें सभ किछु भऽ गेल रहितै, दिन-राति ओकरे देखैत-सुनैत रहैए... ।"

तैबीच पहिल चीलमक गाँजा जरि गेल। गुलाब तकथीपर लटाएल-काटल गाँजा रहबे करै, झिंगुरा चीलममे बोझि आगि चढ़ा बेलबा दिस बढ़ौलक। ओना, तइले अपना बीच कोनो मलिनता केकरोमे नै रहइ। करणो रहै जे एक्के-एक्के दम ने कियो लगबैए। बरबैरक हिस्सा ने भेल। बड़ बेसी हएत तँ कियो दमगर अछि तँ कनी बेसी जोरसँ दम खींच लेत, तइसँ बेसी की करत..!

मुदा तैसंग ईहो तँ रहबे करै जे पेटगरोकें बेसी खेनो पेटे भरै छै आ कम खेनहारकें सेहो पेट भरिते छइ। धुँआ फेकैत बेलबा बाजल-

"परसू जे अपना सभकें ओते मुसहैन भेल ओकरा नीक सगुन नै कहबै तँ की कहबै?"

जेना लेलहाकें प्रश्नक उत्तर बुझले रहै, तहिना बाजल-

"तूँ सभ भलें जे कहक मुदा हमर मन नै मानैए। तीन सालक बाढ़िमे धान तँ उपैज गेल मुदा मुसहैन किए निपत्ता भऽ गेल। जे चीजे निपत्ता अछि ओ सगुन केना भऽ पौत?"

लेलहाक बातमे चोंगरा भरैत झिंगुरा बाजल-

"दिल्ली गेल छहक, रेलबे टीशनमे जे मूस देखबहक तँ बिसवासे ने हेतह जे मूस छी आकि बिलाइ।

मुदा गाममे तँए देखिते छहक रौदी होइ छै तैयो मूसकें पड़ाइन लगि जाइ छै आ बाढ़िमे तँ सहजे, जँ नै भागत तँ डुबकुनियाँ काटि-काटि मरबे करत। ई तँ गुण भेल जे सुभितगर समय भेल तँए धानो उपजल आ

मूसक बाढ़ि एने मुसहैनो भेल।”

तेसर चीलम चलैत-चलैत चारू गोरेक मन भरि गेल। कौल्हुका विचार करए लगल। तेतरा बाजल-

“काल्हि दू ठाम काज अछि। एकठाम तीनगोरेक आ दोसरठाम दू गोरेक।”

तेतराक बात सूनि झिंगुरा बाजल-

“तीन गोरे तँ जोड़ियाएल छी मुदा पाँचम नै रहने दोसर केना हएत?”

बेलबा बाजल- “किए ने हएत? दुनू काजकेँ मिलानी करि कऽ देखहक। टुकड़ी बनै-जोकर जँ हेतै ओकरा टुकड़ी बना लेब आ जँ नै बनैबला हेतै ओकरा पूरा कऽ करब।”

बेलबाक बात सुनिते लेलहाक मन मानि गेलइ। बाजल-

“बेस तँ भैया कहलहक। दुइए-टा ने भऽ सकै छै, या तँ पाँचम केनिहारकेँ भाँजह या तँ काजेकेँ टुकड़ी कऽ दहक।”

तेतराक मन सीकपर टाँगल, तँए खोलि कऽ तँ नहि बजैत मुदा मुड़ी डोला-डोला हुँहकारी भरैत रहए। सीकपर टाँगल ई रहै जे परसू जे मुसहैन खुनलक तइसँ नमहर दोसर रहइ। ओना, ईहो मनमे उठै जे ऊपरका काज ने हूसि सकै छै, तरका काजपर तँ एकाधिकार ऐछे, ओइमे दोसर कइये की सकैए। मुदा तँए की, काज करए जाएब तइसँ दोबर-तेबर बेसी ओइमे हएत, तेकरा पहिने करब आकि जइमे कम हएत, तेकरा करब...।

गाममे खेती छोड़ि दोसर काज नहि। जे छोट-छोट टुकड़ीमे विभाजित रहैए। छोट-छोट काज रहने कम केनिहारक जरूरत पड़ै छै, तँए बोनिहार-मजदूरक बीच संगठन नहि। मुदा शहर-बजारक बीच तँ से नहि अछि। पैघ-पैघ कारखाना रहने बेसी मजदूरक जरूरत पड़ै छइ।

तहूमे खेती-बाड़ीक काज दिने भरिक होइ छै जखन कि कारखाना चौबीसो घन्टा बारहो मास चलैत रहैए। तैसंग ईहो होइ छै जे कारखाना घरमे बनल रहैए जइसँ हवा-बिहाड़िक संग झाँटो-पानिमे चलिते रहैए मुदा से खेतीमे तँ नहि होइए।

..ओना शहरो-बजारमे कारखाना सभ रंगक भेने मजदूरक कमी-बेसी होइ छै। मुदा जेना-जेना बजार बढ़ैत जाइए तेना-तेना कारखानोक रूप बढ़ल जाइ छै, जइसँ खुदरा मजदूर थौकक रूपमे थकियाइत जाइए। जेकर विपरीत गतिए किसानी अछि। जेना-जेना समय आगू बढ़ैए तेना-तेना परिवारो बढ़ै छै आ परिवार बढ़ने खेतो विभाजित होइत जाइ छइ। खेत विभाजित भेने काजक रूप सेहो छोट होइत जाइ छइ। दोसर ईहो होइ छै जे जेकरा बेसी खेत रहल ओ मशीनक सहेतासँ काज लइए जइसँ मजदूरक संख्यामे कमी अबै छइ। तँए जहिना शहर-बजारक श्रमिक संगठित होइत जाइए तहिना गामक मजदूर अंसगठित होइत जाइए। तैसंग दोसर ईहो छै जे गाम-घरक अधिकतर बोनिहार बन्हुआ बनल अछि, जखन कि शहर-बजारमे से नै छइ। ओना शहरो-बजारक रूप बदैल रहल अछि, लोकक (श्रमिकक) काज लोहाक मशीन हथियौने जा रहल छै जइसँ हजारक-हजार हाथ निकम्मा भेल जा रहल छइ। जहिना सभ गामक काज तहिना अँहू गामक काज रहने, ने काजमे एकरूपता आ ने श्रमिकक बीच एकरूपता रहल। रहबो केना करत, कियो पजेबाक घर बनबैए तँए ओकरा सीमेंट, बाउल, लोहा आ राज मिस्त्रीक जरूरत पड़ै छै। आ कियो फूसिक घर बनाबैए तँए ओकरा लकड़ी, बाँस आ खढ़क जरूरत संगे घरहटियाक जरूरत पड़ै छइ। जइसँ जहिना काजक एकरूपता नै रहै छै तहिना हाथ आ हाथक ओजारोक एकरूपता नै रहै छइ। मुदा छोटो-छोटो काज रहने किछु-ने-किछु एकरूपता तँ रहिते छइ। तीन गोरेक काज खढ़ अँटियेनाइ रहै आ दू गोरेक मटिकटियाक। दुनू काजकेँ टुकड़ी बनौल जा सकै छइ। खढ़ अँटियेला पछाइत चारि

दिन खढ़ सोझ होइले जँकियाएल जाइ छै, तहिना खाधि भरैक सेहो अछि। मुदा एकरंग बोइन रहितो हल्लुक-भारी तँ अछिए। एकटा जहिना बैसारी-काज अछि तहिना दोसर ठढ़का काज अछि। तहूमे माटिक फेकब भारी भेल, जखन कि खढ़ अँटियाएब मात्र खढ़कें सेरिया कऽ छोट-छोट आँटी बनाएब अछि। कौल्हुका काज सुनि बेलबा बाजल-

"दुनूठाम एक्के काज अछि आकि दू रंगक?

तेतराकें दुनू काज बुझले रहै, बाजल- "काज तँ दू रंगक ऐछे एकठाम खाधि भरैक छै आ दोसरठाम खढ़ अँटियबैक अछि।"

बीच-बचाउ करैत झिंगुरा बाजल- "अपना सबहक बीच बेलबा भैया बुढ़े भेल, आ हमरा देखनहि रहह जे सातमे दिन बोखारक पथ पड़ल, अखनो तक नीक जकाँ देहमे तागत नहियेँ आएल हेन, परसुए मुसहैन खुनैकाल देखलहक ने जे केते बेर बैसलौं। तँए हम दुनू गोरे खढ़ अँटियाबए जाएब आ तूँ दुनू गोरे खाधि भरए चलि जैहह। जुआन-जवान छहे।"

उठैत-उठैत लेलहा बाजल- "भैया, एहेन प्रेम रहतह तँए सभ दिन आनन्दे-आनन्द रहतह। नै तँए देखिते छहक..!"

'देखिते' कहैत लेलहा चुप भऽ गेल। बात खुजबे ने कएल। मुदा चीलमक भरल मन छोड़ियो तँ नहियेँ सकैए। झिंगुरा पुछलक- "की कहलहक?"

लेलहा- "यएह ने कहिलयह जे दुनियाँमे केना उनटा-पुनटा होइ छै, जे महिला शरीरसँ पुरुखक अपेछा निरबल होइए ओकरा कारखानाक इंजन आ पुलिसक लाठी हाथमे थम्हा दइ छै आ जे पुरुख सबल होइए ओकरा हाथमे कागत-कलम थम्हा दइ छइ। एहने रीतकें ने वसन्त रीत कहै छइ!"

तेतराक आँखिपर निशाँ लटैक गेल, बातक चिड़ौड़ी देखि बाजल-

“अनेरे समुद्र उपछैक कोन चिड़ौड़ीमे लागल छह, ठनका जेकरा माथपर खसै छै से बुझै छै ठनकाक गुण। चलह, अनेरे मनमे खुट-खुटी रखने छह। कौल्हुका काज काल्हि देखल जेतइ। चेनसँ खाएब, भगवानक नाओं लऽ निचेनसँ सुतनाइ छोड़ि अनेरे कौल्हुका चिन्तामे किए माथ धूनब?”

बेलबा-

“दुनू काज सेरिया लएह, तखन ओहू मुसहैनकेँ खुनिए लेब।”

बेलबाक बात सुनि तेतरा बाजल- “भैया, भने खेतमे पड़ल छइ। परसुके धान तँ घरे-अँगने छिड़ियाएल अछि ओकरा सदहऽ दहक तखन खुनब।”

तीनू गोरेकेँ जाइते घुसकीपट्टीवाली बेलबा लग आबि बजली-

“संगतिया सबहक भाँजमे पड़ि अहूँ दुइर भेल जाइ छी! कहू जे केते खान पहिने ठकुरवारीमे घड़ी-घन्टा बजलै, असतुत भेलै आ अहाँले धैनसन!”

पत्नीक खौंझसँ बेलबा मिसियो भरि डोलल-डालल नहि। किएक तँ पत्नीक खौंझक कारण बिनु बुझने डोलि-डालि जाएब नीक नहि।

बाजल- “ठकुरवारी ठाकुर सबहक छिऐ आकि हमर छी जे ओकर देखौंस करब। हमर तँ यएह संगतिया सभ ने छी जेकरा संगे जीबै-मरै छी।”

निरुत्तर भेल घुसकीपट्टीवाली पाछू नै हटली, पाशा बदैल लेली। जहिना शिवजी पाशा बदैल शिवानी भऽ गेला, तहिना। पाशा बदलैत बजली- “अन्न तीमनक सुआद टटकेमे होइ छै आकि सेरा कऽ पानि भऽ जाइए तखन होइ छइ!”

बेलबोक मन हल्लुक रहबे करै, तँए अवसरकेँ हाथसँ गमाएब नीक नइ बुझलक। किएक तँ अवसर गमौनाइ ओहने होइ छै जेहने डारिक

चुकल बानरक होइ छइ। बाजल-

"लोक सुआद-ले खाइ छै आकि पेट भरैले खाइ छइ। सरेने जँ ओकर गुणो निकैल जाए तखन ने।"

पतिक बात सुनि घुसकीपट्टीवालीक मनमे उठलैन- एना जँ बात छिड़ियाएत तखन तँ काजक गप बिसरिये जाएब। एक तँ ओहिना ओहन बिसराह छी जे आन तँ कनी मनो रहैए जे काजे बिसैर जाइ छी! काजे नहि तँ राज की? ..हृदए खुशीसँ भरल तँए घुसकीपट्टीवाली सोचलैन जे जे बात पति बजता तेकरा जँ मुँह-नाँगैर जोड़ब तखन ने, जँ से नै जोड़ि सोझहे अपने मनमे दोसर काज आबि गेल तखनो तँ गड़बड़ाइए जाएत। घरो घर जकाँ रहए तखन ने, से तँ सतरहटा भुरकी हरिदम रहिते अछि।

..हाथमे पानिक लोटा बढ़बैत घुसकीपट्टीवाली बजली- "लिअ, अखने कलपर सँ अनलौं कुर्रा कऽ लिअ।"

आन दिनसँ बदलल बात सुनि बेलबाक मन खुट-खुटाएल। आन दिन कहाँ पानिक बात बजै छेली, आइ किए बजली? जरूर किछु रहस्य अछि! मुदा इशारोमे जँ रहस्यकेँ नै रखल जाएत, तखन तँ ओ तेना तरेमे दबा जाएत जेना कोनो सीखे-लीखे ने रहत...। बेलबाक आँखि तँ पत्निक आँखिपर रहै मुदा नजैर नजैर दिस बढ़ौलक। कुर्रा कऽ ओसारपर पतिकेँ बैसते घुसकीपट्टीवाली घरसँ थारी निकालि आगूमे देलकैन। घरदेखिया थारी जकाँ साँठल थारी देखि बेलबाक मनमे उठलै जे बिनु कारणे टिटही थोड़े लगै छै, जरूर किछु बात अछि! लगले मन हुमरलै हम कि कोनो घटिया घरदेखिया थोड़े छी जे खेनाइयए-पीनाइमे केकरो गरदैन काटि लेबइ। भातक ऊपरमे पाँचो कचौड़ी तेना पसारल जे आगूमे सानैयोक जगह नहि। भात सानब छोड़ि बेलबा पहिल कचौड़ी उठा हिया-हिया देखए लगल। ई तँ पुड़ी जकाँ लगैए मुदा छी तँ कचौड़ीए! कचड़ी नै छी आ ने पकौड़ी छी, छी तँ सोलहन्नी कचौड़ीए। किएक तँ ओहिना खेसारीक सौंसका दालि, मिरचाइक टुकड़ी आ पिऔजक टुकड़ी टक-

टक तकैए। नून-तेल ने तरे-ऊपरे सटि गेल छै, बाँकी तँ तकिते अछि।

कचौड़ीकेँ निहारि-निहारि देखैत पतिकेँ देखि घुसकीपट्टीवालीक छाती चहकए लगलैन। बजली-

"ई तँ ओही भगवानकेँ धैनवाद दिऐन जे बेटाक पुसौठ हएत, नइ तँ जहिना तीन साल नै केलौं, हाथ-पएर फाटए लगलै तहिना अहूबेर फटितै।"

तीन साल पूर्वक पुसौठ बेलबा बिसैर गेल छल। बिसैरो केना ने जाएत। एक तँ ओहिना गजेरी-भगेंरी गाँजा-भांगक प्रेममे दुनियाँ बिसरैले तैयार रहैए, तैपर बेलबा संगैतियो छीहे। संगैतियाक जिनगी तँ ओहन जिनगी होइ छै जइमे दस दिसक धार-नाशीक संग गंगा-जमुना सन धारक पानि मिलि समुद्र सिरजन करैए...। बेलबा बाजल-

"पुसौठ केकरा कहै छइ?"

लहकी देखि घुसकीपट्टीवाली अवसरकेँ हाथसँ नै छोड़ि, बजली-

"एहने मुनसा ने धिया-पुताक पाबैन बिसैर धियो-पुताकेँ बिसैर जाइए!"

तैबीच बेलबा पहिल कौर तँ छुच्छे दालि-भातक खेलक मुदा दोसर कौरमे जे मिरचाइक टुकड़ी मुँहमे पड़लै, तँए सुसुआइते बाजल-

"पाबैनमे की सभ होइ छइ?"

धनलक्ष्मी जकाँ घुसकीपट्टीवाली बजली- "किच्छो ने होइ छइ। जे होइ छै तइसँ तँ घर भरल अछि, किच्छो कथी ताकए पड़त।"

पत्नीक धारक प्रवाहमे बेलबा बाजल- "शुभ काजमे अनेरे देरी करब कोन कबिलती हएत, तइले पुछैक कोन जरूरी अछि। अच्छा ई कहूँ जे पाबैनमे की सब हएत?"

जहिना छोट बच्चाकेँ माए-बाप सिखबै छैथ तहिना बिकछा-

बिकछा घुसकीपट्टीवाली बाजए लगली-

"पाबैनमे किछु ने होइ छै आ सभ किछु होइ छइ।"

उड़ैत चिड़ैक बोल जकाँ बेलबा किछु थाहि नै पबै छल। तँए जहिना धार थाहैक नाहक लग्गा होइ छै तहिना थाहैत पुछलक-

"खेबा-पीबामे की सभ होइ छइ?"

"अगबे चाउरक चिक्कसक बगीया बनै छै, ओही लऽ कऽ बाल-बच्चाक हाथ-पएरक पुसौठ होइ छइ।"

"घीओ तेलक काज पड़ै छइ?"

"घी-तेल किए कहै छिऐ, नूनो-मिरचाइक काज नै पड़ै छइ।

"चिक्कसक मुँह-नाँगैर बना, छतिया-पीठिया बनौल जाइ छै, टटका पानिमे नहा कऽ चुल्हिपर सिद्ध कएल जाइ छइ। सिद्ध होइते भऽ गेल बगिया।"

"एक्के रंगक होइ छै आकि दोसरो-तेसरो रंगक?"

"एकटा सुच्चा भेल, दोसर कुरथियो दालि दऽ कऽ आ तेसर गुरो दऽ कऽ बनौल जाइ छइ।"

"तब तँ नामो सबहक हेतइ।"

"होइते छै, जहिना आमक गाछ भेल आ दालि-दलिहन भेल ई जड़ि भेल। जड़िक पछाइत अमुख आम आकि अमुख दालि बनैए। तहिना बगिया जड़ि भेल। दलिबगिया, गुड़-बगिया किसिम भेल।"

"एक दिन तँ एक्के रंगक ने खाएब, दोसर-तेसर?"

"एना अनाड़ी जकाँ किए बजै छी। पहिल दिन टटका खाएब, दोसर दिन बसिया खाएब, तेसर दिन दलिबगिया खाएब, चारिम दिन गुड़-बगिया खाएब।"

"गुड़ दालिए जकाँ केना रहत?"

“खेबै तरखन देखबै, जे केहेन रसगर छइ। एते पघिलल रहत जे छातीमे चुहुटि कऽ पकैड़ लेत।”

“जखन चारि दिनक ओरियान एक्के दिन केने भऽ जाएत तखन अहाँकेँ चारि दिनक छुट्टी दऽ दइ छी। तैबीच कुशेसर आकि सिंहेसर आकि जनकपुरसँ घुमि आउ।”



शब्द संख्या: 2742

केलबाड़ी

पूर्णिमाक हिसाबे अदहा कातिक टपि गेल मुदा सकराँइतिक हिसाबे पचीस दिन पछुआएल अछि। रातिए दिवाली भेल, आइ परीवक परखेबो आ धनमनतरि सेहो छी। काल्हि भरदुतियो आ चित्रगुप्तो पूजा छी।

साठि बर्ख पार केलाक पछाइत जीवन काका नव जिनगी पाबि केलवारी पहुँचला। पानि भेटने चरिकट्ठबा चौमासकेँ आब वाड़ी-फुलवारी-केलवारी बनि हँसैत देखि बीच केलवारीमे बैस, वृन्दावन जकाँ करवनो नजैर उठा कोनो घौरपर दैथ तँ करवनो पूर्बाक लहकीमे लट-पट-सट-पट करैत भालैर सभकेँ सेहो देखैथ। लहकीमे लहैक जीवन काका अपन संगी-केलवारीसँ परिचए-पात करए लगला। बाबाक लगौल आमक गाछीकेँ आधा-अधी उपटा जीवन काका केलवारीमे जिनगी देखि रहल छैथ। आमक गाछीमे बबो अहिना ने देखैत छल हेता, यएह धड़-धरती ने कुलो-खनदान, उपजो-बाड़ी आ खेनाइयो-पीनाइकेँ अपना पेटमे समेट कऽ रखने अछि।

जीवन कक्काक मनमे फेर उठलैन- मुदा बाबाक बराबरी कहाँ कऽ पाबि रहल छी? पैछला सर्वेमे जेते हुनका खेत छेलैन तेते तँ हमरो अछिए। मुदा सबहक अपन समय होइ छै, तहीक कर्तो-धर्ता ने अपनो छी। हुनका अमलदारीमे गाममे एकटा वैद्य छला। वैद्य की छला अखुनका करखन्ना जकाँ छला। अपने हाथे मंडूल बनबै छला, जे पाण्डु

रोगक रामवाण इलाज छेलइ। सीतामढ़ीसँ पूर्णिया आ नेपालक झँपा जिलासँ लऽ कऽ वीरगंज होइत गंगाक उत्तरी छोर धरिक बजार छेलैन। रोगीक आवाजाही भरि दिन लगले रहैत छेलैन। जहिना इलाकाक लोक वैद्यजी कैं जनैन तहिना रहैक जगह बाबाकेँ सेहो जनैत रहैन। अनका अपेक्षा स्थिति बहुत नीक नै रहनौं, दरबज्जाकेँ दरबज्जा बना रखने छला। अनठिया-बहरबैया-ले कोनो रोक-राक नहि, मुदा तँए कि गामो ओहने छल? नहि! जातीय रंग-रूप नीक जकाँ गछाड़ने रहइ।

बाबासँ आगू बढ़ि अपनापर नजैर पड़िते जीवन काका चौंकला, की अपने जकाँ पोतोक मनमे रहि सकब? नहि! अहिना ऊहो साले-साल बरखी आ पितृपक्षमे मोन पाड़त? नहि! मुदा एना भेल किए? अपना अछैत जुआन बेटा काज करै-जोगर भेल, बाहर कमाए कहलिऐ। परिवारमे अन-पानिसँ लऽ कऽ रुपैआ-पैसा धरिक काज पड़िते अछि। किसानी जिनगीमे नगदी खेती नै भेने पाइक समस्या छइहे। पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, दबाइ-दारू, लत्ता-कपड़ा सभ तँ कीनैये पड़ैए।

अखन धरि जीवन काका अपनाकेँ अपन सीमानक भीतर बुझै छला तँए मनमे कोनो लहैर नै उठलैन। उठबो केना करितैन? जाबे समुद्र आकि मरुभूमिमे जुआरि नै उठत ताबे केना लहैर-लहैर लहराइत वायुमण्डल दिस बढ़त। ओना खुशीलाल आज्ञाकारी बेटा छैन। तैबीच वैचारिक मनभेद केना बनल से बुझिते जीवन कक्काक मन बगैद गेलैन। जहिना पोसो हाथी बगैद जाइत तहिना।

भेल ई जे खुशीलालकेँ एते छूट तँ दाइए देने छेलखिन जे नीक काज बिना केकरो पुछनौं करब अधला नहि। आज्ञाकारी बेटा केतौ सीमाक उल्लंघन नै केलैन, मुदा सीमाक उल्लंघन तँ भइये गेल। नव पद्धतिक पढ़ाइ एकभग्गू भऽ गेल अछि, जखन कि जीवन काका समग्रतामे बिसवास करै छैथ। मुदा जीवन काकाकेँ अपनो मन उग-डुम तँ करिते छैन जे बेटा ई बात अखन धरि किए ने बुझि पौलक जे भँसि

गेल! माए-बाप जीबिते दिशा ने बेटा-बेटीकेँ सिखौत-पढ़ौत आकि जिनगी भरि संगे-संग रहि बेर-बेर सिखबैत रहत। जँ से हेतै तँ जिनगियो आ कालखण्डोक बँटवारा केना हेतइ। की आब किछु कहब उचित हएत? उचित तँ ओही दिन तक होइत जइ दिन काज करैले डेग उठबए लगल। मुदा आब..?

गंभीर प्रश्न जीवन कक्काक आगूमे गंभीर परिस्थिति पैदा कऽ देलकैन। जँ बताह जकाँ बड़बड़ा बेटोकेँ कहबै आ पुतोहुओकेँ कहबैन आकि टोकारा पाबि खिसिया कऽ गाम दिस टहैल समाजोकेँ कहबैन, से उचित हएत? काजक तँ फले काजक पूर्णता छी। ऐठाम तँ ओहूसँ बेसी परिस्थिति चहैक गेल अछि! तेहेन पढ़ाइ-लिखाइ भऽ गेल अछि जे अखन ने मोटगर पाइ देखै छै, मुदा रिटायर करिते अदहा भऽ जाएत, आ बेटा-बेटीक जिनगी तेते भारी भऽ जेतै, जे सम्हारि नै पौत। एहेन परिस्थितिमे कियो माए-बापकेँ आकि बेटा-बेटीकेँ देखत? उगैत सुरुजक दर्शन ने शुभ होइ छै आकि डुमैत सुरूजक! तखन? जेकरा मूस जकाँ बिल खुनैक लूरि नै छै तेकरा-ले दुनियाँ जे हौउ, मुदा जेकरा खुनैक लूरि हेतै ओ सीमा किए टपत? बाढ़ि औतै ऊँचकापर चलि जाएत आ रौदी हेतै तँ नीचका दिस बढ़ि जाएत...।

यएह सोचि जीवन काका चारू कट्ठा खेतकेँ–जे आमक गाछी छल–जेकरा तोड़ि केलवाड़ियो आ तीमनो-तरकारीक चौमास खेत बना लेलैन। खेतोक लीला की कृष्ण लीलासँ कम अछि, रौदी भेने जीरो आ सुभ्यस्त समय भेने हीरो। केतौ तीनियोँ बीघा बीघासँ कम गोबरबैए तँ केतौ बीघा पाँच बर गोबरबैए...।

यएह सभ सोचि जीवन काका चारू कट्ठाक बीच एकटा कल गड़ा लेलैन आ चारूकात निम्मन हाता कटा, माटि ढहै दुआरे साबे आ आड़िपर अनरनेबा, नेबो, दारीम, सरीफा इत्यादि छोटका पौधबला फलक गाछ रोपि देलखिन। डेगसँ नापि एक-एक लग्गीक दूरीमे केरा गाछ सेहो

रोपलैन। जे चालीस बीट भेलैन। जेठुआ रोप भेने कातिकमे दू-दूटा पौंच गाछ देलक। जे मघारि अबिते फूटि गेल। कुहैर-कहारि कऽ घौर भेल। खाएर जे भेल, भेल तँ। वएह बीट तेसर सालमे पहुँच गेल। साठिटा घौर पनरहसँ पचीस हत्थाक भेलैन।

एक तँ ओहिना मन तुरुछाइत रहए जे आइए झंझारपुरक हाटो छिऐ आ परवेब पाबैनो छी। हाटो तेहेन जे सुति उठि आँखि मीड़िते विदा हौउ। केना चौरीसँ करमी लत्ती आनब, सोन्हौनक ओरियान करब। जखन दुनू काज लोके हाथक छी तँ आगूओ पाछू कएल जा सकैए। खाएर.., गर अँटबैत झंझारपुर हाट गेलौं। केरोक सूर-पता लगबैक छल आ पाबैनोक वस्तु-जात कीनैक रहए। हाटपर पहुँचलो ने रही कि आढ़ैतबला भेट गेल। पुछलिऐ-

"कारोबारक की हाल-चाल अछि?"

मनमे एक्को मिसिया नै रहए जे अधला नजैरसँ पुछि रहल छिऐ। तीन माससँ झंझारपुर गेलो नै छेलौं। हाल-चाल सुनिते आढ़ैतबला गुम्हैर कऽ बाजल-

"सभ बुड़ि गेला गंगा नहाइले आ ई रहि गेला गामेमे!"

परिचित लोकक मुहेँ कठाइन बात सुनि अवाक् भऽ गेलौं। आगू बढ़िते भाँज लगल जे हाजीपुरसँ लऽ कऽ भागलपुर धरिक जेतेक केलवारी अछि सभ केरा दहा गेल! जे केरा खुदरा-खुदरी गाम धरि पकैड़ नेने छल...। मनमे उठल- की गाममे केरा सन फल जेकर खेतियो असान अछि, तेकर कीनिनिहार किसान बनि गेल छैथ! झंझारपुरसँ विदा होइते मनमे उठल जे एकटा केरा-घौर छौड़ाक कबुला छै, जँ से नै भेल तँ छौड़ाक माए घरोमे रहए देती..?

मन ठमकल, एहेन कबुले की जे सौंसे घौर कबुला कऽ लेलैन। जे कीनि कऽ खाइए ओ दर्जनक हिसाबसँ कीनत आकि घौरे कीनि लेत?

आइसँ पाँचे दिन छठिक रहल, तहूमे तीन दिन पहिनेसँ शुरूहे भऽ जाइए। जखन ओ चीजे ने हाट-बजारमे छै तखन एहेन की हमहींटा छी आकि अपन अड़ोसियो-पड़ोसियोक गति सएह हेतैन। पत्नी बड़ खिसिएती तँ पाइ आगूमे फेक देबैन। पाइ देखि जखन दोसर-तेसरसँ भाँज लगतैन, तखन अनेरे ने उचिती-विनती कऽ छठिक विसर्जन करती। दलदलसँ सक्कत माटिपर पएर पड़ल। मन थीर भेल। मुदा ई तँ अपना मनमे छल।

झंझारपुरसँ अबिते पत्नी झपैट कऽ बजली-

“जेकरा काज करैक छिछा रहै छै से ने काज करैए आ जे सदिकाल जेबीए टोबत, ओकरा बुते देवता-पित्तर राखल हेतइ।”

अपन हारल की बजितौं। तँए अपने चुप रही मुदा पत्नी बड़बड़ाइते रहली। अनधुन बिना कौमा-फुलस्टोपक बजैत-बजैत बजा गेलैन-

“गामेमे जीवन काका केराक वोन लगौने छैथ आ अहाँ झंझारपुर वौआइ-ले गेलौं!”

हारल मन घुमि तकलक। बजलौं- “एना किए छान-पगहा तोड़ने जाइ छी। अखन पाँच दिन पाबैनमे बाँकी छइ। तैबीच की कोनो ओछाइन धऽ लेब। आकि छुटल-बढ़ल जे काज अछि तेकरे जोड़ियाएब।”

मुदा मानि गेली। खेला-पीला पछाइत नीनो किए हएत बरदकेँ सोन्हौन पिऔनाइ, गरदामी देनाइ रहए, तैसंग धानो काटि कऽ नै अनने रही, ऊहो आनए पड़त। पान पत्नी पीसि देती मुदा लगा कऽ तँ अपने दिअ पड़त। जेते काल नीन घेराएल रहल तेते काल टटका गपो सभ गपकेँ ठेलने रहल। तँए कखनो मन हुअए जे एहेन कबुला केनिहारिकेँ चारि थापर लगा दिऐ। कहू जे एहेन हाड़-काठबला केँ कबुला-पाती केने धिया-पुता हएत।

बरदकेँ सोन्हौन-तेल पीअबैत गरदामी पहिरबैत, सींगमे तेल

लगबैत, मुँहमे पान खुआ, दूधाएल धान आगूमे दैत केराक भाँजमे जीवन काका ऐठाम विदा भेलौं।

दरबज्जा खाली देखि मनमे उठल- लोक या तँ राजधानीए-मे रहैए आकि वोनेमे। जखन दरबज्जा सून छैन तखन केदलीए वोनमे हेता। तहूमे एक तँ छठिक लहकी, दोसर तेहेन इलाकाक केरा वोन दहाएल जे अनेरे एकक तीन हेतैन...।

चारूकात चकोना होइत करजान पहुँचलौं। देखिते जेना मने हरा गेल। कहू जे एकटा घौर-ले एक दुपहरिया हरान भेनौं आ नइ भेल। मुदा ऐठाम एकर वोने देखै छी! पत्नीक मुहेँ तरपट्टियो सुनए पड़ल। मुदा परिवार तँ परिवार होइ छै, एहेन-एहेन बातक जँ मद्दी हएत तखन परिवार ठाढ़ रहत। भूतलग्गू घर जकाँ अनेरे ढनमना कऽ खसि पड़त।

केलवारीक हत्तापर ठाढ़ होइतै मनमे भेल जे बिना चीजबलाकेँ पुछने आगू डेग उठाएब उचित नहि। मुदा जीवन काकाकेँ देखबो तँ नहियेँ करै छिऐन। गर लागल। बजलौं-

“काका छी यौ, यौ काका?”

जहिना रातिमे ओछाइनपर पड़ल अनभुआर बोली सुनि अकानए लगैए मुदा उत्तर दोहरेला पछाइत तेहरेलोत्तर दइए, तहिना जीवनो काका बोली अकानए लगला। बुझलेहे जकाँ दोहरी आवाज दैत डेग आगू बढ़ेलौं एक तँ केराक वोन जे गाछो आवाज रोकैत आ पातो। तैसंग शर्बतक गिलास जकाँ आवाजोकेँ दुनू घोरिते हएत।

एक तँ निशाँएल जकाँ जीवन काका बैसल रहैथ। बहरबैया आवाजकेँ नीक जकाँ नै अकाइन सकला, सहरगंजे बजला-

“के छिअ, आबह।”

‘आबह’ सुनि मनमे हूबा भेल जे हाजिरी दर्ज भऽ गेल। जीवन काकाकेँ बिसैर गेलौं। बिच्चेमे केरा घौर विचारकेँ बोहिया देलक। साठि-

सत्तैरटा कटैबला केराक घौर देखलौं, एकर अलावे किछु तरकारीबला आ किछु फुल्लियो देखलौं। जइमे कोशा लगले रहइ। देखैत-देखैत दोसर कोन दिस पहुँचलौं आकि काका बोली देलैन-

"के छियह केमहर गेलह?"

बाढ़िक इलाकामे जहिना लोक पुक्की पाड़ि-पाड़ि जिनगीक उपस्थिति दर्ज करबै छैथ, तहिना हमहूँ बीटे-बीटे, दोगे-दोग देखैत पूबरिया-उत्तरबरिया कोण दिस बढ़ि गेलौं। बढ़ि की गेलौं, केरा अपन जिनगीक कथा देखबए-सुनबए लगल। किछु उत्तर नै देब उचित नइ बुझि बजलौं-

"काका, तेहेन वोन अहाँ लगा देने छिऐ जे वौआइ छी।"

"अच्छा बोली अकानैत चलि आबह।"

लगमे जाइते बुझि पड़ल जे जीवन काका जेना सोनाक घैल पौने होथि तहिना मन तिरपित छैन। तिरपितो केना ने हेता, घोंघीसँ मोती आ कोयलासँ हीरा होइते अछि तखन महि किए ने अकास उड़त। जे केहेन सोंगर लगौलासँ काज चलत। जँ से नै भेल तखन तँ अनेरे बनलो काज बिगैड़ जाएत।

मुस्कियाइत तीर फेकलौं-

"काका, बुढ़ाड़ियोमे जेना केंचुआ छोड़ने होइ तेहने चकचकी बुझि पड़ैए।"

हमर बात सुनि काका गुम भऽ गेला। औगता कऽ ओहन जकाँ नहि, जे कहबै सासुरक सुपारी खुआबह तँ कहत जे तीनटा सारि अपने अछि। केचुआ छुटिते ने नव-जीवन भेटै छइ। मुदा बातकेँ बदलैत जीवन काका बजला- "पहिने ई कहह जे औगताएल तँ ने छह? अखन तेहेन पाबैनक लदान पड़ि गेल अछि जे दमो माड़ैक छुट्टी नइए।"

काजो अपने रहए, काज तँ काजे छी। एकक पछाइते दोसर हएत,

तइले झंझारपुरक समय अछि आ ऐठाम नै अछि। बात बिहियबैत कहलयैन-

“काका, हम तँ छेहा बेरोजगार छी। अनेरे भरि दिन ढहनाएल घुमै छी।”

हाथक इशारा दैत बैसबैत बजला-

“बौआ, केचुआ छोड़ैक लूरि जेकरा रहै छै वएह ऐ धरतीक सुख बुझैए। अपना ऐठाम केराक खेती अदौसँ होइत आबि रहल अछि। जेहने गुणगर तेहने पेटभर। मुदा ऐठाम तँ पौष्टिक वस्तुक उत्पादन होइ वा नै होइ, मुदा जन-जनकेँ पोष्टिक अहार भेट रहल छइ। जइसँ स्वस्थ शरीरक निर्माण भऽ रहल छइ।”

साँस छोड़िते मोन पड़लैन जे किमहर आएल से तँ पुछबे ने केलौं। आ अनेरे सासुरसँ भागल स्त्रीगण जकाँ भटभटाइ छी। मुदा लगले मन सम्हरलैन। दुआरपर आएल अभ्यागतकेँ चट-दे पुछि देब जे केमहर एलौं, सेहो तँ नीक नहियेँ। भने चाससँ समार भऽ गेल। एक रस भेने ने अनुकूलता अबै छै, ओना जँ ओहन वस्तुक शर्बत बनाएब जेकरा छानए पड़ैत तखन अनेरे किए एक बेर पानि छानू दोसर बेर शर्बत। एक्के बेर किए ने छानि एक रस बना लेब। बजला-

“बौआ, केमहर एलह से पहिने बाजह। ई काज भेल, काजकेँ करखनो टारैक वा अँटकबैक काशिश नै करी। ई दीगर भेल जे कोन काज केहेन काज।”

जहिना तीन-कोनियाँ तीर आकि बंशीक नोंक अपने दिस बैसला जकाँ रहै छै जे प्रवेश काल तँ पैसि गेल मुदा निकलै काल खोखरनहि औत तहिना जीवन काकाकेँ मचकीपर चढ़ल देखि आस मारलौं। मुदा केकरोसँ किछु मंगैसँ पहिने केकरो दोख अबै छइ। मन घुड़िया गेल जे जँ अपन दोख लगा कहबैन तँ सोझहा-सोझही गप केना करब, आ जँ

पत्नीक दोख लगाएब ऊहो नीक नै हएत, किछु छैथ तँ अर्द्धांगिनी तँ वएह छैथ। नहि जँ समूहमे कबुलाक चर्च करब तँ मुहेँ छिऐन जँ कहीं बजा गेलैन जे एहने पुरुख छह जे कबुला-पाती केने धिया-पुता होइ छह।

असमनजसमे पड़ले रही कि बिच्चेमे काका बजला-

“समाजमे ने केकरोसँ लजाइ आ ने किछु छिपाबी। आन किए बुझै छह। एते केरा जे लगौने छी से अपने खाइले, पाकल घौर पाँच दिन अँटकै छइ। जँ चरि-चरि छीमी खाएब तँ बीस छीमी भेल। एहेन-एहेन हत्था सभ अछि जइमे पचीस-पचीस छीमी छइ। तोहीं कहह जे एको हत्था अपना बुते सठत।”

रसगुल्लाक रसक बोड़मे डुमल कक्काक बात सुनि जेना अपने हँसी फुटि गेल। कहलयैन-

“काका, छठि पाबैन छिऐ, एक घौर केरा लेब। आन साल तँ दू-तीन हत्थाक घौर लऽ कबुला पूरा लइ छेलौं, जइमे बारह-चौदहटा छीमी रहै छेलै, मुदा ऐठाम तँ ओहन घौरे ने देखै छिऐ?”

हम तँ अपना मने कहलयैन। ओ की बुझलैन से तँ वएह जानैथ। मुदा अपनोसँ नमहर हँसी हँसि बजला-

“जा जे घौर मन हुअ ओ काटि लएह।”

सुनि तँ लेलौं मुदा मनमे भेल जे कहीं काका भक्की तँ ने मारलैन! तखन तँ जेतेमे पाबैन हएत तेते केरेमे चलि जाएत। मुदा मोन पड़ल जे अपनासँ श्रेष्ट लग चुपे रहब नीक। जे कहता ओकरे सरि-सुर करैत अपना अनुकूल बनाएब नीक रहत। तँए चुप्पे रहलौं।

चुप देखि जीवन काका बजला-

“सुनह, टटका केरामे पानि निकलै छै जे देहो-हाथकेँ आ कपड़ो-लत्ताकेँ दगा दइ छइ। तँए पहिने केरे काटि लएह जे जाबे दूध सुखतै ताबे गपो उसरि जाएत।”

कक्काक बात सुनि भरोस भेल जे केरा तँ भइये गेल, दाम केना पुछबैन। जँ दाम लेबाक रहितैन तँ गनि नेने रहितैथ, से गनबे ने केलैन। गर भेटल, पुछलयैन- “छीमी-हत्था कहाँ गनलिऐ?”

जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजला-

“जँ एक साँसमे गामपर लऽ कऽ चलि जेबह तँ ओहिना भेलह। नहि तँ जेते पाबैनक फीरिस्तमे जे हुअ ओते दऽ दिहह।”

केराक घौर छोड़ि दुनू गोरे बैसलौं। नफगर काज देखि धैनवाद नै देबैन सेहो नीक नहि। बजलौं- “काका, अपने गामक टेक रखि लेलिऐ!”

‘टेक’ सुनि काका गुम भेला। की टेक? पाशा बदलैत बजला-

“बौआ, अपन धरती एकसँ एक अन्न, फल, फूल उपजबैक शक्ति अपना गर्भमे रखने अछि। तखन तँ जेहने दुहनिहार तेहने ने कामधेनु। चालिस बर्ख पूर्ब केरा-खेती केने छेलौं, मुदा खोप सहित कबुतरो चलि गेल छल, जेकरा घुमा कऽ लाबलौं।”

जिज्ञासा भेल। पुछलयैन-

“से की?”

विह्वल होइत काका बाजए लगला- “जहिना देखबहक जे जामुनक मासमे लोक जामुनक बीआ रोपैए, आमक मासमे आम रौपैए, अनारसक मासमे अनारस रौपैए तहिना अपना ऐठाम सरसठिक रौदीक पछाइत जे उथल-पुथल भेल तइमे केरोक खेती आएल। बाहरी किस्मक केरा, एक-मौसमी। जहपटार लोक अपन पुरना करजान सभ उपटा-उपटा लगा लेलक। जे केरा अपना ऐठाम बहुत पहिनेसँ होइत चलि आबि रहल छल, ओ उपैट गेल। रोपाएल ओ जे समायानुकूल नै छल, अपनो गेल आ जेहो आएल सेहो गेल। जेकर फल भेल- मिथिलांचलक केदली वन महराइ गाबए लगल!”

जीवन कक्काक विचारमे रस भेटल। पुछलयैन- “हेबा की चाहै

छेलै, काका?”

प्रश्न सुनि काका गुम भऽ गेला। किछु कालक पछाइत गुम्मी तोड़ैत बजला-

“दिनो, उनहल जाइए, केराक दूधो सुखि गेल हेतह।”

प्रश्नकेँ टारैत देखि दोहरबैत पुछलयैन-

“काका, जखन एते गप भइये गेल, तखन कनी पुछड़ी किए छोड़ि देलिऐ?”

ई बुझले ने रहए जे बिलमे चलि गेला पछाइत जँ साँपक नाँगैर पकैड़ खींचौ चाहब तँ नाँगैर टुटि जाइ छै मुदा साँपक मुँह नै निकलै छइ। तैबीच विस्मित होइत काका बजला-

“बौआ, जे कहबह ओ तँ कइये नेने छी, देखिते छहक। मुदा एकटा बात तैयो रहि जाइए। अपन जे पुश्तैनी, जुग-जुगसँ अबैत वस्तु छल आकि अछि, ओकरा अनुकूल समैये नै भेटलै जइसँ आगू बढ़ैत। एहेन बाधा उपस्थित कऽ देल गेलै जे धात्री गाछ-तर भोजन केरा पातक जगह बजरूआ थारीमे होइए।”

उठि कऽ विदा होइत पुछलयैन-

“काका, ऐ केराक किस्मक नाओं की भेल?”

“ओना, केते-गोरे मर्तमान कहै छथिन, मुदा सहरगंजा नाओं छिऐ मरीचमान।”

दोहरबैत पुछलयैन- “बजारसँ तँ पकले घौर लऽ अबै छी, एकरा तँ पकबऽ पड़त।”

अदहा बात मुहेँमे छल कि बिच्चेमे काका बड़बड़ए लगला- “देखह, अपना ऐठाम माटिक तरमे गोरि धानक भूसा, डाबामे दऽ धुइक कऽ केरा पकौल जाइ छै, जे नीक होइ छइ। आ बजारक केरा, टमाटर आ आम सभकेँ कारबेटसँ पकौल जाइ छै, जे नीक नै होइ छइ। अखन पाँच दिन

बाँकीए अछि, काल्हि गोरि देबहक तँ समैपर पकि जेतह।”

केराक घौर उठा आँगन अनलौं। जेते गोरे झंझारपुर हाटसँ घुमि-घुमि आएल रहैथ, एक्के-दुइए सभ पुछए लगला। मुदा एकटा धोखा भऽ गेल रहए जे पत्नी मोन पाड़लैन। मन ई पाड़लैन जे छीमीमे चुन कहाँ लगौलिऐ, कियो देखि नेने हएत तँ पाकत?

पत्नीक बातक कोनो मानियेँ ने लागल। एक तँ कोनो माससँ अनुकूल केरा पकबैक समय कातिक होइ छइ। मौसम परिवर्त्तनक समय रहै छइ। तैठाम चुन की करत? मुदा अपन अनुकूल बनबैले तँ किछु भकमोड़ अबिते छै, बजलौं-

“ऐ बेर छठि परमेसरी खुशी छैथ, देखै छिऐ शुरूहेसँ केहेन बाट धड़ा देलैन।”

अपना जनैत तँ अनुकूल हुअ चाहलौं मुदा से भेल नहि। बजली-

“लोकक नजैर नीको होइ छै आ अधलो होइ छइ। मुदा यएह दुनू–नीक अधला–तेते विआन करैए जे नीक तँ केते नीक आ अधला तँ केते अधला। पाबैनक नाओंपर एक दिन केरा खेनहि की।”

पत्नीक बात सुनि अनुकूल नै बुझि पाशा पलटैत बजलौं-

“आब कथी सभ बाँकी रहल, से मोन पाड़ि दिअ।”



शब्द संख्या: 2685

स्वरोजगार

एक तँ अहुना शिक्षण संस्थानक वातावरण देखि रवि शंकरक मन कौलेजक पढ़ाइसँ उचैट गेल, तैपर परसुका किरिया-कलाप तँ आरो मनकेँ तोड़ि देलकै। भेलै ई जे कौलेजमे विश्वविद्यालय स्तरक परिचर्चा छात्र सबहक बीच भेल जइमे रवि शंकरकेँ आमंत्रित नै कएल गेलइ। बनल-बनाएल परिचर्चाक दिशा निर्देश, बनल-बनाएल कर्ता-धर्ता आ बनल-बनाएल पाठक-सुनिनिहार।

आमंत्रित नै करैक कारण रहै जे कौलेजक वातावरणमे रवि शंकर 'चुप्पा बताह' आ 'गोंग' बुझल जाइत। जइसँ संगी-साथीक बीच अधिक काल रवि शंकरक बतहपनियेँक चर्च चलैत। जहिना 'बघबा खाए वा नै खाए लोहारक लोहराइन महकबे करत', तहिना रवि शंकरक सेहो रहइ। एकटा अवगुण रवि शंकरोमे जरूर छै जे हाइ स्कूलमे जेते विषय पढ़ने छल, ओते विषयसँ सम्बन्ध बनौनहि अछि। ऐ बातकेँ मनसँ हटा नेने अछि जे हाइ स्कूलक किछुए विषय कौलेजमे रहि जाइ छै, सेहो दिनो-दिन घटिते चलि जाइ छइ। अही सीमाक उल्लंघनक चलैत छात्रेटा नहि, शिक्षकोक बीच चर्चक विषय बनल रहइ। जखन कि रवि शंकरक स्पष्ट समझ छै जे भाषा कामधेनु छी, जे सदिकाल दूध दऽ सकैए। एकर माने ई नहि जे निमुआन धन बुझि ओकर दुरूपयोग होइ। ओतबे शब्दक प्रयोग नीक होइ छै जेतेसँ विचारक माध्यमसँ विषय गतिमान बनै छइ। भाषा ओहन धार होइए जेकरा पार करैमे घटवारकेँ घटवारि नै दिअ पड़ै

छइ...।

विश्वविद्यालयक परीक्षाकेँ अधडरेड़ेपर छोड़ि रवि शंकर अपन सभ वस्तु-जात समेट, लगक जे किताब-कॉपी रहै ओकरा छँटिया लेलक, दोसराक संग जे लेन-देन रहै ओकरो फरिया लेलक, पुस्तकालयक लेन-देन सेहो फरिया लेलक आ पड़ोसक लेन-देन सबहक मुँह-मिलानी करैत बिना किछु केकरो कहने रूमक चाभी भागेसरकेँ सुमझा जहिना यागवल्यक्य गुरुआइसँ दुनू पत्नियोँ धरिकेँ छोड़ि विदा भेल छला तहिना विदा भऽ गेल। ओना, भागेसर मात्र गौंए रूमेट नहि, दियादिक संग खानदानी सम्बन्ध सेहो। तथापि ने रवि शंकर किछु बाजि अपन बेथा भागेसरकेँ सुनबए चाहलक आ ने भागेसरे किछु बजलै। नइ बजैक कारण भागेसरकेँ बुझले रहै जे गणेशजी जकाँ एकभग्गु ऐछे, जेमहर नजैर जेतै तेम्हरे जनकक हरबाहिसँ मूसक राखल मुसहैन तक खुनि कऽ निकालि लैत आ जेमहर नइ जेतै तेमहर हाथीक आँखि जकाँ लुब-लुबबैत रहत..! ओसारसँ निच्चाँ उतैरते रवि शंकरकेँ पाछूसँ भागेसर पुछलकै-

"रवि भाय, आगूक की कार्यक्रम अछि?"

जहिना गणेशजीक मन सदिकाल एक्के रंग रहैत तहिना रवि शंकर बाजल-

"अखन विचार मनेमे अछि। पहिने गाम जाएब, समाजक संग परिवारकेँ देखब, पछाइत दुनू बापूत मिलि विचारब जे केना बाप-दादाक लगौल फुलवारी आरो हरियाइत रहत तखन ने।"

एक दिस रवि शंकर डेग बढ़ौलक दोसर दिस भागेसर पल्ला झाड़लक जे सभ दिनक एक्के रंग बुड़िवाण रहि गेल। जा जे कपारमे लिखल छह से कियो बाँटि लेतह! खैहौन चेतानन्दक कपार!

कौलेजक हातासँ निकैलते रवि शंकरक मनमे घौंदा जकाँ प्रश्न लुधैक गेलइ। बियौहता बर आ दुरगमनियाँ कनियाँ जकाँ मनमे समस्याक

सोहरी लगि गेलइ। मुदा जहिना छोट बच्चाकेँ कियो दुलारसँ कना दइ छै आ ओ अपना माए लग जा कहै छै, 'फल्लाँ मार', तहिना सभ प्रश्नकेँ छँटिया रवि शंकरक मनमे परसुका प्रश्न उठलै। की हम परिचर्चामे अपन विचार व्यक्त करैबला नै छी? भऽ सकैए जे जे विचार हमर अछि ओ दोसरोक होइ, मुदा सेहो तँ सुनला पछाइते ने बुझितौं? नहियेँ बजितौं मुदा जँ आनोक मुहसँ सुनितौं तैयो तँ मनमे सवुर हेबे करैत, सेहो ने भेल! ने बजनिहारे भेलौं आ ने सुनिनिहारे!

रवि शंकरो आ भागेसरो संगे दुनू ब्रह्मपुर हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास करि कऽ राजधानीक एक्के कौलेजमे नाओं लिखौलक। ओना पढ़ैमे रवि शंकरक अपेक्षा भागेसर हल्लुक, मुदा मैट्रिकमे बेसी नम्बर भागेसरेकेँ आएल छेलै, जे सुनिए कऽ रवि शंकर रहि गेल। विचारि नै सकल जे जखन भागेसर दब अछि तँ ओकर नम्बरो ने दबे अबितै! बाल-बोध मन रवि शंकर, एतबे बुझलक जे परीक्षा तँ शिकार करब भेल। अनाड़ियो शिकारीकेँ बेसी शिकार हाथ लगै छै आ जीवनियोंकेँ कम। ई नइ बुझि सकल जे जहिना खेतमे जोत-कोरसँ फसल लगबै धरि वा बाँस-खढ़-खरहीसँ घर बन्है धरि कोनो पेंच-पाँच नै होइ छै। पेंच-पाँच होइ छै, फसल लगला पछाइत आ घर बन्हला पछाइत। अपन रोपल अपने खा दोसरोकेँ खुआबी आकि अपने पुराबी आकि अनके रोपल खाइ...।

भागेसरमे एकटा विचार जरूर अछि जे रवि शंकरकेँ श्रद्धाक नजैरसँ जरूर देखैत। मुदा से सोझहामे, परोछमे विचारक दूरी एते लतैड़ गेल छै जे जड़िसँ मुड़ीक दूरी देखबे ने करैए। ओना हाइ स्कूल धरि दुनूमे एते दूरी नै बनल छेलै जेते कौलेजमे आबि कऽ बनलै। जहिना अध्ययन रवि शंकरकेँ एकाग्रता दिस खिंचैत गेल तहिना भागेसर देखा-देखीक अनुकरण करैत दोसर दिस बढ़ि गेल। तइसँ नजैरमे दोष आबि गेने बुझबे ने करैत जे छबड़दानी अपने सुरक्षित पानिक तरमे रहि छबड़ाकेँ कहैत जे ऊपरेमे छियौ।

ओना पटना अबिते दुनू गोरे एक्के लॉजमे रूम भाड़ा लेलक। मुदा भड़ैत बनैये-काल रवि शंकर बाजल रहए- “गौंआँ छोड़ि दोसर कियो रूममे नै आबि सकैए।”

तखन तँ भागेसरो एक-पुरखियाहे छल, संगीक जरूरत बुझि बाजल रहए-

“बड़बढ़ियाँ।”

माथपर मोटरी नेने रवि शंकरक डेग आगू दिस बढ़ैत गेल, मुदा मनमे बेर-बेर पानिक हिलकोर जकाँ उठैत रहै जे विश्वविद्यालय स्तरक कार्यक्रम भेल, बेकती-विशेषक नै छल, तखन किए ने बुझलौं? ..ने प्रश्नक जड़ि भेटै आ ने विचार आगू बढ़इ। मुदा तैयो बाढ़िक पलाड़ी जकाँ बहबे करइ। मन बहकलै, इन्दिरा आवासक जेकरे पक्का घर रहै छै हथियाक झटकीमे खसल घरक अनुदानो तेकरे भेटै छइ। सएह ने तँ भेल। की अहिना भोजे-भातक शिक्षण संस्थान बनल रहत? धू:! अनेरे मनकेँ बौअबै छी। ठीके लोक बताह कहैए! एहने-एहने बतहपनी सोचने ने लोक बताह होइए! अनेरे हमरे किए एते सोग अछि। ‘जानए जअ आ जानए जत्ता।’ लसिगर होइ आकि खढ़हर से ओ जानए। हमहीं की बजितौं जे अनेरे माथ धुनै छी। बड़ बजितौं तँ यएह ने बजितौं जे साहित्य जगतमे मध्यकालीन युग स्वर्णिम रहल। भक्तिमय साहित्यक सृजन एते कहियो ने भेल, मुदा भक्ति साहित्यक पछाइत वैराग्य अबैत आकि श्रृंगार? एबाक चाहै छल ‘वैराग्य’ से नइ आबि ‘श्रृंगार’ आबि गेल! समैयो मुगले शासनक छल। मिथिलांचलक किसानक सुदिन नै दुर्दिन छेलइ। बीससँ तीस रौदी प्रति सदी होइत आबि रहल छेलै, बाढ़ि-झाँट छोड़ि कऽ। तैसंग बड़का-बड़का भुमकमो भेल। आजुक संचार नहि, दू-गाम चारि गाम पसरैत-पसरैत आवाज विलीन भऽ जाइ छल। ने धार-धूर आजुक छी जे आबे बाढ़ि अबैए आ पहिने नै अबै छल। खाएर छोड़ू। रौदीक मारिसँ जे परिवार नष्ट भेल, वा गाम छोड़ि कऽ जे भागल, तेकरा छोड़ि कऽ। जे

इमानदार किसान छला ओ मिसियो भरि ओइ सभ प्रकोपसँ डोलला नहि, मातृभूमिक माटि-पानिमे अपनाकेँ समरपित केने रहला। भलेँ एक रौदीक मारि पाँच बर्खमे किए ने भरपाइ करए पड़ल होइन...।

एकाएक रवि शंकरक विचार आगू बढ़ल। मनमे उठलै- विश्वविद्यालय सर्वोच्च शिक्षण संस्थान छी। जे मिथिलांचल ॠषि-मुनिक बास स्थल अदौसँ रहल आकि ओतबे गनल-गूथल छैथ जेतेकेँ दोरिका छाप भेट गेलैन! विश्वविद्यालयक दायित्व बनैत अछि जे जिनकर रचना दिवारमे सड़ि गेलैन, पानिक चुबाटमे गलि गेलैन ओहनो-ओहनो रचनाकारक खोज हुअए।

गामक सीमानपर अबिते रवि शंकरकेँ भागेसर मोन पड़ल। मोन पड़िते बुदबुदाएल-

“गौंआँ-घरूआ रहने भागेसर बहुत उपकार केलक। ओकरे केने कौलेजक पुस्तकालयसँ सम्बन्ध बढ़ल। नइ तँ तेहेन-तेहेन लुटिहारा सभ अछि जे किताबक कोन चर्च जे आलमारियो उठा कऽ लऽ जाइए। जँ ओ नै रहितए तँ अपने-बुते ओते भीतर तक थोड़े जा सकै छेलौं। ओकरे पाबि ने सभ रंगक किताबसँ भेँट भेल। जिनगी भरि ओकर उपकारकेँ नै बिसरब।”

रवि शंकरकेँ पटना छोड़िते भागेसर अपना पत्नीकेँ मोबाइलसँ कहि देलकैन जे ‘रवि शंकर बताह भऽ गेल!’

गाम अबैसँ पहिनहि तेना चालैनमे दऽ राधा चाललैन जे सौंसे गाम पसैर गेल, रवि शंकर बताह भऽ गेल! तहूमे चुप्पा बताह। कखन की कऽ देत तेकर ठेकान नहि। काने-कान सौंसे गाम बीआवान भऽ गेल।

ओना ई बात परोछ रूपेँ चेतानन्दोक कान तक पहुँचलैन मुदा सोझहा-सोझही नै भेने अनेरे सुनलाहा बातक पाछू जाएब उचित नइ बुझि चुपे रहला। कौआ कान नेने जाइए, तइले कौआकेँ खेहारैसँ नीक,

अपन कान देखब होइ छइ। ओना पौरवैरक पानि जकाँ असथिर चेतानन्दक परिवार, तँए चिड़ैक एक लोल पानि उठौने हिलकोर नइ उठैत। दलानक ओसारपर मोटरी रखि रवि शंकर हिया-हिया चारू दिस ताकए लगल जे अपन हाजिरी तँ दर्ज करबैक अछि।

कनियेँ पछाइत चेतानन्द बाड़ी दिससँ एला। अबिते रवि शंकरकेँ पुछि देलखिन- “बाउ, नीके छेलह किने?”

जहिना बिनु बोलक बच्चा माए-बापक बोल सुनि हँसि-कानि अपन बात कहैत तहिना रवि शंकर मुस्की भरि उत्तर दैत पिताकेँ गोर लगलक। गोर लागि अपन वस्तुजात सेरियाबए कोठरी दिस विदा भेल।

समाजक बीच अनेको सुआदक बात-विचार हवा-बिहाड़ि जकाँ वातावरणमे पसैरते रहै छइ। मुदा कोन बात कोन आवरणमे पसैर जाइ छै, ई बुझब बाल-बच्चाक खेल तँ छी नहि। एहनो तँ होइते अछि जे पहिने दीक्षे छिटाइत अछि शिक्षा हरा जाइत अछि। खाएर जे हौउ, चेतानन्दक मनमे उठलैन जे काल्हिसँ जे गाममे बीआ-बान भेल अछि ओकर मुड़ी पहिने देखि ली। जँ रखै-जोकर हएत तँ राखब, नहि तँ मचोड़ि कऽ तोड़ि कातमे फेक देब...।

आगू ससैरते चेतानन्दकेँ मनमे उठलैन- एक तँ ओहिना रस्ताक झमारल रवि शंकर अछि, तैपर कौलेजमे पढ़ैए। कौलेजिया छौड़ा सबहक जे चालि देखै छिऐ से किछु ने फुराइए। जँ कहीं रवि शंकरो ओहिना करए। मुदा कानमे नहियोँ देब हमरा-ले उचित नहि हएत। पिते नै आदि गुरु सेहो छिऐ। ओकर नीक-बेजा नइ बुझब बाल-बोधक संग अन्याय हएत। कोनो जरूरी छै जे नीक बात सभकेँ अधले लगै, किछु के नीको तँ लगबे करै छइ। ..छातीपर पाथर रखि चेतानन्द बजला-

“बाउ, लोकक मुहेँ सुनै छी जे तोँ बताह भऽ पढ़ाइ छोड़ि गाम चलि एहल हेन, से की बात छिऐ?”

पिताक प्रश्न सुनि रवि शंकर मिसियो भरि विचलित नै भेल। जहिना पौखैरक असथिर पानि, काह-कूह निच्चाँ बैस गेने फरिच रहै छै तहिना रवि शंकरक मन असथिर रहइ। बाजल-

“बाबूजी, एक संग तीनटा प्रश्न उठा देलिऐ। उत्तर बेराबेरी देब। पढ़ाइ छोड़ि कऽ किए एलौं। बहुत बेसी तँ अखन धरि नै पढ़लौं जे भरि पोख उत्तर देब। मुदा एते जरूर बुझलौं जे अपन जिनगी अपने हाथमे लऽ कर्मकेँ धर्ममे प्रतिष्ठित कऽ सकै छी। नइ तँ मुँह किम्हरो बोल किम्हरो बनल रहैए। अपन जिनगी अपना हाथमे लऽ क्षमतानुसार अपनो आ दोसरोक सहयोग करिऐ। मुदा सहयोगोक सीमा छइ। जखन मनुक्ख अपन सीमांकन कऽ चलत तँ ओहन सहयोगक बेगरते नै रहि जाइ छइ। मुदा बेकतीसँ परिवार, परिवारसँ समाज आ देश-दुनियाँ बनैत अछि, तँए बढ़ैत चलबे ने जिनगी छी।”

चेतानन्दकेँ बतहपनीक आभास नै भेलैन, तँए दोहरा कऽ बतहपनी शब्दक प्रयोग करब नीक नइ बुझलैन। पिताक बात छिऐ जँ कहीं उनटे रोपा जाए। शब्द तँ मनसँ उचरैत अछि। तँए अशुभकेँ शुभ बनाएब उचित भेल, मुदा शुभकेँ अशुभ बनाएब केना उचित हएत? अपनो नीक हएत जे जुआन बेटा भेल, सरकारो मानियेँ नेने हेतै, तँए अपना अधिकार आ कर्तव्यकेँ हमहीं किए रोकबै। हँ! तखन बिआह कराएब पछुआएल अछि से करबै धरि भार अछि। लेत अपन घर-परिवार, सर-समाज। साठि बर्ख नहियेँ पूरल हएत तइले किए बैसल रहब। से नहि तँ एकटा आरो बात पुछिए लिऐ...।

..चेतानन्द पुछलखिन-

“बौआ, गाममे रहि करबह की? पढ़ि-लिखि सभ नोकरी-चाकरी करैए आ तूँ..?”

गंभीर होइत रवि शंकर बाजल- “बाबू, अखन गामक असली रूप

बुझैमे थोड़े बाँकी रहि गेल अछि तँए अखन किछु ने कहब।"

"की असली रूप?"

"गामक माटि-पानिक लम्बाइ-चौड़ाइ की छै, अपना केते अछि, गाममे परिवार केते छै इत्यादिकेँ बुझब बाँकी अछि से बुझि गेला पछाइत अपन योजना आगूमे रखि अहूँक विचार लेब।"

रवि शंकरक विचार सुनि चेतानन्द ठमैक गेला। मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलैन। की योजना? कोनो कि सरकारी कारोबार छी जे योजना बनौत। मुदा धाँइ-दे नइ मानब उचित नै हएत। भलेँ बीकछा कऽ पुछि लेब अलग भेल। तहूमे कौलेजमे पढ़ैए, जँ कहीं किताबक भाषा बाजल हुअए, तखन?

से नहि तँ नीक हएत जे अखन रवि शंकरोक मन थीर नै हेतै, ताबे ओहो थीर होइए, तैबीच अपनो अधखरूआ काज पूरा लइ छी। ओहो निचेन हएत अपनो निचेन हएब, तखन खरियारि कऽ बुझि लेब।

बेरका समय। चाह पीब चेतानन्द रवि शंकरकेँ चाल पाड़लैन। अबिते रवि शंकर पुछलकैन-

"किए सोर पाड़लौं?"

चेतानन्द बजला-

"तखुनका बात नीक जकाँ नइ बुझलौं?"

रवि शंकर-

"जाबे धरि गामक माटि-पानि, गाछ-बिरीछ, माल-जालक संग परिवारकेँ नइ बुझि लेब, ताबे अपन सीमा-सरहद नीक जकाँ नइ बना सकै छी।"

'माटि-पानि, गाछ-बिरीछ इत्यादि' सुनि चेतानन्द बजला-

"ई कोन बड़का उलझन भेल जे तूँ ओझराएल छह। सात साए बीघाक गाम अछि, एगारहटा पौखैर अछि। इनार तँ मरिये गेल। दूटा

बाट गाममे अछि। जे दुनू मिलि चौराहा बनल अछि। एकटा पुबे-पछिमे अछि आ दोसर उत्तरे-दछिने। तैसंग पाँच साए परिवारो अछि।"

चेतानन्दक विचार सुनि रवि शंकर बाजल-

"बाबू, जे बात नइ बुझल छल से बुझलौं। कनी थम्हू, कागतपर लिखि लेब नीक हएत।"

कागत-कलम आनि रवि शंकर बाजल-

"गामक रकबा केते अछि?"

"सात सौ बीघा।"

"परिवार केते अछि?"

"पाँच सौ।"

"अपना केते जमीन अछि?"

"साढ़े पाँच बीघा।"

"तखन तँ परिवारक हिसाबसँ बेसी अछि?"

"हँ से तँ अछिए। तँए कि हम बेसी खेनिहार छी?"

बेसी खेनिहार सुनि रवि शंकरक मन ठमकल। मुदा जखन चोर-मोट सोझहेमे अछि तखन पुछिए लेब नीक हएत...।

..रवि शंकर बाजल-

"बेसी खेनिहार! माने?"

चेतानन्द-

"बाउ, अपनो मनमे अछि जे जेते खेतमे काज केनिहार छैथ हुनका सबहक बीच एकरंग खेत होइन, जइसँ श्रमक प्रतियोगिता हएत। मुदा जेकरो बटेदारी, भूदानी खेत भेलै सेहो सभ कियो भरना लगा तँ कियो केबाला कऽ दिल्ली–बम्बै धेने जा रहल अछि। तैसंग जिनका बेसी छैन, ऊहो नोकरी-चाकरी करए चलि गेल छैथ, गामक खेत तँ ओहने परती

बनि गेल अछि जेहेन उजड़ल गाम होइ छइ। तखन तोहीं कहह जे की कएल जाए?"

प्रश्नकेँ ओझराइत देखि रवि शंकर बाजल- "पहिने अपन समय आ खेतीक मिलान करए दिअ, तखन फेर आगू गप करब।"

उत्सुक होइत चेतानन्द बजला- "हँ, हँ, नीके सोचै छह। कोनो काज करैसँ पहिने बुझि-जानि लेब बेसी नीक होइ छइ।"

रवि शंकरक जिज्ञासा देखि चेतानन्दकेँ खुशी भेलैन। मनमे उठलैन- 'नै दुनियाँ तँ कम-सँ-कम अपन परिवारक तँ सभ एक रंग खाएब, ओढ़ब-पहिरब, एक रंगक घरमे तँ रहब। यएह ने भेल परिवारक एकरूपता। ई तँ नहि ने जे कुरसीपर बैसल बेटा बापकेँ कहत- 'ऐ बूढा, कहाँ रहता है!' मुदा जखन अकासे फाटि गेल अछि तखन दरजीकेँ बपहारिये कटने की हएत?

साँझक समय। लालटेन नेस चेतानन्द दरबज्जाक चौकीपर चाह पीब असगरे बैसल छला। बाजाप्ता कागज कलम नेने रवि शंकरो आबि बैसल। हाथमे कागज देखिते चेतानन्द पुछलखिन- "बौआ, कथीक कागत-पतर छिअ?"

जहिना कोनो काजक पहिने भूमिका बान्हल जाइ छै तहिना भूमिका बान्हि कागत खोलि रवि शंकर बाजल- "बाबूजी, अपन किसान परिवार छी।"

'किसान परिवार' सुनि चेतानन्द बजला- "से तँ छीहे। जँ से नै छी तँ किए बड़को-बड़को कुरसीबला अपनाकेँ निधोख किसान परिवार आ किसानक बेटा बजैए!"

मुस्कियाइत रवि शंकर बाजल- "पहिने सुनि लिअ, तखन अपन विचार देब। पानि खेतीक परान छी। बिनु पानिक किसानक जिनगी मुरदाक होइ छइ। चारिए मासक बरसात बारहो मासकेँ सजबैए। जँ

हाथमे पानि आबि जाएत, तखन लत्ती जकाँ किसानी पसैर जाएत। तँए किछु खेत बेच बोरिंग कराएब। खेतीक विकसित रूप बनबैमे जेते खर्च हएत ओ खेत बेच कऽ करब।"

चेतानन्द मुड़ी डोलबैत बजला- "घर-परिवार सुमझाबैक अर्थ ई नहि ने होइ छै जे विचार रोकल जाए। जे मन फुरह से करह, मुदा पाँच कट्ठा तीमन-तरकारी-ले हमरो बेरा दिहह। देखै छी जे तेते ने लोक दबाइ दइ छै जे ओकर गुणे बिगाड़ि दइए। अपना हाथे उपजाएब मनसँ खाएब। अछैते औरुदे मरनाइयो नीक नहि!"

चुटकी लैत रवि शंकर बाजल-

"बाबूजी, घरक आगूओमे धन-खेतीए रखने छी आ मन निरोग तरकारीपर जाइए!"

चेतानन्द-

"अखन तूँ नै ने बुझबहक। ई खेत गोरहा छिअ। नहियोँ तँ बोरा कट्ठा भइए जाइए।"

बिच्चेमे रवि शंकर बाजल- "आ जइबेर रौदी भऽ जाइ छइ?"

"एते लोक हिसाब जोड़त तखन काज चलतै।"

"तँए ने..?"

❑

शब्द संख्या: 2388

घूर

गोसाँइ डुमैक समय भऽ गेल छल। इसान कोणक हवा मध्यम तेज गतिए चलैत रहए। धुरिया सौन भेने जेठोसँ बत्तर समय, जइसँ जरनो-काठी आ गोइठो-करसी सुखा कऽ हरनाठ भऽ गेल छल। माल-जालक थैरमे घूर पजारैक समय भऽ गेल छल।

बजार जाइए काल बैकुण्ठ बाबा पोता–पुष्पानन्द–कँे कहि देने रहथिन जे बौआ परिवार सरकारी ऑफिस नै छिऐ जे अपने रहब हजार कोस हटल मुदा जिम्मा रहत ऑफिसक। परिवार परिवार छिऐ, तहूमे गिरहस्त परिवार। जइमे ने उचित अभ्यागतक समय निर्धारित अछि आ ने साँढ़-पाराक। तहूमे केतबो बन्हौटा गाए-महींस किए ने हुअए मुदा डोरी टुटलापर वा खुजलापर किछु-ने-किछु मलैकिये जाइए। तहूमे गोटे-आदहे एहेन होइए जे बोनैया जकाँ सौंसे गाम मलकए लगैए। तँए जेते काल हम नै रहब तेते काल दुआरे-दरबज्जापर रहबो करिहह आ खाइयो पीबैले दिहक। पोसा माल-जाल अनठिया कुत्तो-बिलाइ देखि भड़कैए। तही काल खुट्टो आ डोरियो टुटैक डर रहै छइ।

बाबाक बात सुनि पुष्पानन्द हँ-हूँ उत्तर नै दऽ मने-मन विचारए लगल जे जिम्मा तँ किछु ने भेल मुदा समय बेठेकान भेने नमहर भेल। बाबा करवन बजारसँ औता करवन नहि, तैबीच खाली ओगरवाहिए आ खुअबैए-पीअबैक बात नै भेल, जेठुओ समयसँ समय दुरकाल अछि, नहाबैयो पड़त आ घरो-बहार करए पड़त। तहूमे जँ कहीं पुरना संगी भेट

गेलैन, तखन घुमि कऽ एबो करता कि नहि। तखन तँ दिनक कोन बात जे कैयो दिनक जिम्मा भऽ गेल...।

गप्पकेँ ओझराइत देखि पुष्पानन्द विचारलक जे कोनो कि अनभुआर काज अछि जे अबूह लागत, जिनका एते अज-गजक भार रहतैन ओ अपने नइ बुझता जे घरक समैयक की महत छइ। आ जँ एहेन संगी भेट जानि जे नोकरीसँ रिटायर भऽ आएल होथि, जिनका ने खेती-पथारी होनि आ ने माल-जाल..?

अपन खेती-बाड़ी, माल-जाल, फल-फुलवारी तँ किसाने परिवारक अंग छी, जे नोकरी-चाकरीमे नै अछि। तखन तँ दुनू गोरेमे यएह ने समझौता हेतैन जे अपने ऐठाम चलल जाए जे सुच्चा दूधक चाहो पीब आ भरि पोख गप्पो हेतइ। गप्पो कोनो छोट थोड़े हेतैन, रजनी-सजनीक खिस्सा जकाँ सौंसे जुआनीक गप्प हेतैन। खाएर जे हौन। जाबे बाबा घुमि कऽ नै औता ताबे तकक भार भेबे कएल। बेर खसिते माछी-मच्छर आबए लगै छै, ताबे धरि नै आएल रहता तँ घूरो कऽ लेब, सएह ने।

हँसैत गोसाँइकेँ पाट होइत देखि पुष्पानन्द बीच थैरमे घूर लगौलक, जैठाम सभ दिन घूर लगौल जाइ छल। अनभुआर रहने पुष्पानन्द गदौसबला खढ़ आन दिनसँ घूरमे बेसी दऽ देलक। ओना करसीक हिसाब ठीके रहै, किएक तँ सबेरे बैकुण्ठ बाबा रौदमे करसी पसारि देने रहथिन। खड़ाएल खढ़ रहने पजार पड़िते एक्के बेर धुधुआ कऽ चारूकात पकैड़ लेलक। हवा रहबे करै, आगिक लुत्ती उड़ए लगलै।

तखने बैकुण्ठ बाबा दरबज्जापर पहुँचला। घूरकेँ देखिते साइकिल ओलतीमे ठाढ़ कऽ लोटा लऽ कलपर विदा भेला, घूरमे पानि छीटब जरूरी बुझि पड़लैन।

ओना दरबज्जापर अबिते घूर देखि बाबाक मन करुआ गेलैन। आबि गेलौं तँए ने, नहि तँ घर-दुआरमे आगि लगैत कि नहि? पोता एतबो

नइ बुझैए जे केते हवामे घूर लगाबी आ केतेमे नै लगाबी! मुदा जुआन-जहान पोता अछि, तहूमे कौलेजमे पढ़ैए। आनकें देखै छिऐ जे बाप-दादाक आगूमे बकटेंट जकाँ गप्पो करैए आ गँजो-भाँग पीबैए। भलें हमरा अखन तक एहेन नै भेल मुदा समैयक रोग तँ महामारी छी, केकरा पकड़त, के मरत आ के नै मरत तेकर कोन ठेकान।

बाबाक मुँहक रूखि देखि पुष्पानन्द बुझि गेल। अपन ड्यूटी समाप्त बुझि टहलैले निकैल जाएब नीक बुझलक। अनेरे की बजता की नहि, तइसँ नीक ससरिये जाएब हएत। दादी आँगनमे छैथे ओ बुझबे करथिन, अपन औथिन।

गुड़क मारि जहिना धोकरा अँगेजने रहैए तहिना अंगेजल छैन्हे, अपन दुनू गोरे फरियेता।

घूरमे पानि छीटि आगि शान्त करैत बैकुण्ठ बाबा कपड़ा बदैल, कलपर हाथ-पएर धोइ दरबज्जापर आबि बजारक समान मिलबए लगला। पतिक चाल-चूल पाबि कमली आबि पुछलकैन-

“चाहो-ताहो पीब आकि पीनइ आएल छी?”

ओना बैकुण्ठक मन करुआएल रहैन मुदा पत्नीक बात सुनि तामस नै उठलैन। तामसक मुद्दा रहैन, हवामे घूर। क्रोध तँ मुद्दा-मुद्दापर अबितो अछि आ जाइतो अछि। ई तँ नहि जे तामस उठल तँ उठले रहि गेल आ तैबीच घीबोक घैल ओहने आ ताड़ियोक घैल ओहने रहल। क्रोध तँ मुद्दा-मुद्दाक होइत अछि। तहू मुद्दामे जगह-जगहक असर सेहो भिन्न होइत अछि। ई तँ नहि, जे गाछक पात जकाँ कोनो एहनो होइत जे बिनु हवोक डोलैत रहैए आ किछु एहनो होइत जे बिहाड़ियोमे नै डोलैए। ई निर्भर करै छै गाछक चालि-बेवहारपर। तँए ने एकटामे जड़िसँ टीकासन धरि सिर लुधकल रहै छै, आ दोसरमे सिरोक जगहपर जल्ले रहै छइ। मनुक्खो तँ ओहिना ने अछि...।

मनकेँ थीर करैत बैकुण्ठ बाबा पत्नीकेँ कहलखिन-

“हाट-बजारक चाह केहेन होइ छै से नइ बुझै छिऐ, जँ पीबे केने हएब तँ ओकर मद्दीए केते हेतइ?”

हवामे मसुआएल खढ़-पात जकाँ पतिक बात सुनि कमली पोचारा दैत बजली-

“अनके जकाँ हमहूँ छी जे पुरुख रहैत हाट-बजारक चाह पीब, जँ चाहेक बनीमा किछो घोरि दिअए आ पीविते-पीविते लटुआ जाइ, तँ की बनीमा पजिया कऽ नै पकड़त, तखन अहाँक मोले कथी रहि जाएत?”

एक तँ करुआएल मन तैपर पत्नीक झमार बैकुण्ठकेँ बरदाश नै भेलैन। झमाड़ि कऽ बजला-

“अखन मन थाकल अछि, पहिने कनी पानि पीब चाह पीब, तखन ने थीर हएत। निचेनसँ आगूक गप करब। गोर लगै छी अखन जाउ। चाह बनौने आउ।”

पतिक दुनू हाथ जोड़ल देखि सूपक भाँटाकेँ ऊपर फेंक, सूपेसँ लोकैत कमली बजली-

“पुरुखक हाथे जोड़ब की! ई तँ घोड़-मिलान छी जे मुहसँ हिहिया पाछू घुमि चौताल फेकब भेल। गदहो जकाँ जँ चलै छी तैयो तँ एक्के रस्तासँ चलै छी। भरि दिनक काजक माला बना नेने छी आ ओकरे भिनसर-सँ-साँझ धरि जाप करैत रहै छी!”

पत्नीक भरिगर बोलसँ बैकुण्ठ अपनाकेँ झँपाइत देखि पाशा बदलैत बजला-

“बजारक चीज-वौस सभ अछि, साँझ पड़ि गेने फेड़-फाड़ भऽ जाएत। जाबे अहाँ चाह आनब ताबे हमहूँ सेरिया लइ छी।”

काजक मूर्त रूप देखि कमली बिनु किछु बजने चाह बनबए आँगन

विदा भऽ गेली।

चीजे-वौस की, मासक अदहा किलो चाहपत्ती, चारि किलो चीनी, दू साए ग्राम सुपारी, बीस ग्राम खाएर आ पचास ग्रामक जर्दा डिब्बा...। तहूमे सभटा बँटले बाँटल अछि, रखि देब। मुदा अपने मनमे जे क्रोध ऐ रूपेँ तनल अछि जे घरमे आगि लगिये जइतए आ जिनगी भरिक कमेलहा जरिये जइतए। ई तँ काजक संयोग छल जे ओहो घूरमे आगि पजारलक आ हमहूँ एलौं। आखिर ओकरा अखनो धरि घूर लगबैक लूरि किए ने भेल, ई दोख केकर? की अपनो घूर लगबैक लूरि नै भेल आकि लगबैक लूरि बुझा नै पेलिऐ। जँ अपनालूरि नै रहैत तँ बारहो मास माल-जालक रक्षा केना करै छी। से तँ करै छी मुदा तखन पुष्पानन्दकेँ लगबैक लूरि किए ने भेल जे एक तँ धुरिया सौन भेने जेठोसँ बत्तर समय अछि, तैपर इसान कोणक मध्यम-तेज हवा बहि रहल छइ। खढ़-पातसँ लऽ कऽ घरक छप्पड़ धरि खड़ाएल अछि, तैठाम एहेन घूर लगाएब अनुचित भेल की नहि? से तँ जरूर भेल। मुदा एहेन घूर पुष्पानन्द जानि कऽ तँ नइ लगौलक जे घर-दुआर जरि जाउ? तखन ओकर दोख की भेल..?

गुम भेल असगरे दरबज्जापर बैसल बैकुण्ठ बाबा अपन काजक समीक्षा अपने करैत रहैथ।

चौकपर पहुँचते पुष्पानन्दक मन पुष्पानन्दकेँ धकलए लगलै जे जेठुआ गरे जकाँ बाबाक नजैर रहैन तँए कोनो धार कोण लऽ कऽ बरिसेबे करता। से नहि तँ रस्ते-रस्ता टहलैमे थोड़े देखता, कनसोहो लऽ लेब आ टहैलियो लेब। जँ कहीं सोझहामे पड़ता तँ कनी डेग झटका लेब जे बुझता कोनो काजे केतौ जाइए। नइ तँ सासुरक डेग पकैड़ चलब...।

फेर मनमे उठलै- की सासुरक मद्धिम डेगे ने तँ जिनगियोक डेगकेँ दुबड़ा दइए?

मुदा कोनो सुनि-गुनि नै पाबि पुष्पानन्द तीन चक्कर लगा लेलक। मनो मानि गेलै जे दादियो तेहेन लगारी छैथ जे केहनो करियाएल मेघ किए ने हुअए ऊपरेमे सुखा देतैन।

प्रश्न अछि जे बारहो मासक मालक थैरमे केहेन घूर लगौल जाए जे ओइ समैयक माछी-मच्छरसँ रक्षा हेतइ। माछियो-मच्छर तँ रंग-बिरंगक अछि। के केहेन धुआँसँ भागत? तेतबे नहि, घूरक धुआँ तँ हवाक संग चलै छै, तँए हवाक रूखि सेहो देखए पड़ै छइ।

बैकुण्ठ बाबाक मन घुमलैन। सौन मास। सौन तँ सौन छी। अनेक रूप, अनेक चेहरा। एहनो होइत जे शीतल जल शीतल समीरक संग लहलहाइत खेतक हरियरी ओहन साड़ी पहीरि छमकैत रहैए जेना गदाएल खेसारी जकाँ गदाएल पेट मनकेँ भरने रहै छइ। मुदा एहनो सौन तँ होइते अछि जे जेठुआ धुरा उड़बैत धुरिया सौन कहबैए। हँ से तँ कहबैए! तखन?

तखन किछु ने! आइक सौन केहेन अछि ओ भेल विचारैक बात। अनेरे आगू देखब जे पोता-पोती, नाइत-नातीन की खाएत, की पहिरत, केना रहत? नहि जँ पाछू घुमि ताकब तँ दर्जनो लाख बर्ख पहिने जनकक मिथिला तंत्रमार्गसँ प्रभावित हजार बर्खक मिथिला बनि बाड़ीए-झाड़ी नाचल घुमी, ईहो तँ नीक नहियेँ। खाएर जे हौउ, ने दुनियाँक ठेकान अछि जे केते आ केतेटा अछि आ ने लोकक ठेकान छै जे केहेन अछि। तखन? हँ तखन अछि जे अपन चौबीस घन्टाकेँ नियमित जिनगीमे बान्हि अकासीए सूर्य-चान जकाँ अपना धुरीमे नियमित चलि जिनगीक आदि-अन्त कऽ विसर्जित करी। जँ से नइ तँ अखन कम स्कूल कौलेज अछि तखन तँ ई गति अछि जखन बेसी हएत, तखन पूछत आकि धकियाएत? खाएर जे हौउ, अनेरे मनकेँ घोर-मट्ठा केने छी...।

तही बीच कमली चाह नेने एलैन। अनुकूल जगह पाबि बैकुण्ठ

पुछलखिन- “हमरेटा-ले अनलौं आकि..?”

पतिक प्रश्न सुनि कमली ठमकली। मनमे उठलैन जे एना किए उटपटांग बात कहलैन! ऐठाम कियो दोसराइत तँ नहि अछि, तखन? ओह! भरिसक मने चलिया गेलैन हेन। नहि, मनमे अखनसँ खट-खुट होइते रहत, तइसँ नीक जे पुछिए लिऐन-

“दोसराइत ऐछे नै तखन आरो चाह..?”

कमलीक प्रश्न सुनि सिताएल नढ़िया जकाँ बैकुण्ठ बाबा बजला-

“आ अहाँ?”

कमली मुहेँ लगल पुछलखिन-

“अखन धरि कहिया सोझहामे चाह पीलौं जे..?”

बैकुण्ठ-

“अखन धरि अपन विचारकेँ हम अहाँ ऊपर थोपैत एलौं, मुदा जे काज अहूँ करै छी आ अपनो करै छी ओइ विषयमे बैस कऽ विचार नै करै छी। से आइसँ शुरू करब। तँए कहलौं जे एकठाम बैस चाहो पीब आ घूरक विषयमे गपो-सप्प करब।”

पतिक बात सुनि कमली निधोख भऽ कऽ आँगनसँ चाह आनि आगूमे बैस पीऐत पुछलखिन-

“बाजू की उलझन अछि?”

बैकुण्ठ बजला-

“उलझन कथी रहत, एक तँ रस्ताक झमारल बजारसँ आएले छेलौं कि पुष्पा घूरमे आगि देलक। केना घूर लगौल छेलै केना नहि, एक्के बेर तेना धधैक गेलै जे घरेमे आगि लगि जाइत। तखनेसँ मन खसल जाइए, तँए अहाँसँ विचार करब अछि।”

पतिक गिरगिराइत मन देखि कमली अवसरकेँ हाथसँ जाए नै दिअ

चाहैत पुछलखिन-

"पहिने ई कहू जे परिवारमे मालक थैर आकि जाड़क मास घर-ओसारक घूर पुरुख लगबै छला आकि औरत?"

कमलीक प्रश्न सुनि बैकुण्ठ आरो सकपका गेला। बजला-

"दुनियाँ बड़ीटा छै आ बहुत लोको छै, जइसँ बहुत रंगक विचारो छइ। मुदा अपना परिवारमे तँ पहिने अहीं लगबै छेलौं, जहियासँ वर-बेमारीमे पड़लौं तहियासँ अपने लगबै छी।"

पतिक विवशता कमलीकेँ बुझि पड़लैन। मनमे उठलैन अर्द्धांगिनी। अर्द्धांगिनी की? मात्र सन्तान पैदा करब आकि जिनगीक अर्द्धांगिनी? खाएर जे हौउ, ठीके जिनगीक कोनो ठेकान नै अछि, नइ तँ तेंसरे जे रोग धेलक से मरैमे बाधा रहए, ई तँ औरुदे बाँकी रहए जे बँचलौं...। बजली-

"देखियौ, मालक थैरमे बारहो मास घूर लगौल जाइ छै, आ घर-ओसारमे मात्र जाड़क मास। होइ छै की नहि?"

"हँ, होइ छइ।"

"बारहो मास समैयक हिसाबसँ माछियो-मच्छर होइ छइ। दिनमे कमो-सम मुदा दिन लहसैत माल-जालक देहमे लुधकए लगै छइ। किछु एहेन माछी-मच्छर होइ छै जेकरा उड़ौल जाइ छै आ किछु एहेन होइ छै जेकरा भगौल जाइ छइ।"

पत्नीक विचारकेँ सुहकारि मुड़ी डोलबैत बैकुण्ठ बजला-

"हँ से तँ होइ छइ।"

दलदलाइत पतिकेँ देखि कमली बजली-

"आइक केहेन समय अछि तइ अनुसारे घूर लगौल जाएत। अपना ऐठाम रौदियाह समय अछि, जेठोसँ बत्तर अछि। माटि तक तबि गेल छइ। जखन माटि तबि गेल तखन माटिक ऊपरका तँ तबबे करत किने?"

"हँ, से तँ तबबे करत।"

"तबैत-तबैत झड़कैयो लगत। झड़कनाइक माने भेल सुखाएब। कोनो वस्तुक सुखाइक माने भेल ओकर नमीक सूखब। आगिकेँ तँ पानिए दबैत अछि, जैठाम पानि नै रहत तैठाम तँ बेनग्र भऽ आगि नचबे करत।"

"हँ से तँ नचबे करत।"

जहिना जादूगर दर्शककेँ हिप्टोनाइज करि कऽ 'हँ-हँ' करबए लगैए तहिना पतिकेँ 'हँ-हँ' करैत देखि कमलीक मनमे उठलैन- गरदैनमे उतरी देखि केकरो घर-घराड़ी लिखाएब नीक नहि, ओ समाज ठक छी, कहत जे माए-बापकेँ मुइला पछाइत जेते नमहर भोज करब तेते नमहर जगह स्वर्गमे भेटतैन, ई बड़बढ़ियाँ। धर्मक काजमे सहयोग करी, ईहो बड़बढ़ियाँ, जखन सराधक भोज धर्मक काज भेल तखन जे सहयोग भेल ओ मदैत किए ने भेल जे कर्ज बनि लोकक घर-घराड़ी लिखा गामसँ उजड़ि दइए?

फेर मन कहलकैन- धु! अनेरे कोन लपौड़ीमे मनकेँ ओझरबै छी। अपन परिवारकेँ जेहेन बना समाजमे ठाढ़ रहब, समाजक ओहन लकड़ीक खुट्टा जकाँ भेलौं। जेकरा छै ओ चाननो लकड़ीक धरैन, चौकैठ आ केबाड़ लगा घर बनैबते अछि। मुदा ऐ परिवारक कर्ता-धर्ता तँ अपने दुनू परानी ने भेलौं? जखन मेहनत करि कऽ खाइ छी, दिन बितबै छी आ तइसँ जे समय उगड़ैए ओइमे दोसरोकेँ जहाँ धरि भऽ पबैए मदैत करै छिऐ। जँ अहिना समाजक सभ परिवार बनि जाए तखन केहेन सुन्दर समाज हएत?

खाएर.., समाज तँ देव-दानवक भाँजमे पड़ि गेल अछि। जेकर कोनो ठेकान नै छइ। करखनो दिनकेँ राति कहत तँ करखनो रातिकेँ दिन। जेना महाभारतक लड़ाइ काल भऽ जाइ। करखनो साँझक काज भोरमे

करत तँ करवनो भोरुका काज साँझमे।

..विह्वल होइत कमली बजली- “किसान परिवारमे घूरक अपन महत छइ।”

तैबीच पुष्पानन्द पहुँच गेल। पुष्पानन्दकेँ देखिते कमलीक मुहसँ निकलल-

“भने बौऔ आबिए गेल। घरक कोनो बात आकि काज, जँ सभ विचारि कऽ करब तखने ने घरमे मतभेद नै हएत?”

जाधैर पुष्पानन्द लगमे नै आएल छल ताधैर तँ बैकुण्ठ पत्नीक विचारमे हूँहकारी भरै छला मुदा पुष्पानन्दक सोझहामे भरब उचित नइ बुझि चुपे रहला। मुदा जहिना खिस्सा-पिहानीमे बाल-बोध पहिने हूँहकारी भरैत अछि तहिना पुष्पानन्द भरैत बाजल-

“हँ, से तँ ठीके?”

पुष्पानन्दक हूँहकारी सुनि कमलीक मनमे उठलैन, आब पहिल श्रोता पति नहि पोता भेल। तँए एहेन बाजी जे परिवारक हितक होइ, जे सबहक दायित्व छी...।

बजली-

“बौआ, बारह मासक साल होइ छइ। जइमे छहटा रीति अपना ऐठाम होइए। मुदा सभ रीतक महत समान नइ छै, दू-दू मासपर रीति सेहो होइ छै आ बिनु मासक सीमा परहक सेहो संक्रमण-रीति होइ छइ। मुदा मोटा-मोटी अपना ऐठाम तीनटा रीति कहियौ आकि मौसम अछि। पहिल- जाड़, दोसर- बरसात आ तेसर- गरमी।”

नव बात सुनि पुष्पानन्दक जिज्ञासा बढ़ल। जहिना बिनु ब्रेकक साइकिल ढलानपर चलौनिहारसँ बेकाबू भऽ जाइत तहिना पुष्पानन्दक मन ढलैक कऽ बेकाबू होइत बाजल- “दादी, पहिने कोन भेल?”

पुष्पानन्दक प्रश्न सुनि कमली घबरेली नहि, पोखैर-इनारक पानि जकाँ थीर होइत बजली- "बौआ, ई बेठेकान अछि। चैतकेँ पहिल मास मानबै तँ गरमी पड़त, अखारकेँ मानबै तँ बरसात पड़त, नहि जँ कातिककेँ मानबै तँ जाड़ पड़त। मुदा तीनू मौसमकेँ अपन-अपन गुण-धर्म छै जे बरहमसियो छै आ समइयो।"

"से केना बुझबै?"

"बुझैले तँ दुनियाँ भरल अछि बाउ, मुदा परिवारक काजक बीच कहै छिअ। गरमी मौसममे जे घूर लगौल जाइ छै तेकर मुख कारण अछि माछी-मच्छरकेँ भगाएब। ओइ समय जाड़क मौसम बीतल रहै छै, माछी-मच्छर ठिठुरल रहै छै जइसँ ओकरामे जहर कम छै तँए विषैला कम होइए, मालो-जालक देहपर रहल तँ बुझि पड़ल जे खरहे-पात अछि। तैसंग हवा-बिहाड़िक मास सेहो होइ छइ। तँए ओइ समयमे अधसुखू खढ़ो-पात आ गोबरो-करसीक घूर लगौल जाइ छै जे हवामे उड़बो ने करत आ धुआँसँ माछियो-मच्छर भागत।"

कमली दादी बजिते छेली कि बिच्चेमे पुष्पानन्द टोकि देलकैन-

"आ बरसातमे?"

'बरसात'क नाओं सुनि कमली ठमैक गेली। मनमे उठलैन- जेते ठेकनगर जाड़ आ गरमी मास अछि ओते बरसात कहाँ अछि? बरसा भेने बरसात नइ तँ रौदी। गरमियोँसँ असाध उमसल गरमी। एक तँ तरे-तर देहक पानियोँ सुखबैए आ दोसर आगिपर चढ़ल अदहन जकाँ बाहरो निकालि फेकैए। मुदा तइसँ की! जँ बेठेकानोकेँ ठेकानि-ठेकानि पकड़ी तँ ऊहो पकड़ाइए जाइए। मनकेँ थीर करैत कमली बजली-

"बौआ, नाना-नानी आकि दादा-दादीक बातकेँ आकि खिस्सा-पिहानीकेँ जँ ओहिना अनके जकाँ बुझबै तखन हुनका सबहक अवहेलना हेतैन। नानी तँ नानी छैथ। जिनका पेटमे आँखि बनबैयोक शक्ति छैन आ

बन्न आँखिकेँ सतमीक दुर्गा जकाँ डिम्हो दैक शक्ति छैन। खाएर जे हौउ। बाउ! दुनियाँ बेठेकान अछि, अनेरे अपनो वौआएब आ तोरो कथीले वौएबह। अपने बीतल कहै छिअ। जहिना ऐबेर धुरिया सौन अछि, तहिना बर्ख पाँचम सेहो भेल रहए। जहिना अपना ऐठाम घूर लगबै छी तहिना ऊहो मालक थैरमे लगौने रहए। बेठेकान लगौलक। हवा बहिते रहै अपने घरमे आगि लगि गेलइ। एक्के घरक आगि तेना ने पसरल जे सौंसे गामे लगि गेल। गामो सूर्ज मण्डल! छणेमे छनाक भऽ गेलै! खाएर जेतए भेल तेतए भेल, मुदा एते तँ बुझहऽ पड़तह जे समय केहेन अछि। ओना आन-आन मासक ठेकान करब थोड़े हल्लुक अछि मुदा सौनक भारी अछि।”

जिज्ञासासँ जगैत पुष्पानन्द हाथ जोड़ैत बाजल-

“की भारी अछि?”

पुष्पानन्दक प्रश्न सुनि बैकुण्ठ चौंकला। जेना केकरो कोनो बात नइ बुझल रहल आ दोसराक मुहेँ सुनि होइत, तहिना पहिने पुष्पानन्दक चेहरापर नजैर खिड़ौलैन। नजैर खिड़ैबते जेना कोनो बच्चाक पेट हसोंथि माए भूखक अनुमान कऽ लैत तहिना बैकुण्ठ केलैन। प्रश्नकेँ तौलैत नजैर पत्नी दिस बढ़ौलैन। मुदा जहिना बच्चाक उमेरक हिसाबसँ दूध पिअबैले माए खुशी-खुशी तैयार होइत आ दुनू हाथ खेलाइत बच्चा दिस बढ़बैत तहिना कमलीकेँ देखि आँखि निच्चाँ कऽ लेलैन।

तैबीच शान्तचित्त होइत कमली बजली-

“बाउ, घूरक गप ताबे चौपेत कऽ रखि दियौ। पहिने माछी-मच्छरक गप सुनि लिअ?”

दादीक जवाब सुनि पुष्पानन्दक मनमे ओहेन बात उठल जेहेन नटकिया सभ उठबै छैथ। मुदा मुँह चुप केने रहल।

पुष्पानन्दकेँ चुप देखि कमली बाजए लगली-

“माछी-मच्छरकेँ काल नइ बुझि सभ जीव जीवे छी से बुझब नीक हएत। की मनुक्खक बच्चा बोन-झाड़मे आन जीव जन्तुक बच्चा जकाँ पला सकैए? खाएर जे हौउ। बाउ, सौनमे नाग पंचमी होइ छै, पहिल परवक पाँचिम दिन। ओइ दिनसँ माछियो-मच्छर आ आनो-आनो बिनु-जहरीलोसँ जहरीलाक विषवन होइ छइ। जइसँ माछियो-मच्छर आ आनो-आनमे बीखक संचार होइ छइ। गरमी मासक माछी-मच्छर मरबो करैए आ विषेबो करैए। मुदा जेकर जन्म होइ छै ओ विषेबे बेसी करैए। आ विषेने ओकरा खूनो पीबैक शक्ति बढ़ि जाइ छै आ विषक दर्द सेहो बेसी होइ छइ।”

कमलीक बात अन्तो ने भेल छेलैन कि बिच्चेमे बैकुण्ठ बाबा बजला-

“सभटा बात आइए पुष्पानन्दकेँ अशोकारिष्ट जकाँ एक्केबेर बोतलो भरि पीआ दियौ। तरखन देखबै जे केते लाइग करै छइ।”



शब्द संख्या: 2812

कनियाँ-पुतरा

कमला-कमलक जन्मक उनैसम दिन। उनैसमासी कर्म केलाक पछाइत जहिना कर्ता चैनक साँस लेबो करैत आ छोड़बो करैत तहिना सुधनी दादी पोती (कमला) पोता (कमल) कें जाँति-पीचि, पछबरिया ओसारपर कजरौटी दऽ पूब सिरहौने सुता बेटा-पुतोहुकें कहलखिन-

"आब अपन करमकें करम-धरम करह, बाड़ी-झाड़ी विरहा गेल हएत ओकरो तकतियान नै करब तँ जीब केना?"

कहि सुधनी दादी आँगनसँ निकैल बाड़ी दिस विदा भेली आकि दछिनवरिया घरक कोनचर लग पहुँचते मनमे ठहकलैन। ठहैकते ठाढ़ भऽ गेली। ठहकलैन ई जे कहुना तँ घरमे हमहीं बुढ़ छी, मुदा सुनैत तँ यएह एलिऐ जे जँ बेटा-बेटीक जौंआँ सन्तान हुअए तँ पहिने बेटाक जन्म होइ छै पछाइत बेटीक। मुदा से भेल कहाँ। पहिने बेटीक जन्म भेल? मुदा पुछबो केकरा करबै? बेटा-बेटे भेल, पुतोहु कनियेँ छैथ, तखन? समाजमे जँ केकरो पुछबै तँ कहत जे बुढ़िया बताह भऽ बड़बड़ाइए। गुनधुनमे सुधनी कोनचर लग ठाढ़ भेल ने आगू बढ़ैत आ ने पाछू ससरैत। अपन दतारी दोसरो-तेसरो तँ पुछैवाली छैथे। मुहाँ-मुहीं नै पुछि हएत, मुदा पुछबा तँ सकै छिऐन। चोटे आँगन दिस घुमि पुतोहुकें हाथक इशारा दैत कहलखिन-

"कनियाँ, कनी एमहर आउ।"

ओसारपर बैसल धीरजकें मिसियो भरि शंका नै भेलैन जे एहेन

कोन गप छी जे सोझहामे नै बाजि माए कातमे कहै छथिन। शंको केना होएत चुल्हि-चौकाक बात तँ सासु पुतोहुएकेँ ने कहथिन, तइले बेटाकेँ किए कोनो तरहक कुवाथ हेतैन। लगमे अबिते सुधनी बुधनीकेँ कान लग फुसफुसा कऽ बजली-

"कनियाँ, अहाँ तँ अखन नव-नौताड़ि छी, अखन ओते नइ बुझबै मुदा माए तँ छैथ। चुपचाप हुनकासँ बुझि लिअ जे जौंआँ सन्तानमे पहिने बेटियोक जन्म होइ छइ?"

सासुक बात सुनि बुधनी मानि तँ गेली, मुदा तैयो बजली-

"ओना काल्हिए हम पुछि लेबैन, मुदा कहियो बाजल छेली जे पहिने बेटेक जन्म होइ छइ।"

पुतोहुक बात सुनि सुधनी ठमैक गेली। मुदा तैयो बजली-

"कनियाँ, आँखिक देखल अहूँकेँ अछि आ हमरो, तखन सुनलेहे बात मानब उचित हएत?"

सासुक बात सुनि बुधनी ठमकली। बल्ला आकि चूड़ी देखैले कोन ऐनाक जरूरी कोन स्त्रीगणकेँ होइ छइ। ई तँ सद्य: आँखि देखैत अछि। जेकरा आँखि नै देखैत तइले ने ऐनाक जरूरत। कमसँ-कम एते तँ हेबे करत जे जहिना ऐ समाजमे (सासुरक) तहिना नैहरोक समाजमे अहिना लोक उनटा-पुनटा बुझबो करैए आ बजबो करैए। तैसंग ईहो हएत जे माइयो अपन बातमे मजगूती अनैले दोसरो-तेसरोकेँ पुछथिन वा निम्र बुझि नहियोँ पुछि सकै छथिन। मुदा जँ नै पुछि लेब आ झोंकमे कहियो बुढ़ही झोंकि देलैन तखन तँ अनेरे आफतमे पड़ि जाएब। पुछैए-मे की लगल अछि यएह ने आठआना मोबाइलमे खर्च हएत, तइले अनेरे सासुक धौजैन बेसाहि कऽ रखब नीक नहि। मने-मन बुधनी विचारिते छेली आकि अंकुरित भगवान जकाँ मनमे अकुरलैन। अकुरलैन ई जे अपना जौंआँ सन्तान भेल, किनको एक-दू-तीन सन्तान होइ छैन, हमर बेथा

जहिना ओ नीक जकाँ नइ बुझि सकै छैथ तहिना तँ हमहूँ नहियेँ बुझि पएब। अपना दू सन्तानक बेथाक अनुभव अछि, दोसरकेँ तीनक अनुभव रहितो एक-एकक अनुभव छैन। डायविटीज आ ब्लडपेसर किनको एक संग छैन आ किनको भेलैन दुनू मुदा बेरा-बेरी। अनुभव तँ दुनू गोरेकेँ दुनू बेमारीक भेलैन मुदा की दुनूक इलाजमे सोलहन्नी एक्के दबाइ कएल जाएत...।

पत्नीक ओझराएल मनक ओझरी चेहराकेँ रसे-रसे ओझरबैत चलि जाइत। ओसारपर बैसल धीरज बेर-बेर चेहरा देखैत तँ टुटल फूल जकाँ बेसीए मलिन होइत चलि जाइत देखैत। मुदा सासु-पुतोहुक बीचक विवादमे पड़बो ओते नीक नै हएत जेते हेबा चाही। एकर माने ई नै जे परिवारमे कियो चिन्तित हुअए आ केकरो-ले धैनसन, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत? मुदा पुछबो केना करब? दुनूक बीचक सवाल जँ एक पक्षसँ पूछब तँ दोसर पक्ष पञ्छीए जकाँ ने बुझती, जँ एकठाम बात उठाएब आ ओ लिंग-विशेषक होइ तखन ने माए बाजत आ ने माइयक डरे (सोझमे रहने) पत्नी बजती। तखन?

..मुदा जे बदनामे चलि गेल ओ कहियो ने कहियो निकलबे करत, तहिना जे परिवारक भीतर घूसि गेल ऊहो भुमहुर-आगि जकाँ धुँएबे करत, तइले अनेरे मन घोर-मट्ठा करब नीक नहि, दुधे किए ने पीब लेब जे सभ संगे रहत। दूधक मोहैन जकाँ धीरजक मनमे चलिते रहै आकि दोसर अकुर गेल। ओ ई अकुरल जे ऐ घरक ऐगला भार (चलबैक भार) तँ अपने दुनू बेकती (पति-पत्नी) पर पड़त, जाबे माए जीबैए ताबे गारजन बुझि भार हटौने छी मुदा अखने जँ ओ बिमार पड़ए आ भार उठबै-जोगर नै रहि जाए तखन तँ एकाएक भार पड़बे करत। जँ कोनो काजक भार अबैसँ पहिने अदहो-छिदहो बुझल रहत तँ एते हल्लुक तँ बनिए जाइ छै जेते सोलहन्नी बिनु बुझलक होइ छइ। समाजमे देखै छी जे किनको सत-सतटा बेटी भेने डीह-डाबर दोसराक हाथ चलि जाइ छैन, तँ किनको सात

बेटा भेने गामक अनको सभटा इनार-पौखैर हाथ चलि अबै छैन। धू: अनेरे मनकेँ छिछियबै छी। देखै छी जे एते-दिन बापे बेटाक भिनौजी होइ छेलै आब दुनू बेकतियोमे देखै छी। तखन अनेरे मन किए वौआएब किए ने दुनू बेकती पति-पत्नी बनि बुढ़ाड़ियोमे कोहवर घरक गप करब। पत्नी दिस नजैर उठा धीरज बाजल-

“एमहर कनी सुनू। अखन भने माइयो अँगनामे नै अछि, एकटा बात पुछै छी?”

सासुसँ हटि बुधनीक जिज्ञासा पति दिस बढ़ल। जहिना बाल-बोध बच्चा खिस्सा सुनि माल-जालक बच्चा जकाँ ‘घुटरू-घु’ सुनि मुँह बाँबि दइ छै तहिना जिज्ञासा भरल बात सुनैले बुधनी मुँह उठा बजली- “की?”

धीरज-

“अहाँक पीड़ा (उनैस दिनक) देखि मन महैक गेल जे आब सन्तान नै हुअए सएह नीक। दूटा भेबे कएल जँ दुनूकेँ दुनू बेकती सेवा कऽ मनुक्ख बना ठाढ़ कऽ देबै तँ एकसँ दू परिवार तँ अबाद हेबे करत किने?”

हाल-बेहाल भेल बुधनी देहक मन मानि गेल जे पतिक विचार सोलहन्नी नीक छैन। हूँहकारी भरैत बजली-

“अहाँ विचारकेँ काटब से दरकार हमरा अछि। तखन तँ पुरुख अपने खेतमे आड़िओ दइए आ तामस उठै छै तँ ढाहियो दइए। तँए अहाँ जानी। हम तँ संगीए ने भेलौं। बड़ हएत तँ एतबे ने, जे कानि-कानि लोककेँ कहबै, संगियाँ मरि गेल हम भुतियाइ छी।”

जिनगीक सचाई जहिना धीरजकेँ तहिना बुधनीकेँ एक-दोसर दिस खिंचए लगल। आगू-ले दुनूक जिज्ञासा बढ़लैन। तही बीच सुधनी खोंइछामे झिंगुनी आ मुट्ठीमे सुखेलहा कड़ची नेने पहुँचली। अबिते चुल्हि लग कड़ची-जारैन रखि पुतोहुकेँ कहलखिन- “कनियाँ, बड़ीकाल भऽ गेल। बच्चा सभकेँ दूध पीएलौं?”

कड़ची रखि ओसारपर झिंगुनी खोंइछासँ उझलि बुधनीक लग बैस सुधनी बाड़ीक खिस्सा पसारि देलैन। बाजए लगली-

“उनैसे दिनमे बाड़ीक दशा बिगैड़ गेल। लत्ती सभ मचान छोड़ि-छोड़ि निच्चाँ उतैर कठुआ-कठुआ गेल। रामझिंमनी पँच-पँच, छह-छहटा जुआ कऽ गाछेकेँ कठुआ देलक। तेते ने खढ़-पात जनमि गेल जे बाड़ीक रुइखे खतम भऽ गेल अछि।”

बाड़ी-झाड़ीक अपसोच सासुकेँ करैत देखि पुतोहु मलसारि दैत बजली- “बाड़ी गेल तँ गेल मुदा घरमे जे दूटा लाल आएल से?”

पुतोहुक बात जेना सुधनीकेँ हिलकोरि देलकैन। अगम पानिमे हेलए लगली-

“से तँ अही दुनू लालले ने ओ सभ अछि। लालक पतिपाल हेतै तँ ओ सभ ढेर हेतइ।”

पुतोहुक बात सुधनीकेँ धारक पानि जकाँ भँसौलकैन नै समुद्र जकाँ हिलकोरए लगलैन। परिवार तँ खाली मनुक्खे टाक नै होइ छै, घर-दुआर, खेत-पथार, माल-जाल इत्यादि अनेको मिला कऽ बनै छै, जे मनुक्खसँ लऽ कऽ आनो-आनो वस्तुकेँ एक निसचित सीमामे बान्हि दइ छइ। मुदा एक बान्हमे रहितो तँ सबहक अपन-अपन महत्तो छै आ काजो छइ। जइसँ एक दोसरकेँ जानो-पराण दइ छै आ जिनगियो दइ छइ। बाड़ी-झाड़ी, तीमन-तरकारी तँ मासे-मास दिने-दिने होइत-जाइत रहैए मुदा मनुक्ख तँ से नै छी। तँए मनुक्खे ने मूल भेल। मूलक मूल्य तँ तखने ने बढ़ैत जाएत जखन मूलक सेवा हेतइ। मूलेक पानि ने छीप धरि रस पहुँच हँसबै-खेलबैए। अनेरे मनमे धौजैन करै छी। जेना सुधनीक मन हल्लुक भेलैन। बजली- “कनियाँ, आब तँ दूध थीर भऽ गेल हएत, कहू जे दुनू बच्चाकेँ भरि पोरख दूध होइ छै किने। जँ से नै हएत तँ बच्चाक पतिपाल करब कठिन भऽ जाएत। जँ अखनेसँ दूधकट्ट भऽ जाएत तँ सभ दिन

खिद-खिदाइते रहत। रंग-रंगक रोग सेहो दबतै, आ अगुओ-पछुओ पकड़तै।”

सासुक बात सुनि बुधनी सकपका गेली। मुदा परिवारेक गार्जनेटा नहि, बच्चाक दादियो ने सुधनी छथिन तँए बाल-बोधक कोनो बात छिपाएब उचित नइ बुझि बजली-

“माए, एकटा तँ बिसैरिये गेल छेलौं, हिनका कहबो ने केने छेलिऐन। ई तँ गपपर गप चलल तखन मोन पड़ल।”

पुतोहुक बातमे सुधनीकेँ मिसियो भरि अनुचित नइ बुझि पड़लैन। बजली-

“से की?”

“पुरनी (पल्हैन) एकहक घोंट कऽ दुनू बच्चाकेँ सेहो दूध पीआ दइ छइ।”

बुधनीक अधखरूए बात सुधनी बुझि गेली। ओ बुझि गेली जे परसौतीक पहिल पूरक तँ पल्हैने ने होइ छैथ। ओना धियान अपनो दिअए पड़त। पल्हैन दस दुआरी होइए। समाजक काज तँ सबहक बरबैरे होइ छै मुदा काजे छोट-पैघ होइए जेकरा लोक पकैड़ चलैए। मुदा खतराक तँ घड़ी अछिए। जँ केतौ (पल्हैनक) हमरा (अपना) काजसँ पैघ काज दोसर ठाम भऽ जाए तखन जँ ओकरा छोड़ि दिअए ईहो तँ नीक नहियेँ भेल। मुदा जे हौउ, एते तँ वेचारी (पल्हैन) चेताइयो देलक जे बच्चाकेँ भरि पोख दूध नै होइ छइ। खाएर अखन तक जँ बच्चा नीक जकाँ जीब गेल तँ आइए-सँ दोसर जोगार कऽ लेब, जरूरी अछि। बजली-

“अच्छा कनियाँ एकटा बात कहू जे वेचारीकेँ खुआ-पीआ दइ छिऐ किने? वेचारी एहेन पीतमरु अछि जे आइ उनैसम दिन बीत रहल अछि अखन तक अपन सिदहो-बोइननै मंगलक हेन। जखने बच्चा जनमैत अछि तखन माइए-बापटा कैं कि परिवारो-समाजोकेँ आशा

जगिते छइ। मुदा ईहो नीक नै जे जे मुँह खोलि नै बाजए ओकरा सुपतो नै भेटइ। आइ पल्हैन जखने औत, तखने मोन पाड़ि देब, जेना जे हेतै से दाइए देबइ।"

एकटा बच्चाकेँ दूध पीआ बुधनी सासुक कोरामे देलक। दोसर बच्चाकेँ ओछाइनसँ उठा कोरामे लइते छल आकि हको-परास भेल पल्हैन पहुँचली। जेना समैपर नै एने कियो अपनाकेँ दोखी बुझैत तहिना पुरनियोँ बुझलक। अबिते बाजल- "काकी, अबेर भऽ गेल।"

पुरनीक बात सुनि सुधनी गुमे रहली। मुदा सुधनीक गुमी पुरनीकेँ आरो झकझोड़ि देलकै। झकझोड़ि ई देलकै जे भरिसक मने-मन सुधनीकाकी गुम्हैर रहली अछि। मुदा से नै भेल, भेल ई जे पुरनीक बोली-वाणी, चालि-ढालि, चेहरा-मोहरा जोर-जोरसँ बाजि रहल छल जे पुरनी तेहेन उकड़ू काजमे फँसि गेल छेली जे तन-मन दुनू फ्रीसान भऽ गेल छेलैन। मुहसँ फुफरी उड़ैत थाकल-मारल बटोही जकाँ देखि सुधनी बजली-

"पुरनि, पहिने हाथ-पएर धो कऽ किछु खा लिअ। जखन आबि गेलौं तखन काज हेबे करतै। किए एते परेशान बुझि पड़ै छी?"

सुधनीक बात सुनि पुरनी पौखैरक पानि जकाँ थीर होइत बजली-

"काकी, की कहबैन। दछिनवारि टोल प्रसव करबए गेल छेलौं। उनटा बच्चा छेलइ। दरदे कनियाँ छटपटाइ छेली, बच्चा जनमिते ने छेलैन। मुदा कहुना-कहुना कऽ सम्हरल। ओही काजमे एते अबेर भऽ गेल।"

पुरनीक बात सुनि सुधनी बजली- "अहिना होइ छइ। ने एक्केटा मनुक्ख अछि आ ने एक्के रंग काज हेतइ। मुदा मनुक्खो तँ कम भेदिया नै ने अछि, देखियो-सुनि आ गरो अँटका कऽ भेद तँ बुझिए जाइए।"

हाथ-पएर धोइ पुरनी खाए लगली। खाइते-खाइते बजली-

“काकी, अपना बच्चाकेँ भरिपोख दूध नै होइ छै, हमरो कोनो ठेकान नै अछि। से कोनो ओरियान कऽ लेथु। अखन अन्न चटबैबला थोड़े भेलैन जे अन्न चटौथिन।”

पुरनीक बात सुनि सुधनी बजली- “बौआकेँ कहलिऐ हेन जे ओना गाइयो-महींसक दूधसँ काज चलि सकैए मुदा नीक हएत जे बकरीए दूध दिऐ।”

पुरनी-

“हँ-हँ काकी बेस विचार छैन। एना तँ बजारोक दूध एकपर एक छै मुदा ओकर कोन बिसवास। अपना हाथक जे अछि तेकरे ने बिसवास।”

दुनू गोरेक (माइयो आ पल्हैनो) बात सुनि धीरजकेँ भेल जे जखन दूध-ले बकरीक ओरियान करैएक अछि तखन समय गमाएब नीक नहि। जरूरीक जे काज अछि जँ ओकरा पछुआएब आकि अनठाएब ओ परिवारकेँ पाछू धकेलब भेल। जखन बुझै छिऐ जे एक परिवार रहितो, सभ काज परिवारेक रहितो करैक तँ किछु सीमा अछिए। उठि कऽ आँगनसँ निकैल दूधारू बकरी भँजियबैले विदा भेल। समाजो तँ समाज छी। जहिना रंग-रंगक मनुक्ख तहिना रंग-रंगक धनक खाड़ी सेहो बनले अछि। कोनो दरबाजा एहनो अछि जैठाम हाथी-घोड़ा रहैए आ कोनो एहनो अछि जैठाम किछु ने रहैए। मुदा तँए कि गाममे गाए-महींस बकरी नै अछि से तँ अछिए।

धीरजकेँ आँगनसँ निकैलते बुधनीकेँ अपन बात बजैक गर भेटल। गर ई जे एक परिवार रहितो, सभ बात बुझला पछाइतो सभ लग सभ बात सभ नै बाजि पबैए। बजली- “भने माइयो छैथ आ अहूँ छी, जिनगीमे एहेन दुख कहियो ने भेल छल, जे भेल तँए..?”

बुधनीक बात सठलो ने छल आकि बिच्चेमे पुरनी बजली- “कनियाँ, हमर-अहाँक (नारीक) यएह अग्नि परीछा छी। राजासँ रंक

तककेँ ई परीछा होइ छइ। तइले दुख-बेकल मनमे रखब तँ दुनियाँ चलत।”

पुरनीक विचारकेँ बुधनी सुनिते द्रवित भऽ गेली। एक संग मनमे अनेको प्रश्न उठि गेलैन। परिवार-ले बच्चा अनिवार्य ऐ दुआरे अछि जे वएह बच्चा बढ़ैत सियान-चेतन होइए, जैपर कुले-खनदान नहि परिवार, समाज, देश-दुनियाँ ठाढ़ अछि। एहेन जे मनुक्खक अनिवार्यता छै तैठाम सन्तानक अनिवार्यता तँ छइहे। मुदा जिनगीक तँ कोनो ठेकान नै अछि, बच्चासँ सियान आकि बुढ़ धरि कखनो-कहियो कियो मरि जाइए, तखन? एक बच्चापर आश्रितो तँ नहियेँ रहल जा सकैए। दोसर ई जे जँ बेटा-बेटीकेँ बरबैर मानि लेब, सेहो तँ सोलहन्नी उचित नहियेँ। हँ कोखि-ले सन्तान भेल मुदा सामाजिक जे ढाँचा अछि तइमे बराबरी केना औत। मुदा मनो तँ मने छी। देहमे दुख भेने जे विचारमे अबै छै, सुख भेने बदैल जाइ छइ। अपने दुनू परानी विचार केलौं जे एहेन दर्द (बच्चा जन्मक) दोहरा कऽ नै उठाएब मुदा..? पीड़ाएल मन बुधनीक दृढ़तासँ मानि गेल जे आगू सन्तान नहियेँ हएब नीक। बजली- “अखन तँ सोझहामे ईहो दुनू गोरे छैथे, नीक-बेजा बुझबे करै छथिन।”

बुधनीक बात सुनि पुरनी बजली- “कनियाँ, औगताएल किए छी, अखन पहिने देह-हाथ सक्कत बना लिअ। ताबे बच्चो सकताइए। अबिते-जाइते रहै छी जेहेन अपन परहेज करब, तेहेन जे चाहब से हेतइ।”

पुरनीक बातमे बुधनी जिनगीक बिसवास पौलक। आँखि उठा पुरनीक आँखिपर दैत अपन बेथा कहलक। बुधनीक बेथीत मन देखि पुरनी बाजल- “कनियाँ, जहिना कामिनी फूल महिनामे चारिए दिनक जिनगी पबैए तहिना सन्तानक खेल सेहो अही चारि दिनमे निहीत अछि, पछाइत बुझा देब।”

गप-सप्पकेँ सीमा छुबैत देखि सुधनी पुरनीकेँ पुछलखिन- “तोहर सिदहा केते हेतह। कहुना भेलह तँ तूँ पसारी भेलह, तँए तोहर रस्ता रोकब

अपन रस्ता रोकब हएत। दाइए दइ छिअ। अपन नेने जैहह।"

सिदहा सुनि अरवन धरिक कएल काजक फल देखि पुरनीक मन खुशी भेल, बाजल- "काकी, हमर खेत-पथार, माल-जाल, राज-पाट सभ तँ यएह छी। दोसर कोन असरा अछि। आइ दिनसँ हिनका ऐठाम खेनिहार सभ आबए लगतैन। मुदा जे काज हम केलिऐन सेहो कियो करतैन।"

पुरनीक बात सुनि सुधनी सहैम गेली। बजली- "कनियाँ, एक बेर अपना मुहसँ बाजि जाउ, केते हएत। काजक भीर हमरो नजैरमे अछि। अन्हार घर साँपे-साँप होइ छइ। समाजमे जेते हमरो सन लोक दइए तइसँ कम नै देब।"

सुधनीक विचारमे आशा देखि पुरनी बाजल- "बेटाक अदहा बेटीक सिदहा भेल, तँए दोबर नै डेढ़िया भेल। अनका लिए जे हौउ, मुदा हमरा लिए तँ जेहने बेटा तेहने बेटियो भेल।"

मास दिनक कमला-कमल भऽ गेल। सुभ्यस्त समय भेने गामोक चुहचुही ऐ साल नीक अछि। धनमण्डल भेल अछि। बच्चाक निविते जहिना पमरिया, बकूनियाँ, हिजरा-हिजरनीक ढबाहि लागत, तहिना ठको-फुसियाहक ढबाहि लगबे करत किने?

दीपेक पमरिया, कहियो बपहरक नाओंसँ तँ कहयो ममहरक नाओंसँ एबे करत। से कि कोनो एक्के ठामक औत नैहर-सासुर सबतरि पसरत। जीविकाक तँ दोसर साधनो ओकरा छइहो नै ने।

दोसर मास चढ़िते चारि गोरे पमरिया पहुँचल। बेटाक बधैया मांगए। मुदा बेटीक?



शब्द संख्या: 2335

वारन्ट

बोरिंग-दमकलक कर्ज चुकौला पछाइतो हरिहर काकाकेँ केसक वारन्ट भऽ गेलैन। ओना वारन्टसँ घबरेला नहि, मुदा एते शंका तँ आबिए गेलैन जे रंग-बिरंगक चेहराक बीच जीयबो तँ असान नहियेँ छी।

सरसैठ इस्वीक रौदीक पछातिक समय। सरकारोक नजैरमे थोड़ेक पानि आएल आ रौदियाएल किसानोक मन ठेहियाएल। अखन धरि जे विचार-सोलहन्नी भाग-तकदीरक बीच जीबैत चलि आबि रहल छल तइमे कनी धक्का लगलै। धक्काक कारणो भेल जे गामक-गाम सून भऽ भऽ मसान जकाँ बनए लगल छल, बनबो कएल। नम्हरो-नम्हरो गाछमे सुखनियाँ लगि गेल, केतेको रंगक फलो आ अन्नो गामसँ लोकेक संग पड़ा गेल। माल-जालक उजाड़ भऽ गेल। खेती-पथारीक चर्चे की, जे मिथिला दार्शनिकक जगह रहल ओइ मिथिलामे दुर्दिनक बीच कुदिन सेहो आबि गेल।

बी.डी.सी. मीटिंग बिहानपुरमे भेल। जेना छोट आँट-पेटक मीटिंग छल तेना खूब जमगर भेल। गामसँ जिला धरिक अफसर-अफसरान एकठाम चारि घन्टा धरि बैसला, कम नै भेल, मुदा तैबीच चाह-पान-जलखैमे जे समय लगल हुअए तइ लगा कऽ।

मीटिंगमे कलक्टर साहैब सभसँ सिरगर रहैथ। ओना अखुनका जकाँ नवतुरिया नहि, उमेरगर सेहो। हुनके बातक प्रतीक्षामे सभ कियो।

उठि कऽ तोहफा बाँटैत कलक्टर साहैब अपन श्रीमुखसँ व्याख्यान देलखिन-

“सौनक मेघ जकाँ सरकार लटैक कऽ निच्चाँ आबि गेल, तँए मुँहमंगा बर्खाक झड़ी लगत। इच्छित वस्तु लोककेँ भेटत।”

कहि चारि श्रेणीमे गाम बाँटि देलखिन। तीन श्रेणीक किसान आ चारिम बोनिहार, आ पछाइत कहि देलखिन-

“बोनिहार-ले गाए-महींस, रिक्शा, टमटम इत्यादि भेटतै जइमे तीन हीसमे एक हीस सरकार देत आ दू हीस अपन लगतै। तहिना सीमांत किसानकेँ बोरिंग दमकल तिहाइ छूटपर भेटत। आ जे अढ़ाइ बीघासँ पाँच बीघाक किसान छैथ हुनका चौथाइ छूट भेटत। कहि मुस्कियाइत बैस गेला। धन-बर्खा हुअ लगल। सौनक सतैहिया लादि देलक। खाद छूटपर, बीआ छूटपर, खेतीक औजार छूटपर, गाए-महींसक संग रिक्शा, टमटम, लॉडस्पीकर, चूड़ी दोकान इत्यादि-इत्यादि सभ किछु छूटपर भेटत।”

नाराक संग मीटिंग समाप्त भेल। भोजन-भात चलल, ढेकार करैत जश देत सभ सीमान टपला।

हवा जकाँ समाजमे उठल। गाम-गामक लोक ब्लौक दिस मुड़ियारी देलक। मुदा अनभुआर माल-जाल जहिना डोरी-खुट्टा तोड़ि लंक लऽ पड़ाइए, जे गोटे-गोटे पकड़ेबो करै छै आ गोटे-गोटे वौड़ जाइए, तहिना। खाएर जे हौउ, ‘भागल चोरक भगबे नफा।’ तैसंग ई बात सेहो जे सभ नइ बुझि पौलक- आम खाइले गाछ रोपए पड़ै छइ। भलेँ गाछ रोपब असान किए ने हौउ मुदा आमक चुनाव कऽ माटि-जगहक चुनाव सेहो करए पड़ै छै, जँ से नहि तँ धनखेतीक कलम जेहने जुतिगर होइ छै तेहने हएत...।

व्याख्यानक क्रममे उधिया कऽ एते लोक भासि गेल जे बुझैक होशे

ने रहलै जे गीता 'जिनगी' छिऐ नै कि 'पाठ'। अध्यात्म दर्शने छिऐ आकि जीवन दर्शन। तहिना कलक्टर साहैब विचारकेँ सभ बुझलक जे मीटिंग समाप्त हेतै आ काल्हि जखने ऑफिसक कुरसीपर बैसै जाइ जेता कि धाँइ-धाँइ गाममे बोरिंग-दमकलक ट्रक संग पंजबिया गाइयक पथार लगि जाएत। अकास-धरतीक जे मिलन स्थल- क्षितिज होइ छै ओ हस्तांतरणक होइ छइ। बोरिंग-दमकल बेपारीक घरसँ जहिना औत तहिना पशुपालकक घरसँ पशु औत। तइ दृष्टिएँ मिथिलांचल कौड़ियो बरबैर नहि। सोलहन्नी बहरबैयाक आशा...।

ब्लौक दिस गामक लोक मुड़ी उठबैत पौलक जे पहिने-ब्लौकक रजिष्टरमे नाओं दर्ज करबए पड़त, ओ कागत आगू बढ़ि ऐगला ऑफिसमे दर्ज भेला पछाइत रजिष्टरमे औत। ओइठामसँ बैंक पठौल जाएत, तेकर पछाइत काजक दौड़ शुरू हएत।

काजोक दौड़ तँ हल्लुक नहियेँ। ब्लौकक चक्करक संग जिलाक चक्कर आ तैपरसँ बैंकक चक्कर धरिमे दू बर्ख समय आ बिनु हिसाबक खर्च जहिना सभ गमौलक तहिना हरिहर काका सेहो गमौलैन।

मुदा तेकर मिसियो भरि चिन्ता हरिहर कक्काकेँ नै भेलैन। चिन्तो केना होइतैन, जहिना हजार हाथक गाछक छिप्पीपर चढ़ला पछाइत जँ धरतीपर खसल वा पड़ल फलपर नजैर पड़ै छै, जेकरा पबैले गाछपर सँ उतरैक समैयो आ भीरो किछु ने बुझि पड़ै छै तहिना मनमे घमौड़ लैत रहैन। समय आ खर्चक फल एकटा टटके जरूर भेटलैन जे जहिना परिवारमे तहिना समाजमे गप-सप्पक क्रम बदलल। रजनी-सजनीक खिस्सामे कमी आएल, खेती-पथारी, माल-जाल इत्यादिक बात समाजक मंचपर आएल। छोट-मोट मीटिंग भी.एल.डब्लू.क माध्यमसँ हुअ लगल। जइसँ लोकक आकर्षण बढ़ल। बैंकक माध्यमसँ कर्ज भेटत आ बैंकेक माध्यमसँ असुलियो हएत। मुदा तैबीचमे जिला स्तरपर सब्सिडी-ऑफिस हएत। जाबे ओ आदेश बैंककेँ नै भेटतै ताबे कटौती नै हएत, लोनक सूदि

चलैत रहत। तेतबे नहि, छह मासक बीच जँ अदा नै करब तँ सूदियो मुइरे पकैड़ लेत।

सरसैठक सरकारक मालगुजारी माफक जबरदस असर भेल। लोकमे नव बिसवास जगल जे जइ मालगुजारीक चलैत खेत सभ निलाम होइ छल, से आब नै हएत। जहिना मालगुजारी देनिहार बिसैर गेल तहिना सरकारो अपन कर्मचारीकेँ समेट दोसर फाइल दिस लगा लेलक। ने मालगुजारी देनिहार आ ने लेनिहार रहल।

मुदा बैंकमे टटका रसीदक जरूरत पड़ल। मालगुजारी माफ मुदा केते माफ तेकर चिट्ठी ऑफिसेमे लटैक गेल। जहिना सबहक तहिना हरिहरो कक्काक साल भरि टहलैए-मे चलि गेलैन।

हरिहरो काका तँ जिद्दी, तही-ले समाजमे जश-अजश सदिकाल होइते रहै छैन। जश ई होइ छैन जे काजक प्रति जिद्दी छैथ। मुदा काजो तँ उनटा-पुनटा अछि माने नीको अछि आ अधलो अछि, दुनू तँ काजे छी। जे विपरीतो दिशामे काज करबे करत।

हरिहर काका तेहेन जिद्दी जे रगैड़ कऽ टटका रसीद कटा, बैंकसँ रुपैआक निकासी कराइए लेलैन। पहिल खेप दू साए रुपैआक चेक माइनर एरीगेशनक नाओंसँ देलकैन। जिनगीक पहिल चेक देखि हरिहर काकाकेँ नीक खुशी भेलैन। खुशियो केना ने होइतैन, छोटके चेक ने बड़का चेक बनैए।

बैंकसँ निकैल हरिहर काका माइनर एरीगेशनक भाँजमे विदा भेला। भँजियबैत-भँजियबैत भाँज लगलैन। मात्र दू गोरेक ऑफिस। बोरिंग गाड़ैक ठीकेदारी। चेक जमा करिते रजिष्टरमे दर्ज भेला पछाइत ठीकेदारक नाओं कहलकैन। ठीकेदार तँ ठीकेदारे छी। चाहे-सरकारी हौउ आकि गैर सरकारी ओ तँ सबहक ठीकेदार भेल। एक संग पचासो ठीकेदारी चलि सकै छै, तँए ओहन लोकक भेँट तँ थोड़े कठिन होइते

अछि।

मुदा ठीकेदार भेटलैन। भेटते हरिहर काका पुछलखिन- "ठीकेदार साहैब, कहिया तक काजमे हाथ लगत।"

ठीकेदारी शैलीमे ठीकेदार बजला-

"काल्हि नहि, परसू आउ?"

ऐ दौड़-बरहामे पाँच दिनक पछाइत फेर भेँट भेलैन। भेँट होइते पुछलखिन-

"अहाँक भेँटो हएब कठिन होइए तँए एकटा निठाही दिनक नाओं कहू।"

ठीकेदार स्पष्ट कहलकैन-

"मात्र दूटा पलान्ट छइ। अहाँक नम्बर आठम भेल। बीचक काज भेला पछाइत हएत।"

हरिहरो कक्काक तीन गोरेक बैच रहैन। तीनू गोरे अपनामे विचारलैन। काज जहिना अपन तहिना दोसरोक। प्रतीक्षा तँ करए पड़त। पुछलखिन-

"केते समय लगत?"

"महिना दिनमे भऽ जाएत।"

मास दिनक पछाइत तीनू गोरेक संग हरिहरो काका ठीकेदारक खोजमे निकलला तँ पता लगलैन ओ विधान सभा एलेक्शनक भाँजमे चलि गेल छैथ, छह मासक पछाइत औता।

पछुआइत काज देखि सबहक धैर्जक सीमा डगमगाइत तँ रहबे करैन। समय बीत रहल अछि कर्जक सूदि बढ़ि रहल अछि। जहिना समय बेठेकान भऽ गेल तहिना परिवारक काज सेहो बेठेकान भेने आमदनी टुटि रहल अछि। ऐसँ नीक तँ अपन खेत बेच बोरिंग करैबतौं।

कोन फेरामे पड़ि गेलौं। अधमड़ू साँप जकाँ बनि गेल छी!

साल बीत गेल। ऑफिसक उनटा-फेर भऽ गेल। जहिना दुनू स्टाफ–अफसर-किरानी–बदैल गेला तहिना ठीकेदारो छोड़ि कऽ पुलक ठीकेदारीमे चलि गेल।

भाँज-भुँज लगबैत मास दिनक पछाइत हरिहर काका फेर काजकेँ पटरीपर अनलैन। कारगर अफसर। काज करैक उग्र जिज्ञासा। दुनू प्लान्टक भाँज लगौलैन। एकटा काजमे लगल आ दोसर माटिक तरमे चलि गेल। भेल ई जे अंधराठाढ़ी इलाकामे लेअर बहुत निच्चाँमे छइ। साढ़े चारि साए फुट बोड़ भेला पछाइत लेअर भेटलै। बोरिंग लोड भेल। लोड भेला पछाइत जखन क्रेसिंग पाइप उखाड़ब शुरू भेल तँ पचास फीट पाइप तरेमे सौकेट फेल कऽ गेलइ। पचास फीट निकलल बाँकी माटिये-मे रहि गेल। तहूमे तेहेन जगहपर गेल जे अफसरो बेवस भऽ गेला। कोनो सस-बस नै चललैन।

अन्तमे बेवस होइत हरिहर काकाकेँ कहलखिन-

“जँ रहि गेलौं तँ जरूर बोरिंग हएत, नइ तँ देखिते छिऐ ऑफिसक काज, जे आइ एतए छी काल्हि केतौ रहब।”

जिज्ञासु हरिहर काका अपन काज बिसैर पुछलखिन-

“सर, एना किए अनियमित छइ?”

अफसर-

“किए छै तेकर कोनो एक्केटा कारण छइ। रंग-बिरंगक कारण छइ। अनेरे कोन समुद्र उपछैक भाँजमे जाएब, ओकरा छोड़ू। हेबा की चाहै छेलै से कहै छी।”

ओझरीमे जहिना अमती काँट आ पेरासूत ओझराइ छै तहिना ने मनो ओझराइ छइ। तइसँ नीक हरिहर काका बुझलैन जे जएह कहै छैथ सएह नीक।

पुछलखिन- "की हेबा चाहै छेलै?"

"होइयोक बहुत रस्ता छै, तँए एकटा कहब उचित नहि, मुदा सही रहने नइ सोलहन्नी तैयो उचित तँ भेबे कएल।"

मानब मुड़ी डोलबैत हरिहर काका कहलखिन-

"एकरा के टोनत?"

अफसर बजला-

"सुनू, नीक होइतै जे ऑफिसेमे कागत-कलमक काज करै छैथ हुनका निसचित समय आ निसचित काजक भार देल जाइन। तइ काजमे की बाधा उपस्थित भऽ रहलैन अछि तेकरा निसचित समैपर देखल जाइन।"

मुड़ी डोलबैत हरिहर काका बजला- "हँ, से तँ देखिते छिऐ जे काज जेहेन हौउ मुदा ऑफिसक कागत टंच रहैक चाही। नइ तँ दुनियाँ देखै छै जे कोसी योजना सन योजना अरबोक योजना छइ। मुदा राज रौदियाएल अछि! एना जँ सराध-बिआह दुनू दिस योजना चलत तखन केते आशा।"

माइनर एरीगेशनक दौड़-बरहा करैत सालक सिजिन समाप्त भऽ गेल। सिजिनक अर्थ भेल, जे काज माटिक छै ओ सुखारमे हएत। बरसातक समय बोरिंग गाड़ैमे असुविधा होइ छै, धसना खसैक डर रहै छै। ओना, नव तकनीकसँ गाड़ल जा सकैए मुदा दुनूक बीच सामंजस केना हएत से मूल भेल। एक पक्ष बुझैए जे पाइ सरकारक छिऐ, तँ दोसर पक्ष बुझैए पाइ जनताक छिऐ, जेकर गेलै तेकर, हमर की। मुदा की तइसँ काज चलतै? साल भरिक पछाइत बिहानपुरमे तीन बोरिंग-दमकलक संग काजक केंचुआ छोड़लक। किछु गाइयो-महींस गाम आएल। किछु रिक्शा टम-टम बढ़ने सवारीक सुविधा भेल। मुदा जहिना किछु नव उत्पादित हथियार गाम आएल तहिना तइसँ बेसी लूटैक भूत पछुआ बनि पकड़लक। भोज-भात, बिआह-सराध जोर पकड़लक। बैंकक कर्ज तर

पड़लै। जेकरा असुलैमे सख्तीसँ बैंक पेश भेल, जइसँ दिशाहीन समाज डरा गेल! कारोबार कमैत गेलइ...।

बोरिंग गड़ौला पछाइत सब्सिडी ऑफिसक काज एलैन। जिला भरिमे एकटा ऑफिस। जेते काजक भीड़ तइसँ बेसी खेनिहारक भीड़। पहिल दिन तीनू गोरे हरिहर काका हँसीए-ठठ्ठामे ओझरा घुमि एला।

दोसर दिन टेबुलपर जा कहलखिन- "तीन गोरे बोरिंग-दमकल नेने छी, बाजाप्ता बैंकक कागत अछि से सब्सिडीक आदेश देल जाए।"

जेना कियो सुनिनिहारे नहि! तहिना रंग-बिरंगक गप-सप्प चलैत रहल! जहिना स्कूलमे गलती केलाक पछाइत विद्यार्थीकेँ ब्रेंचपर ठाढ़ कऽ देल जाइ छै तहिना टेबुलक आगूमे तीनू गोरेकेँ ठाढ़ कऽ देलकैन।

घन्टा भरिक पछाइत कहलकैन- "परसो आना।"

परसू गेला पछाइत फेर परसू। ऊहो भाँज लगबैत जे किनका सम्पर्कमे अबैए, मुदा परसू अन्त नै भेल। ने ऑफिसमे दैछना देलखिन आ ने सब्सिडीक कागज ऑफिस छोड़लक।

सतासी-अठासीक भुमकम-बाढ़ि राज्यकेँ हिला देलक। दस हजार रुपैआ बैंक लोन माफक आवाज उठल। नव सरकार बनल। लोन माफ भेल।

बैंकक अन्तिम चिट्ठी जखन हरिहर काकाकेँ पहुँचलैन तखन केसक खर्च सहित जमा कऽ देलखिन।

ओही केसक वारन्ट हरिहर काकाकेँ भेल छैन।

❑

शब्द संख्या: 1638

गामक मुँह फेर देखब

दूटा टेन्ट घराड़ीपर ठाढ़ करा एकटामे अपने दुनू परानी आ दोसरमे बेटा-पुतोहुक रहैक जोगार ठाकुर प्रसाद काल्हिए कऽ लेलैन। दूटा कुरसी टेन्टक भीतरो आ बाहरो अपना टेन्टमे लगा लेलैन। संगी साथीक संग बेटा–गौरीशंकर–कारखाना देखए गेल। असगरे दुनू परानी–ठाकुर प्रसाद–बाहरक कुरसीपर बैस अपन भूत-भविसक गप-सप्प करए लगला। तखने लंगोटिया संगी रूद्रानन्द लफरल उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ पएरे बैंकपर जाइ छला।

खेतमे दूटा टेन्ट ठाढ़ देखि रूद्रानन्दक मनमे भेलैन जे भरिसक नट-मघैया सभ आएल हएत। दू-चारि दिन रहत फेर नाँगैर ठाढ़ कऽ घसकत। मन तँ मानि गेलैन मुदा आँखि नै मानलकैन। ओम्हरे माने टेन्ट दिस रूद्रानन्दक नजैर लटैक गेलैन। लटैक ई गेलैन जे केहेन धिया-पुता छै, केहेन कुत्ता-बिलाइ पोसने अछि से तँ तकनहि बुझब...।

चारि डेग आगू बढ़िते दुनू परानी ठाकुर प्रसादपर नजैर पड़लैन। चिन्हार लोक लग आँखि घुमा कियो अनचिन्हार बनैए मुदा अनचिन्हारोक नजैरपर पड़ने तँ कहाइये जाइ छै जे 'केतए रहै छी?' पैंतीस बर्ख पहिलुका ठाकुर प्रसादकेँ देखि रूद्रानन्द पुछि देलखिन-

"भाय, हाल-चाल ठीक अछि किने?"

अपन दायित्व निभाएब बुझि ठाकुर प्रसादक मनमे एलैन जे एक तँ पुरान लंगोटिया संगी रूद्रानन्द छिआ, तैपर आगूसँ हाल-चाल सेहो

पुछलैन..! उत्तर दैत बजला- “सभ नीक अछि भाय, चाह पीब लिअ तखन जाएब।

धड़फड़ाएल रूद्रानन्द बजला- “भाय, बैंकक काजसँ जाइ छी। कनिक्को पछुआ जाएब तँ पाछू पड़ि जाएब। तहूमे बैंकक स्टाफ सभ तेहने अछि जे धोतीबला सभकेँ तेते खरिआइर-खरिआइर पुछै छै, जे अनेरे देरी लगा दइ छइ। ओमहरसँ घूमब तखन चाहो पीब आ गपो-सप्पो करब।”

कहि रूद्रानन्द आगू बढ़ैत सुनटे मुहेँ बजला-

“खेतकेँ घराड़ियो बनाएब आकि खेते रखब?”

बजैत-बजैत रूद्रानन्द एते आगू बढ़ि गेला जे ठाकुर प्रसाद जवाब देब उचित नइ बुझलैन। जवाबो तँ तखन ने जवाब जखन सुननिहार सुनत। मुदा ठाकुर प्रसादक मनमे एहेन प्रश्न रोपा गेलैन जे खट-खुट करब शुरू कऽ देलकैन। घराड़ी की भेल आ खेत की भेल? बिनु घरक तँ बाड़ी भऽ सकैए। मुदा वाड़ियो तँ झाड़े-झड़ लगौलापर होइए, सेहो नै भेल। चौमासो नहियेँ भेल, किए तँ जइमे चौमासा उपजा होइ। तखन तँ ने घराड़ी भेल आ ने बाड़ी आ ने चौमास, तखन तँ ठीके खेत भेल। मुदा फेर दोसर प्रश्न मनकेँ लपैक लेलकैन। लपकलकैन ई जे खेत केना घराड़ी बनै छै आ घराड़ी केना खेत बनै छइ?

अखन धरि ठाकुर प्रसाद लोहाक इंजनेक बात बुझै छला, खेत-पथारक नहि। मुदा प्रश्न उठि गेलैन खेत-पथारक।

दोसर कियो तेहेन लगमे नहि जे प्रश्न उठा डारि-पात छोड़ैत फूल-फड़ धरि पहुँच जइतैथ। लगमे पत्नियेँ-टा बैसल रहैन। जिनकर दुनियाँ मात्र जारैन-काठीसँ बाढ़ैन धरि। मुदा असगरे जँ कोनो प्रश्नकेँ खोदहौ चाहब तँ आगूमे बैसल पत्नी बीचमे किछु-ने-किछु टपकिये जेती। तँए नीक हएत जे हिनका ऐठामसँ टारि किछु विचार करी। सुपते मुहेँ कहबैन

जे किछु विचारए चाहै छी, तँए अहाँ ऐठामसँ चलि जाउ, सेहो उचित नहियेँ हएत। लूरि-भासमे भलेँ दुनू गोरे दू रंग किए ने छी, मुदा किछु भेली तँ अर्द्धांगिनी भेली। जँ कहि दैथ जे अहाँसँ हम कम बुझै छिऐ। तखन तँ भारी पहपैट हएत। मुदा ओहो तँ सुपते कहती। जखन डॉक्टरक पत्नी बिनु जानकारियोक डॉक्टरनी, गुरुक पत्नी गुरुआइन कहबैक अधिकारी छैथ तखन तँ हुनको अधिकार बनिते छैन। मुदा से नहि, प्रश्नकेँ उधार बनबैत ठाकुर प्रसाद पत्नीकेँ कहलखिन-

"मन किछु भरियाएल बुझि पड़ैए, एकटा बात विचारब अछि तँए कनी चाह पीबू, पछाइत दुनू गोरे हल्लूक मने विचार करब?"

ओना चाह पीबैले रमदुलारीक मन पहिनहिसँ चटपटाइत रहैन, मुदा अपन घटैत जिनगीकेँ देखि मनकेँ मनेक मोटा तर दबने छेली। घटैत जिनगी ई जे जिनका महिनाक तीसो दिनक रोजी भेटै छेलैन आ रोटी चलै छेलैन तिनका पनरहे दिनक ने आब भेटतैन। तखन जँ रोटीकेँ टुकड़ी नै बनाएब तँ पार केना लगल।

पतिक आदेशकेँ रमदुलारी हृदैसँ सुहकारि लेलैन। किएक तँ हृदैयोमे तँ चाहे रानी ने बैसल छेलखिन। बजली-

"ओ केहेन भैयारी छला जे ओहो भाय कहलैन आ अहूँ भइये कहलयैन?"

पत्नीक ओझराएल प्रश्न सुनि आरो ओझराएब नीक नइ बुझि ठाकुर प्रसाद बजला-

"अही सभ बातक ने विचार करब। पहिने चाह पीआउ?"

जहिना ठाकुर प्रसाद प्रश्नकेँ एक रस्ता धड़बए चाहै छला तहिना पत्नी खुड़पेरिया बना-बना आरो रस्ता ठाढ़ करै छेलैन। बजली-

"जखन भैयारीक सम्बन्ध अछि तखन छुच्छे चाह पिआएब उचित हएत? अहाँ तँ मरदा-मरदी छँटि जाएब, मुदा जँ ओ मुहेँपर बाजि दैथ जे

बमैया बमै किछु ने, तखन हमर मुँह केहेन हएत?”

बम्बैया सनेस-दे सुनि ठाकुर प्रसादक मनमे जेना पछुआक सिहकी बहलैन तहिना हफुआइत मने बजला- “जाउ ने, जे मन फुरए से ओरियान करि कऽ रखि लेब।”

पतिक टारैक बात रमदुलारी नइ बुझि समटैक बात बुझि गेली। जेना दड़बड़ दैत प्रश्न ठोकलैन- “अहूँ भाय कहलयैन ओहो भइये कहलैन तखन हमर दिअर भेला आकि भैंसुर?”

‘दिअर-भैंसुर’ सुनि ठाकुर प्रसादक मन चोटेलैन। मोन पड़लैन अपन पैंतीस बर्खक जिनगी। पैंतीस बर्ख पूर्ब पिताक अमलदारीमे जे परिवारक जिनगी छल, जगह तँ वएह छी। मुदा पैंतीस बर्खक बीच गाम-घर नै देखि पेलौं, शहर-बजार तँ देखबे केलौं। की सभ महानगरक जिनगी एकरंगाहे छइ? से तँ नहि छइ! सबहक अपन-अपन क्षेत्रक साहित्य, कला, रीति-रिवाज, खान-पान सभ किछु छइ। तहिना ने अपनो गाम-घरक हेबा चाही?

प्रश्नकेँ टारैत ठाकुर प्रसाद बजला-

“एते दिन बम्बै सन शहरमे रहलौं जैठाम पोरो-पटुआसँ लऽ कऽ पालक-गेनहारी आ मेथीकेँ सेहो लोक सागे बुझि, कियो कम पाइ रहने कीनि खाइए तँ कियो बजारक महग सौदा बुझि कीनि खाइए। लूटमे चरखा नफा जहिना होइ छै तहिना पोरो-पटुआ सेहो पालक-गेनहारी आ मेथीक कान काटि लइए। तँए की एकरा नीक कहबै? खाएर ई बम्बैक बात भेल।”

‘बम्बैक बात’ सुनि रमदुलारीक मन पघिल गेलैन। बजली-

“मन अछि आकि बिसैर गेलौं जे ओ सभ–ब्रिटिस इंजीनियर–दुनू परानी केना हाथ जोड़ि नमस्ते करै छल।”

नमस्ते सुनि, जेना चौराहापर अबिते भक्क खुजै छै तहिना ठाकुर

प्रसादकेँ खुजलैन। बजला-

“ओ हमर अहाँकेँ करै छला आकि अपना धरतीकेँ करै छला, जइ धरतीकेँ अपन जीवन-सूत्र अछि। जखन ओ सभ अबै छला आ चाह पीयबै छेलिऐन तखन ओ अपन तरीकासँ मिलबै छला। अपना सबहक तरीका दोसर रंगक ऐछे, मुदा ओ अपन ढंगसँ भिन्न तरीका बुझियो कऽ हँसै कहाँ छला। आँखि गड़ा अपन तरीका देखै छला आ देखै छला अपना सबहक अचार-विचार। तेकरा ओ नमस्कार करै छला।”

पतिक बात सुनि रमदुलारी विह्वल होइत बजली-

“ओकर रीति-रिवाज हमरा मिसियो भरि नीक नै लगै छल। भने अहूँ संगबेसँ छुट्टी दऽ देलौं। नइ तँ ओकरा जकाँ हमरा कूद-फान करल होइत। तइसँ नीक भेल जे जेतेकाल असगरे डेरामे रहै छेलौं तेतेकाल अपन नैहर-सासुरक गीतो-नादक रियाज असगरेमे करै छेलौं आ अपन दादीक सिखौल जे कढ़ाइ-पढ़ाइ छल तेकरो लिखै छेलौं। एह! आब मोन पड़ैए ओ दिन जइ दिन हाथसँ जनकपुरक कोहबरो लिखै छेलौं आ घुनघुना-घुनघुना डहकनो गबै छेलौं। केना कृष्ण कदमक गाछक मचकीपर बैस बरहमासा गबै छला... ।”

बजैत-बजैत रमदुलारी पघिल कऽ पानि भऽ गेली। जहिना नवतुरिया संगी-बहिनपाक सुख-दुख सुनि नोराइत तँ संगे मुदा नोर कातमे जा झाड़ैए तहिना रमदुलारियो आँखि मीड़ैत चाह बनबए बढ़ली।

ठाकुर प्रसादकेँ मोन पड़लैन गामक स्कूल। संगे-संग दुनू गोरे भट्ठो धेलौं आ गामेक मिडिल स्कूल होइत आगुओ बढ़लौं आ स्कूलक पछुआरमे जे जामुनक गाछ छल ओही गाछक निच्चाँक छाहैरमे दुनू गोरे गुल्लियो-डन्टा खेलै छेलौं। पढ़ैयौमे दुनू गोरे एक्के रंग रही। ओहो अपन सबक यादि करि कऽ आ खांत लिखि कऽ स्कूल अबै छला आ हमहूँ लिखि कऽ लऽ जाइ छेलौं। सभ दिन पढ़ाइ, सभ दिन परीक्षा होइ छल।

हाइ स्कूलमे हम फस्ट करए लगलौं आ रूद्रा भाय पोजीशनसँ निच्चाँ उतैर गेला। तेकर कारण भेल जे आर्ट विषयसँ हुनका बेसी सिनेह छेलैन आ हम सांइस पढ़ै छेलौं। आर्ट विषयमे कम नम्बर अबै छेलए, सांइस विषयमे बेसी। जइसँ कलासमे पहिलसँ लऽ कऽ दसम-बारहम पोजीशन धरि सांइसेक विद्यार्थी रहैत छल। एक्के हाइ स्कूलसँ दुनू गोरे मैट्रीको पास केलौं। आइ.एस-सी.क पछाइत हम इंजीनियरिंग कौलेजसँ ग्रेजुएशन केलौं आ ओ अंग्रेजी आनर्स केलैन। पछाइत हुनका गामसँ दू कोस हटि हाइ स्कूलमे नोकरी भेट गलैन आ हमरा बाहर जाए पड़ल।

'बाहर' मनमे अबिते ठाकुर प्रसाद ठमैक गेला। बाहर किए? मोन पड़लैन अपन पढ़ाइ आ अपन शिक्षा। मैकेनीक इंजीनियर बनलौं। ई नइ बुझि पेलौं जे काज करैले केतए करए जाए पड़त। ग्रेड नीक छल तँए नीक बुझि पढ़लौं। रिजल्टो नीक छल तँए मन काज करैले तन-फन करए लगल। जखन मन तनफनाएल तखन खोज-भाँज केलाक पछाइत पता चलल जे हमरा लिए महानगर छोड़ि दोसर जगह नै अछि। क्षेत्रक कोन बात जे राज्योमे तेहेन कारखाना नहि। दच्छिन बिहार जे अखुनका झारखंड छी, ओतए जँ किछु छेलैहो तँ काजसँ बेसी काज केनिहारे छल। आशामे नोकरीक ओरूदो खतम भऽ जाइ छइ। काजक ओरूदा खतम होइते मनुक्खोक ओरूदा खतम भऽ जाए छै, जइसँ जिनगीए फुलहैर जाइ छइ। इलाकामे जे किछु कारोबार, कारखाना छलो तँ ओ छल कुसियार चाउर, दालि, सेरसो, तोरी, पटुआक। जइमे हमर काजे ने छेलइ। तखन बाहर जाएब छोड़ि दोसर उपाइए की छल? मुदा तैयो गामसँ अलग अपनाकेँ कहाँ बुझै छेलौं। बुझै छेलौं जे जहिना बिराटनगर आकि कलकत्तामे नोकरी केनिहारक परिवार गाममे रहै छैन आ अपने परदेशमे कमाइ छैथ तहिना रहब-करब। साल भरिपर तँ एबे करै छेलौं जे कोनो विशेष उत्सव आकि परिवारक विशेष काज होइ छल तँ बिच्चोमे अबिते छेलौं। जहिना कोनो दोस-महीम छह मास या साल भरि आकि

पाँच सालपर भेँट भेने भूमिका रूपमे अपन पूर्ब जिनगीक चर्च करैत पाँचे मिनटमे अपन पाँन सालक गाथा गाबि, अलिसाएल पान जकाँ पानिमे डुमकुनियाँ कटिते ताना-उतार भऽ जाइए तहिना ने..! मुदा से छुटि गेल। ब्रिटिश कम्पनीमे नोकरी भेटल। जुआइन केलाक पछाइत बुझि पड़ल जे दुनियाँ बदैल गेल!

तैबीच रमदुलारी चाह आगूमे रखैत बजली-

“चाहमे तुलसी पात दऽ देने छी। देखलौं जे मन ठेहियाएल जकाँ अछि।”

पत्नीक बात सुनि ठाकुर प्रसादक मनमे उठलैन जे हारलकेँ हरिनाम नै कहि रोगक दबाइ कहै छैथ! दबाइ तँ तीत-मीठ दुनू होइ छइ।

जहिना रोग मेटबैमे तीत-मीठक विचार बिना केने लोक खाइए तहिना रोग अनबोमे तीत-मीठ थोड़े बुझै छइ। डारि छोड़ि कूदब नीक नइ बुझि डारिये-मे मचकी लगा झूलब नीक बुझलैन। मुदा जाधैर पत्नी लगमे बैसल रहती ताधैर घाट परहक छबड़ा जकाँ चाल-चूल करिते रहती। करवनो सोझ बाट धड़ैये ने देती, तँए नीक तरवने हएत...।

बजला-

“पुरना संगी रूद्रा भाय छैथ तँ तेहेन सुआगत होनि जे मनमे जगह बनाबैथ।”

पतिक बात रमदुलारियोकेँ नीक लगलैन। बजली-

“होउ, झब-दे चाह पीबू। काजमे लगि जाएब तँ कप एत्तै रहि जाएत। आँटा सानि कऽ कचौड़ी बनबैले फ्रिजमे रखि लइ छी। वएह काज ने मेठनगर अछि, बाँकी तँ हल्लुके अछि। नमकीन-अँचार मिठाइ सभ तैयारे अछि।”

जान छुटैत देखि ठाकुर प्रसद हाँइ-हाँइ चाह पीब पत्नीक हाथमे कप धड़ा देलखिन। रमदुलारी टेन्टक भीतर आबि जलखैक जोगार करए

लगली।

अखन धरिक मनक खुटका रूद्रानन्दकेँ अनायासे मेटा गेलैन। मेटा ई गेलैन जे छह मासक पछाइत बैंक गेल रहैथ। तैबीच अपन विद्यार्थी कैशियर बनि आबि गेलैन। देखिते पहिने काजो कऽ देलकैन आ खातिरो-बात केलकैन। खातिर-बात देखि रूद्रानन्दक मुहसँ निकैल गेलैन-

"बौआ, बड़ बेरपर केलह। दबाइ कीनैक अछि। पोती दुखित अछि।"

बजै काल तँ रूद्रानन्द बाजि गेला मुदा अपने मन धिक्कारए लगलैन। कोन जरूरी छल जे बच्चाक बेमारीक बात एतए बजलौं!

अपन मन तँ रूद्रानन्दक कसाइन होइते रहैन मुदा कैशियरक बात,`मास्सैब हमहूँ कियो आन छी?' सुनि आरो मन खट-मिठेलैन। अनेरे केकरो काजमे बाधा देब उचित नइ बुझि बैंकसँ निकैल गेला। दोकान जा दबाइ कीनलैन। दबाइ कीनला पछाइत जखन घर परहक रस्ता हियाबए लगला कि मनमे उठलैन- रस्ता बदलए पड़त। जँ से नै करब तँ समैपर दबाइ केना दऽ पेबइ। जखने ओइ रस्ते जाएब आ ठाकुर प्रसाद देखता चाहे नहियोँ देखता तैयो अँटकए पड़त। किएक तँ अपनो तँ कहिए कऽ आएल छेलिऐन। ओझरा जाएब। कोन जुग-जमानाक पछाइत भेँट भेला अछि। हुनको केस पाकि गेलैन, हमरो पाकि गेल। एते दिनक जे गप पसरत ओकरा लगले केना समेट पाएब। तइसँ नीक जे दोसर रस्ते पहिने घरपर जा बच्चाकेँ दबाइ खुएला पछाइत आएब, सएह केलैन।

रूद्रानन्दकेँ देखिते ठाकुर प्रसादक मनमे, अन्हारमे डिबियाक इजोत जकाँ बुझि पड़लैन।

शहर-बजारक रमदुलारी रूद्रानन्दकेँ बैसते पानि-चाह आगूमे रखि देलखिन। मनाही करैत रूद्रानन्द बजला-

"ऐसँ आगू किछु ने करू। चाह भऽ गेल, भऽ गेल।"

रूद्रानन्दक मनाहीकेँ टारैत ठाकुर प्रसाद बजला-

"भाय, जाइकाल बाजल छेलौं जे `घराड़ी खेत आ खेत घराड़ी' से नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं?"

ठाकुर प्रसादक बातकेँ तहियबैत रूद्रानन्द बजला-

"सभ गप हेतइ। पहिने ई कहू जे बम्बैमे तँ रहैक अपन सभ बेवस्था कऽ नेने हएब किने?"

"हँ।"

"तखन गाम किए एलौं?"

"किए! हमर गाम नै छी जे नै आएब।"

"ई मजाक भेल?"

मजाक सुनिते सम्हरैत ठाकुर प्रसाद बाजल-

"ओतुका सभ किछु बेच-बिकीन कऽ आबि गेल छी।"

'सभ किछु बेच-बिकीन' सुनि रूद्रानन्दक मन ठमकलैन। मुदा गामसँ शहर लोक खुशीसँ जाइए आ हिनका...। बम्बै सन शहर छोड़ि गाम अबैक किछु खास कारण जरूर हेतैन। मुदा जेते खोद-बेद करब, भऽ सकैए ओते मने-मन बेथित होथि। तइसँ नीक जे दोसर पाशा फेंक उनटा बानियेँ बुझि लेब। बजला- "भाय, घराड़ी केना खेत बनै छै सएह ने आ खेत केना घराड़ी बनै छै, सएह ने? खेतमे अन-तीमन, फल-फूल उपजै छै जखन कि घराड़ीक उपजा माल-जालक संग लोको होइए। तैसंग ईहो होइ छै जे घर बन्हने खेते घराड़ी आ घर नै रहने घराड़ियो खेते बनि जाइ छइ।"

रूद्रानन्दक बात सुनि ठाकुर प्रसादकेँ पच्चीस बर्ख पहिलुका घटना मोन पड़लैन, गाम आएल रही, एक तँ भुमकम तहूमे बरसाती। ओना भुमकम बारहो मास भऽ सकैए मुदा बारहो मासक मौसमक अनुकूल

प्रभाव भिन्न-भिन्न पड़ै छइ...। अखन धरि ठाकुर प्रसाद गाम नै बिसरल छला, साले-साल अबैत छला। पोथियोमे सौन-भादबक लहकी पढ़िते छला। ओही लहकीमे, बरसातेमे गाम एला। भुमकममे घरो खसलैन आ तैपर बरखो तेते नहौलकैन जे जड़ा कऽ जे भगला से गामे बिसैर गेला।

ओना तइसँ पहिने मनमे रहैन जे गामोमे घर बनाएब। जहिना आन सभ महिना दिनक छुट्टीमे पिकनिको मनबैए आ घुमबो-फिड़बो करैए। मुदा एक्के दहारमे ठाकुर प्रसादक सभ किछु बोहा गेलैन। ब्रिटिश कम्पनीकेँ गाम दिस एने ठाकुर प्रसाद बेटाक नोकरीक संग गाम तँ आबि गेला मुदा मनमे ठहैकते रहैन जे पाँचो साए बीघामे कम्पनीक अपन पढ़ाइ-लिखाइसँ लऽ कऽ कारखाना धरि रहतै। सबहक रहैक बेवस्था अपन केम्पसेमे रहतै। जहिना मॉरीशस समुद्रक बीच दोसर भारत अछि तहिना ने पाँचो साए बीघाक बीच, लाखो कर्मचारी आ श्रमिकक बीच अंग्रेजक अपन जुति-भाँति रहतै। कारबारकेँ शहरसँ गाम दिस एने ठाकुर प्रसाद गाम एला। बजला-

"भाय, गाम तँ आबि गेलौं मुदा ने घर अछि आ ने एकोटा गाममे चिन्हारए बुझि पड़ै छैथ। पहिल-पहिल अहाँ भेटलौं। अहींपर सभ दार-मदार हएत?"

ठाकुर प्रसादक बातसँ रूद्रानन्दकेँ ओहन आकर्षण नै भेलैन जेहेन प्रश्न छल। मनमे उठलैन- ब्रिटिश कम्पनीकेँ गाममे एने शहरक लोक गाम दिस औता, मुदा संगमे कथी सभ लऽ कऽ औता? ई बात रूद्रानन्दकेँ घेरि लेलकैन। मन कहलकैन- नीलक खेतीक अनुभव तँ ऐछे, वेपारीए बनि कऽ ने अंग्रेज आएल छल। अपन टेकनीकल कौलेज, मेडिकल कौलेज खोलत। शिक्षाक संग अपन उत्पादित वस्तु बेचत, इलाज बेचत..! विचित्र प्रश्न रूद्रानन्दक मनकेँ पकैड़ लेलकैन। बजला-

"भाय, अखन थाकल छी, गप करैक मन नै होइए। जाए दिअ।

जखन गाम आबि गेलौं तखन भेँट-घाँट होइते रहतै।”

रोगसँ जकड़ल रोगी जहिना बेसी-सँ-बेसी बात डॉक्टरकेँ कहए चाहैए जे कहुना झब-दे रोग छुटि जाए, तहिना ठाकुर प्रसादकेँ हुअ लगलैन। मनमे नचैत रहैन जे पैंतीस बर्खपर गाम एलौं। पुरना लोक मरिए गेला। संगी-साथीमे दुइए गोरे छी। औरो गोरे खेती-गिरहस्तीसँ जुड़ल रहला, तिनकासँ तेहेन सम्बन्धे ने बनल। तैसंग जतियारे भोज आकि सामाजिक भोज सेहो छुटिये गेल। काइयो केना पबितौं। एमहुरका, माने पैंतीस बर्खक बीचक जे ऐछो, जेकर जन्म पछाइत भेल, ओ किए चिन्हत आकि हमहीं किए चिन्हबै। तखन गाममे रहब केना?

चिन्तित ठाकुर प्रसाद बजला-

“भाय साहैब, एक परिवारक आशा भइये गेल अछि। भौजियोकेँ कहबैन जे करवनो काल आबैथ। आब तँ अहीं सबहक ने आशा... ।”

पत्नीक नाओं सुनि रूद्रानन्द बजला तँ किछु नहि, मुदा मने-मन विचारए लगला। ने दुनू गोरेक एक बोली रहलैन आ ने बेवहार। पुरना बोली बिसरिये गेल हेती, बजरूआ बोलीमे केना सुग्गा-मेनाक मिलान हएत? खानो-पान तेहेन जे एकटा कीड़ी-फतिंगी तकैए आ दोसर पाकल तिलकोर आ पाकल लताम तकैए!

तैबीच रूद्रानन्दकेँ तरेतर बच्चाक बेमारी सेहो मनकेँ मथैत रहैन। बाल-बोध छी, रोगक कारण थोड़े बुझैए जे बरदाश करत। दर्द हेतै, कानत। घरमे जे बच्चा कानत तँ सियानकेँ केना अन्न घोंटल जेतइ..? बजला-

“जाइ छी?”

ओना ठाकुर प्रसादक इच्छा रहैन जे अखन धरिक जे खाली जिनगी रहल ओ तँ विचारेक माध्यमसँ भरत, मुदा रूद्रानन्दकेँ औगताइत देखि चुपे रहला। चुपो केना नै रहितैथ। बलजोरीक विचार तँ ओहिना रस

विहिन होइ छै, तैपर दू जिनगीक प्रश्न अछि।

काजक झोंकमे रूद्रानन्द बाजि कऽ विदा भऽ गेला मुदा दसे डेग आगू बढ़लापर मन उबिऐ लगलैन जे भरि मन गप नै भेल। मुदा विदा भेला पछाइत पुनः घुमि कऽ आपसो हएब तँ नीक नहियेँ हएत।

फेर मनमे भेलैन जे जखन शहर छोड़ि ठाकुर प्रसाद गामे एला आ बजबो केलाह जे गामेमे रहब। अखन धरि जे मनमे छेलैन जे दोहरा कऽ गामक मुँह ने देखि पएब से तँ भेबे केलैन। मुदा गाममे करता की? जहिना बिनु रोगक डॉक्टर आकि बिनु मशीनक इंजीनियर एक साधारण मनुक्खक रूपमे रहैत, तहिना ने ठाकुरो प्रसाद गाममे रहता। जे गुण उपार्जित केलैन ओइ गुणक की जरूरत गामक लोककेँ छै, जे कियो किछु पुछतैन? मनुक्खक जिनगीक अधार काज होइ छै, काजक अधार लूरि होइ छइ। से रहितो काज छीनेने वा काज नइ रहने तँ ओहिना खाली-खाली जिनगी बनि जाइए!

रूद्रानन्दक जीबैक अधार आ ठाकुर प्रसादक अधार अलग-अलग रहने एकमे वेकारी आबि गेलैन दोसरकेँ जिनगीक गाढ़ रस भैटए लगलैन।

घरपर रहि रूद्रानन्द नोकरियो केलैन आ परिवारसँ लऽ कऽ गामो-समाजक काजसँ जुड़ल रहला। सेवा-निवृति भेला पछाइतो काजमे कमी नै एलैन। स्कूलक बान्हल काजसँ अलग भेला। मुदा अलग भेलो पछाइत काज कहाँ छुटलैन। शुरूहेसँ जे जिनगीक काजक रूटिंग बनि गेल छेलैन ओइमे कनियेँ फेड़-फाड़ भेलैन। फेड़-फाड़ ई भेलैन जेते समय स्कूलमे लगबै छला ओ दरबज्जापर समाजक बच्चाक बीच लगबए लगला। श्रमजीवी परिवार तँए श्रमजीवी संस्कृति परिवारक जन-जनमे समाएल रहलैन, जइसँ जिनगीक प्रति अकाट्य बिसवास बनले छैन। बेकारीक अवस्थामे ने कियो किम्हरो भटकबो करैए आ तैसंग टहलबो करैए। मुदा

नियमित जिनगीक ढंग तँ तइसँ भिन्न होइ छइ। जेना-जेना समय चलैत रहल तेना-तेना किरियो-कलाप चलैत रहल।

दोसर दिन रूद्रानन्द मन बना कऽ ठाकुर प्रसाद ऐठाम पहुँचला। पहुँचते ठाकुर प्रसादकेँ कहलखिन- "भाय, अहाँकेँ एलासँ एते जरूर भेल जे खाली समय आनन्दसँ कटत।"

ठाकुर प्रसाद रूद्रानन्दक बातक गंभीरताकेँ नइ बुझि सकला। जहिना सभकेँ होइ छै तहिना भेलैन जे भरिसक खाइ-पीबै दुआरे बोली भरलैन अछि। बजला- "भाय, जिनगीमे एते संघर्ष जे केलौं से कथीले। अही सभ-ले ने?"

ठाकुर प्रसादक बात रूद्रानन्द ताड़ि गेला। मनमे उठलैन यएह भेल संघर्ष जे जाबे शरीरमे काज करैक शक्ति छल ताबे ओकरा बेच-बेच जीवन-यापन केलैन आ कहै छैथ संघर्ष..!

मुदा सम्हरैत बजला- "भाय, जहिना आमक आँठी टिकुलासँ जुआ-जुआ, सकताइत-सकताइत पकैसँ पहिनहि तेतेक सकता जाइए जे नव गाछ माने दोसर गाछ पैदा करैक शक्ति पाबि जाइए। की ऐसँ भिन्न मनुक्खक जिनगीकेँ बुझै छी?"

अखड़ाहापर जहिना कोनो खलीफा घन्टो लड़ला पछाइत माटिपर खसैए आ कोनो सलामी लइते धोबिया पाटे पट भऽ जाइए, तहिना ठाकुर प्रसादकेँ बुझि पड़लैन। मुदा जहिना प्रश्न नान्हिटा नहि, तहिना जवाबो केना नान्हिटा भऽ सकत? ई तँ विचारधारा छी।

एक धार ओहन बोहैए जइमे मनुक्खक क्रिया कर्म बनि जिनगीक सार्थकता पबैए आ दोसर कर्मसँ हटि पाकि जिनगी बनि ठाढ़ होइए। रूद्रानन्दो आ ठाकुरो प्रसादक बीच यएह दूरी बनि गेल छैन।

ठाकुर प्रसाद बजला- "भाय, जिनगी-ले कोनो वस्तुक कमी नै अछि। सभ किछु बना नेने छी। तैसंग बेटो अपनासँ उन्नैस नहि, बीसे

अछि।”

ठाकुर प्रसादक बात रूद्रानन्दकेँ एते बिसाइन बना देलकैन जे मन बेकाबू भऽ गेलैन। बजला- “भाय, हाइ स्कूलक अठमा किलासक समाज अध्ययनमे पढ़ने रही- मनुक्ख सामाजिक प्राणी छी, जँ से नहि तँ या तँ देवता छी या जानवर। ऐ कसौटीपर अपन समीक्षा करियौ।”

रूद्रानन्दक प्रश्न सुनि ठाकुर प्रसाद गुम भऽ गेला। तैबीच रमदुलारी चाह-बिस्कुट नेने आबि दुनू गोरेक आगूमे रखि देलकैन।

बिस्कुट खा पानि पीब चाहेक चुस्की लैत ठाकुर प्रसाद बजला-

“भाय, जिनगीक कोनो ओर-छोर छइ। बेठेकान अछि।”

❑

शब्द संख्या: 3073

❑❑❑

❑❑

❑

जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रकाशित पोथी केर लोकार्पण सहित विवरण:

1. गामक जिनगी: (कथा संग्रह- 2009), लोकार्पण- डॉ. कमला चौधरी
2. मौलाइल गाछक फूल: (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. रामवतार यादव
3. उत्थान-पतन: (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. वीणा ठाकुर
4. जिनगीक जीत: (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. मोहन मिश्र
5. मिथिलाक बेटी: (नाटक- 2009), लोकार्पण- डॉ. राजेन्द्र विमल
6. तरेगन: (प्रेरक कथा संकलन- 2010), लोकार्पण- डॉ. रमानन्द झा 'रमण'
7. जीवन-मरण: (उपन्यास- 2010), लोकार्पण- कुमार रामेश्वर लाल दास
8. जीवन संघर्ष: (उपन्यास- 2010), लोकार्पण- कथाकार अशोक (श्री अशोक कुमार झा)
9. बजन्ता-बुझन्ता: (बीहैन कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री अरूण कु. सिंह SDO
10. शंभुदास: (दीर्घ कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- सदरे आलम 'गोहर'
11. उलबा चाउर: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री विनोद कुमार साह
12. अर्द्धांगिनी: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री दुर्गानन्द मण्डल
13. सतभैंया पोखैर: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- प्रो. जय प्रकाश साह
14. भकमोड़: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री नन्द विलास राय
15. नै धाड़ैए: (उपन्यास- 2013), लोकार्पण- श्री गुरुदयाल भ्रमर
16. बड़की बहिन: (उपन्यास- 2013), लोकार्पण- श्री शारदानन्द सिंह
17. इन्द्रधनुषी अकास: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री रामलखन यादव
18. तीन जेठ एगारहम माघ: (गीत संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री चन्दन कुमार झा
19. राति-दिन: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री रामजी प्रसाद मण्डल

20. सरिता: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री बालमुकुन्द पाठक

21. गीतांजलि: (पद्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री अमित मिश्र

22. सुखाएल पोखरिक जाइठ: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री बिपीन कुमार कर्ण

23. कम्प्रोमाइज: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री रामप्रवेश मण्डल

24. झमेलिया बिआह: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री वीरेन्द कुमार यादव

25. रत्नाकर डकैत: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री कीशलय कृष्ण

26. स्वयंवर: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री शम्भु सौरभ

27. पंचवटी: (एकांकी संचयन- 2013), लोकार्पण- श्री राजदेव मण्डल

28. गामक शकल-सूरत: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री ओम प्रकाश झा

29. लजबिजी: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री श्यामानन्द चौधरी

30. समरथाइक भूत: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

31. अप्पन-बीरान: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री सच्चिदानन्द 'सचिद'

32. बाल गोपाल: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री राम कुमार मण्डल

33. रटनी खढ़: (दीर्घ कथा संग्रह) 2014), लोकार्पण- श्री फागुलाल साहु

34. पतझाड़: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- उमेश नारायण कर्ण 'कल्पकवि'

35. गढ़ैनगर हाथ: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री कपिलेश्वर राउत

36. अपन मन अपन धन: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. केष्कर ठाकुर

37. उकडू समय: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. प्रेम शंकर सिंह

38. मधुमाछी: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

39. पसेनाक धरम: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. खुशीलाल मण्डल

40. गुड़ा-खुद्दीक रोटी: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. दुर्गा प्रसाद साह

41. फलहार: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. राम अशीष सिंह

42. खसैत गाछ: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. भीम नाथ झा

43. ठूठ गाछ: (उपन्यास- 2015), लोकार्पण- श्री कमलेश झा

44. कल्याणी: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्रीमती आशा देवी

45. सतमाए: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री मदन प्रसाद साहु

46. समझौता: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री मनोज कुमार साहु

47. तामक तमघैल: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री हेम नारायण साहु

48. बीरांगना: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री राजा राम यादव

49. एगच्छा आमक गाछ: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री अमर नाथ झा

50. शुभचिन्तक: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री लक्ष्मी नारायण सिंह

51. गाछपर सँ खसला: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद

52. डभियाएल गाम: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री राजदेव मण्डल

53. गुलेती दास: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

54. मुड़ियाएल घर: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री रघुवीर मोची

55. बीरांगना: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री नारायण यादव

56. स्मृति शेष: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

57. बेटीक पैरुख: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्रीमती मुन्नी कामत

58. क्रान्तियोग: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री दुर्गानन्द मण्डल

59. त्रिकालदर्शी: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री राम लषण राम 'रमण'

60. पैंतीस साल पछुआ गेलौं: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री तुरन्त लाल मण्डल

61. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं: (उपन्यास- 2017), लोकार्पण- ई. कमलाकान्त भारती

62. दोहरी हाक: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

63. सुभिमानी जिनगी: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद

64. देखल दिन: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री महावीर प्रसाद

65. गपक पियाहुल लोक: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री चण्डेश्वर खाँ

66. दिवालीक दीप: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री नीरज नारयण पाण्डेय SDO

67. अप्पन गाम: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- डॉ. शिव शंकर श्रीनिवास

68. लहसन: (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- डॉ. कमलकान्त झा

69. पंगु: (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- श्री अरविन्द ठाकुर

70. आमक गाछी: (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- डॉ सुरेन्द्र कुमार सिंह

71. सतबेध: (गीत संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री प्रीतम कुमार 'निषाद'

72. खिलतोड़ भूमि: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री कृष्ण कान्त झा

73. चितवनक शिकार: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री जय प्रकाश मण्डल

74. चौरस खेतक चौरस उपज: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री जय प्रकाश मण्डल

75. समयसँ पहिने चेत किसान: (कथा संग्रह- 2019), लो.- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

76. भौक: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

77. गामक आशा टुटि गेल: (क. संग्रह- 2019), लो.- श्री उमेश नारायण कर्ण 'कल्पकवि'

78. पसेनाक मोल: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री लक्ष्मेश्वर राय (विधायक)

79. चुनौती: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री नारायण यादव

80. रहसा चौरी: (गीत संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री शारदानन्द सिंह

81. कृषियोग: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री शैलेन्द्र आनन्द

82. हारल चेहरा जीतल रूप: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- प्रो. उषा चौधरी

83. रहै जोकर परिवार: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- पं. शशिनाथ झा (कुलपति)

84. कामधेनु: (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- प्रो. धीरेन्द्र कुमार

85. मन मथन: (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री रामजी प्रसाद मण्डल

86. अकास गंगा: (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

87. सुचिता: (उपन्यास) 2020), लोकार्पण- डॉ. अशोक अविचल

88. कर्ताक रंग कर्मक संग: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- डॉ. योगानन्द झा

89. गामक सूरत बदैल गेल: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री अरविन्द प्रसाद

90. अन्तिम परीक्षा: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद

91. घरक खर्च: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- प्रो. विद्यानाथ झा

92. मोड़पर: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- प्रो. शंकर झा

93. संकल्प: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री राम कृष्ण परार्थी

94. अन्तिम क्षण: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री अरविन्द प्रसाद

95. नीक ठकान ठकेलौं: (कथा संग्रह- 2021), लोकार्पण- डॉ. ज्वालानाथ तेज

96. कुण्ठा: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री अशोक

97. पयस्विनी: (निबन्ध-प्रबन्ध- 2021), लोकार्पण- श्री अरविन्द ठाकुर

98. जीवनक कर्म जीवनक मर्म (कथा संग्रह- 2021), लोकार्पण- डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास

99. संचरण: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

100. भरि मन काज: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- ई. शैलैन्द्र मण्डल

101. आएल आशा चलि गेल: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्रीमती शीला मण्डल

102. जीवन दान: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री विनोद कुमार साह

103. अप्पन साती: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री शारदा नन्द सिंह

104. साहित्यकारक विवेक: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- डॉ. विभूती आनन्द

105. नब बनक नब फल: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री हीरेन्द्र कुमार झा

106. सुनयना बेटी: (उपन्यास- 2023), लोकार्पण- डॉ. कमल कान्त झा

107. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- डॉ. धनाकर ठाकुर

108. बासभूमि: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- डॉ. महेन्द्र नारायण राम

109. टकुआटान: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री राम नरेश यादव

110. एकलव्यपन: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री चन्द्रेश

111. एक चुटकी खुशी: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री झौली पासवान

112. नियति आ पुरुषार्थ: (बाल कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- शीघ्र..

113. श्रद्धा: (बाल कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- शीघ्र..

114. मुक्ति: (बाल कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- शीघ्र..



Notes